शाश्वत धर्म

नवम्बर + दिसम्बर १९९२

अभिधान राजेन्द्र कोष के निर्माता श्री सौधर्म वृहत्तपोगच्छीय विश्वपूज्य,

गुरूदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी महाराज

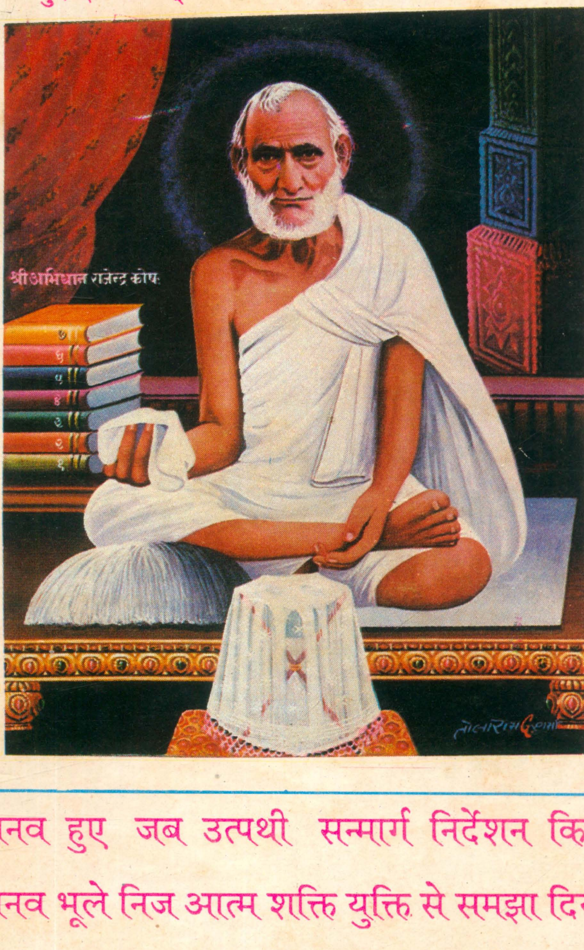

मानव हुए जब उत्पथी सन्मार्ग निर्देशन किया,
मानव भूले निज आत्म शक्ति युक्ति से समझा दिया।
अन्धार था अज्ञान का फैला हुआ जगति यदा,
राजेन्द्र ने आकर सदा सद्ज्ञान प्रसराया तदा ॥

संपादक जे. के. संघवी

- शाश्वत धर्म के संरक्षक -

* शा. ओटमल वेलाजी कांकरिया - सुरा निवासी , * शा. ताराचंद फुटरमल फौजमल, भानाजी वेदमुथा-आहोर निवासी, * कटारिया संघवी भंवरलाल, उगमचंद, विरेन्द्रकुमार राजेन्द्रकुमार बेटा पोता तोलाजी धाणसा निवासी, * शा. तिलोकचंद, नरसींगमल, पुखराज, परखचंद, सांवलचंद, बेटा पोता प्रतापचंदजी - सरत निवासी, * संघवी मिश्रीमल, हस्तीमल, समरथमल, हिरालाल शांतिलाल जिनेशकुमार, बेटा पोता कन्नाजी कटारिया-जाखल निवासी. * नैनावा श्री जैन श्वेतांबर सकल संघ, गुरूभक्तगण-नैनावा, * श्री समकित गच्छीय जैन श्वेतांबर संघ-धानेरा, स्व. मयाचंद धुलाजी की स्मृति में धर्मपत्नी धापुबाई, सुपूत्र कुशलराज, भ्राता निहालचंद एवं श्रीमती जडावबेन कातरेला वोहरा आहोर निवासी, * मेहता तेजराज, जयंतीलाल, राजेन्द्रकुमार, अरविंदकुमार; बेटा पोता रायचंदजी जसराजजी भूती निवासी, * मोरखीया चंदुलाल, बाबुलाल, रसिकलाल मेहशकुमार, परेशकुमार, अल्पेशकुमार, रुपेशकुमार, पुत्रपौत्र स्व. मोरखीया नानचंद मूलचंद भाई-थराद निवासी, * स्व. मुणोत रिखबचंदजी की स्मृति में धर्मपत्नी ठेलीबाई सुपुत्र बाबुलाल, सुमेरमल, अशोककुमार - रमणिया निवासी,

* श्री राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट - मद्रास, * स्व. रामाणी शेषमलजी की स्मृति में मांगीलाल, फुटरमल, शांतीलाल, किशोरकुमार, बेटा पोता खुशालजी रामाणी-गुडा बालोतान (फर्म. शांतिलाल ज्वेलर्स, नेल्लोर) * शा. मोहनलाल, पारसमल, सुरेशकुमार, किशोरकुमार, कमलेशकुमार, अरविंदकुमार, बेटा पोता सांकलचंद जेरूपजी - भेंसवाड़ा निवासी (गोल्डन ज्वेलरी, नेल्लोर), * स्व. सुगीबाई धर्मपत्नी अचलजी की स्मृति में पुत्र कांतिलाल प्रपौत्र रमेशकुमार बागरा निवासी, * श्री श्वेताम्बर जैन संघ - सियाणा, * श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ - थराद * श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ - चौराऊ, * दोशी सोमतमल, गुमानमल, सुखराज सांवलजी ह. गुमानमल सावलचंदजी चेरिटेबल ट्रस्ट, बम्बई , सुशीला बहन की स्मृति में भीमराज, हिमांशकुमार, श्रेणिककुमार बेटापोता बेचरदासजी छाजेड़ - नैनावा निवासी हाल मु. सांचोर (राज), * श्री गोड़ी पार्श्वनाथ जैन देरासर पेढी - सोनारी सेरी - थराद, प्रतिष्ठा प्रसंगे गुरूभक्तों द्वारा. * स्व. जेठमलजी खुमाजी की स्मृति में चंदनमल, कैलाशचन्द, हंसराज, शीतलकुमार, अश्विनकुमार परिवार बागरा निवासी, फर्म : राजस्थान फायनेन्स कार्पोरेशन - काकीनाडा, *

* श्री विमलनाथ जैन डोसी देहरासर - थराद * श्री सौधर्म वृहत्पोगच्छ जैन संघ - आणंद (गुजरात)
* श्री जैन श्वे. त्रिस्तुतिक श्री संघ - थलवाड़ (राज.) * श्री वृहत्पोगच्छीय जैन संघ - जावरा (म. प्र.)

1302

शाश्वत धर्म

धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रवर्तक हिन्दी मासिक

संस्थापक व्या. वा. आचार्यदेवश्री यतीन्द्रसूरीश्वरजी

सम्पादक : जे. के. संघवी

सहसम्पादक : शांतिलाल सुराना

सदस्यता शुल्क
बीस वर्षीय-पांचसौ रुपये
दस वर्षीय-तीन सौ रुपये
तीन वर्षीय- एक सौ रुपये

विज्ञापन शुल्क (एक बार)
पूरा पृष्ठ - पांच सौ रुपये
आधा पृष्ठ - तीन सौ रुपये
पाव पृष्ठ - दो सौ रुपये
अंतिम कवर पृष्ठ - एक हजार रुपये
कवर पृष्ठ २ या ३ - सात सौ रुपये

सम्पर्क सूत्र
कार्यालय © ५३४ ०७ २४ निवास © ५३४ ८० ७३
शाश्वत धर्म कार्यालय
डेवलेपमेन्ट बैंक के पास, जामली नाका-थाने-४०० ६०१ (महाराष्ट्र)

वर्ष : ४० ★ अंक ६-७ ★ नव.+दिस.१९९२

अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद द्वारा संचालित

अवैतनिक सम्पादन : अव्यवसायिक प्रकाशन

शाश्वत धर्म – नवम्बर - दिसम्बर १९९२

झरोखा

❇ सम्पादकीय .... जे. के. संघवी ५
❇ वन्दना श्रीमद् विजयराजेन्द्र गुरु स्व. श्रीमद् धनचंद्रसूरिजी/मन्नालालजी ८
❇ अनेकान्त ....श्रीमद् विजयजयंतसेनसूरिजी म. सा. ९
❇ श्री मुनिसुव्रतस्वामी जिनस्तवन (२०) मुनि श्री जयानंदविजयजी म.सा. १५
❇ प्रबल प्रभावक श्री राजेन्द्रसूरिजी .... श्री बसन्तीलालजी जैन १७
❇ मानव अवतार .... स्व. आचार्य श्री यतीन्द्रसूरिजी म. सा. २४
❇ समाचार दर्शन .... संकलित ४१
❇ परिषद के प्रांगण से .... संकलित ४५
❇ समाचार सार .... संकलित ४७
❇ शोक श्रद्धांजली .... संकलित ५१
❇ साहित्य स्वीकार .... संकलित ५७

स्थाई स्तम्भ

❇ ज्ञान कसौटी (२०) .... श्री महेन्द्र जे. संघवी २७
❇ बोधकथा (विषयासक्ति से पूर्णतः विरक्ति) .... श्री रंगमुनिजी २८
❇ शब्दसागर ईनामी स्पर्धा (१४) .... श्री प्रदीप एम. जैन २९
❇ क्या आप जानते हैं? .... धर्ममित्र ३३
❇ रूकिये! पढ़िये!! सोचिये!!! .... मुसाफिर ३५
❇ स्वास्थ्य चर्चा - फर्टीलाइजर सबसीडी - मौत की वर्षा ...
.... मुनिश्री देवेन्द्रविजयजी म. सा. ३७
❇ सरे राह चलते चलते .... प्रवासी ३९

गुजराती विभाग

❇ प्रेरक वाणी .... मुनिश्री प्रशांतरत्न विजयजी म. सा. ५९
❇ मोदी नी धर्म पत्नी .... श्री पूर्णानंदविजयजी 'कुमार श्रमण' ६०

लेखक के विचारों से सम्पादक अथवा परिषद की सहमति आवश्यक नहीं है।

Typesetting By
Chaitanya Typesetting
B-2, Sagar Apartments, Brahmin Society, Naupada Thane.

महानगर बम्बई के प्रांगण में

राष्ट्रसंत जैनाचार्य

श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म. सा.

की पावन निश्रा में

गुरूदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म. सा.

के जन्म-स्वर्गारोहण दिवस

गुरू सप्तमी

का भव्यातिभव्य आयोजन

पौष सुदी ७

गुरुवार ३१-१२-९२

卐

भव्य शोभायात्रा, गुणानुवाद सभा, स्वामीवात्सल्य,

गुरूदेव की अष्टप्रकारी पूजा, भावना भक्ति आदि

कार्यक्रमों में आपकी उपस्थिती सादर आमंत्रित है।

- महोत्सव स्थल -

ऑपेरा हाऊस, धर्म पेलेस बिल्डिंग के पिछे, बम्बई - ४०० ००४

- निवेदक -

समस्त श्री सौधर्मवृहत्पागच्छ त्रिस्तुतिक जैन संघ, बम्बई

आपका पत्र मिला

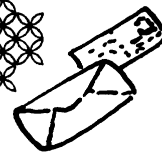

❋ शाश्वत धर्म यथासमय मौलिक सामग्री के साथ प्रकाशित हो रहा है इसके लिए आपकी किन शब्दों में प्रशंसा लिखूँ? **- मूलचंद पाटनी - बम्बई**

❋ शाश्वत धर्म पत्रिका ज्ञान वर्धक तथा जैन धर्म की गतिविधियों के लिये श्रेष्ठतम है। **- सुखराज भंडारी - जोधपुर**

❋ शाश्वत पत्रिका सितम्बर अंक मिला। बहुत अच्छी लगी। यह पत्रिका निरन्तर-प्रगति की ओर अग्रसर हो यही मेरी शुभ कामना है। **- रमेश हुण्डिया - मैसूर**

❋ मासिक नियमित रूप से संप्राहत होता है। मैं इसे नियम रूप से पढ़ता हूँ। मेटर, प्रिंटींग अच्छे लगे। मेरी शुभ-कामनाएँ। **- उत्तमचंद जैन - मेंगलवा**

❋ सितम्बर मासिक मिला। आओ सागर से कुछ सीखे, रूकिये! पढ़िये!! सोचियें!!! रूचकर लगा आपको मेरी शुभ कामनाएँ। **- सुरेश जैन - मदुराई**

❋ सितम्बर अंक मिला। अति रूचिपूर्ण लगा। आपकी इस उन्नति पर मुझे बहुत खुशी हुई। मेरी शुभकामनाएँ स्वीकार करें। **- जमनादेवी - जोधपुर**

❋ शाश्वत सितम्बर अंक पढ़ा मनोविज्ञान ज्ञाता राजाभोज (मुनि प्रशान्त रत्न) अच्छा लगा। हमारी ओर से शुभकामना। **- यतीन्द्र भंडारी - महिदपुर रोड़**

❋ सितम्बर अंक मिला स्वास्थ्य चर्चा, घरेलु नुस्खे अच्छे लगे। यह पत्रिका एक वट वृक्ष की तरह फैलती रहे यही हमारी शुभ-कामना। **- जयंतीलाल हुबली**

❋ तुम्हारा प्रयास सफल है। जनता में धर्म भावना सविषेश फैलने से बहुजन कल्याण व आराधनायें प्रगति से हो यह शुभकामना। **- मुनि शिवानंदविजय - अहमदनगर**

❋ आप द्वारा प्रेषित शाश्वत-धर्म सितम्बर अंक मिला। आओ सागर से कुछ सीखे व सम्पादकीय अच्छा लगा। इसी मंगल कामना के साथ।- **अभयकुमार पटवारी - वारंगल**

❋ स्वास्थ्य चर्चा-घरेलु-नुस्के का नया अध्याय बहुत ही सराहनिय है उसके पहले शब्द-ईनामी स्पर्धा, रूकिये! पढ़िये!! सोचिये!!! क्या आप जानते है कि? ऐसे नये-नये विषयों की जानकारी देते है यह सब शाश्वत धर्म की पत्रिका की प्रगति में नयी दिशा की ओर अग्रसर हो रही है। **- सुमेरमल गोलेच्छा - मदुराई**

❋ शाश्वत-धर्म नियमित संग्रह करता हूँ प्रत्येक दृष्टान्त अति चिन्तनिय होते है। सितम्बर ९२ पढ़ा "युवा संदेश" (मुनि रत्नसेन) लिखित युवा वर्ग के लिए चिन्तनिय संदेश है। ऐसा ही मार्गदर्शन युवा वर्ग को देते रहे। स्थाई स्तम्भ में भी रूकिये! पढ़िये!! सोचिये!!! अति विचारणीय है। आपकी पत्रिका समाज सेवक सिद्ध हो ऐसी शुभेच्छा। **- हीराचंद एस. वोरा - मद्रास**

❋ आपके वृहत हस्तों के नीचे रह कर आज शाश्वत की जो तरक्की हुई है, उसके ज्ञान भंडार में जो बढ़ोतरी हुई उसे देखकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हुई। **- रत्नेश संघवी - मंदसौर**

सम्पादकीय

पशुवध के खिलाफ दस साल से डटे हैं सत्याग्रही

देवनार में कानून को ताक में रखकर पशुओं की क्रूरता भरी कत्ल

सरकार द्वारा जनता को धोखा

संत विनोबा भावे के आदेश से बम्बई के देवनार में ११ जनवरी १९८२ से एक अहिंसक, असांप्रदायिक एवं अराजनैतिक सत्याग्रह इस मांग को लेकर प्रारंभ किया था कि इस देश में किसी भी उम्र के गाय-बैल नहीं कटे। लोगों को विश्वास था कि आजादी मिलने के बाद देश में गोवंश हत्या पूरी तरह बंद हो जायेगी। संविधान सभा में सभी धर्मों और पक्षों के प्रतिनिधि शामिल थे, सर्वसम्मति से गोरक्षा को निर्देशक तत्व के क्रम में स्विकार किया था। कुछ राज्यों में कानून भी बने, लेकिन सर्वोच्च न्यायालय ने १९५८ में निर्णय दिया कि स्वस्थ गाय-बछड़े नहीं काटे जा सकते लेकिन बूढे और अनुपयोगी बैलों का कत्ल किया जा सकता है। सत्याग्रहियों की मुख्य मांग है कि कृषि प्रधान भारत देश में किसी भी उम्र की गाय और बैल का कत्ल कानूनन बंद हो और गोमांस के निर्यात पर प्रतिबंध लगे। इनके लिये राष्ट्र व्यापी कानून बने। किन्तु वोटों की राजनीति एवं विदेशी मुद्रा के लोभ में हमारे राजनेता आजतक इसकी अनदेखी कर रहें हैं। कई बार सत्याग्रहियों को यातनायें भी सहन करनी पडती है। कई बार बल का प्रयोग कर उन्हें पीटा भी गया, उनकी झोपड़ियों को उखाड़ दिया गया, पर वे कोई प्रतिकार नहीं करते, शांत व अहिंसक भाव से अपना प्रदर्शन करते हैं।

बम्बई के देवनार में तंदुरुस्त पशुओं की अमानवीय, क्रूरता भरी कत्ल की जाती है, उसके विरोध में जागरूक नागरिकों ने एक निवेदन द्वारा आवाज उठाकर महाराष्ट्र सरकार एवं महानगर

पालिका की निष्क्रीयता की निंदा की है। निवेदन इस प्रकार है- थोड़े दिनों पहले "सन्डे ऑबजर्वर" के सम्पादक द्वारा देवनार कत्लखाने में लाये जाने वाले पशुओं के साथ होने वाले क्रूर अत्याचार की जानकारी सचित्र प्रकाशित की थी। परिणाम स्वरुप बम्बई के जागृत नागरिकों में हलचल मच गयी थी। गांधीजी द्वारा संस्थापित संस्था कृषि गौ-सेवा संघ के उपक्रम से बम्बई महानगर पालिका के विरुद्ध कोर्ट में जाने पर, कोर्ट ने इसका जांच कार्य क्राइम ब्रांच को सौंपा। तात्कालिक परिणाम स्वरुप विशेष पुलिसों की टुकडी रखी गयी। पहले ट्रकों में कानून का उल्लंघन कर १५ से २० बैल भर कर आते थे, उस जगह अब मात्र ९ बैल लाये जाते हैं। अर्थात अब ३५ प्रतिशत ही आ सके यानि पुलिसों द्वारा अपना फर्ज निभाने के कारण ६५ प्रतिशत पशुओं का कत्ल कम हुआ।

परन्तु एक मुख्य कानून का प्रतिदिन सरेआम भंग किया जाता है। महाराष्ट्र शासन पशु संरक्षण धारा IX ऑफ १९७७ के अनुसार कृषि के लिये सक्षम उपयोगी, जवान बैल, दुधारु भैंस आदि के कत्ल पर प्रतिबंध है। किन्तु ये प्रतिबंध मांस व चमड़े के व्यापारियों के हित में विरोध होने से उत्तम बैलों और भैसों को अनुपयोगी एवं बूढ़े बताकर "कत्ल के योग्य" झूठे प्रमाणपत्र देकर राष्ट्र के उत्तम पशुधन को कत्ल खाने में धकेला जा रहा है, इस प्रकार उत्तम पशुओं की कत्ल के साथ-साथ पशु संरक्षण धारा कानून की भी कत्ल हो रही है।

सरकार स्वयं भारतीय संविधान एवं स्वयं के द्वारा बनाये हुए कानूनों को एक तरफ रखकर विदेशी मुद्रा के लोभ में मांस व चमड़े की निकास उत्तरोत्तर बढ़ा रही है। यदि सरकार पशु संरक्षण कानून का पालन करे तो निकास लक्ष्य तक पहुंच ही नहीं सकती इसलिये कानून को पुस्तकों में बंद कर कत्ल को पूर्ण स्वतंत्रता दी गयी है, जो कि सरकार द्वारा जनता को होने वाला भयंकर धोखा है।

बम्बई के देवनार कत्लखाने के आसपास बड़ा ही ह्रदय द्रावक दृष्य एवं शोकाकुल माहौल होता है। पशुओं की दर्द भरी चीख सुनायी देती है और उनकी आंखो से आंसू टपकते हैं। यहॉ गंदगी और दुर्गंध का साम्राज्य है। पशुओं के साथ खुले आम हिंसा के निष्ठुर दृष्य यहॉ आम है। यहॉ-वहॉ चील, गिद्ध और कौवों के झुंड पशुओं के मांस को नोचते नजर आते हैं।

देवनार में हररोज कानून की हत्या होती है। प्रशासन की नाक के नीचे और कानून की निगाहों के सामने गैर कानूनी करार दिये गये बर्बरता पूर्ण तरीकों से इन मूक प्राणियों के साथ व्यवहार किया जाता है। बूढे बैल के नाम पर जवान और कृषि योग्य बैल कटतें हैं व बैलों के नाम पर गायें भी कटती है। कत्लखाने में अस्सी प्रतिशत उपयोगी जवान बैल कट रहे हैं।

देवनार कत्लखाना कभी न मिटने वाली कातिल भूख के लिये खड़ा है। यहॉ पशुओं के रोंगटे खड़े हो जाते हैं। प्रवेश द्वार तक आते-आते जादातर पशुओं के प्राण सुख जाते हैं और अंदर जाते ही इनकी मुक्त जिन्दगी कुछ मिनटों के लिये ही बचती है। गौमांस का निर्यात अरब देशों में होता है और वे लोग उत्तम और मुलायम मांस की मांग करते हैं, इसलिये कई गलत तरीकों से जवान और उपयोगी गाय, बैल और बछडों का वध यहॉ किया जाता है। जवान और अच्छे जानवरों को कत्ल लायक बनाने के लिये एवं कानूनी प्रमाणपत्र प्राप्त करने के लिये वे मार-मार कर उन पशुओं के पैर तोड देते हैं या आंखो में नुकीला लोहा

डालकर उन्हें अंधा बना देते हैं। ये अपराध विशेष तौर पर रात्री १२ बजे से प्रातः ४ बजे तक किये जाते हैं। मुलायम चमड़े की प्राप्ति के लिये इन मूक पशुओं पर इन्सानों द्वारा दिल दहलाने वाले जुल्म किये जाते हैं।

वैसे तो जो भी मवेशी देवनार पहुंच गया, उसे कत्ल के योग्य प्रमाणपत्र मिल ही जाता है, पर कानूनी बचाव और संतोष के लिये दो-चार पशुओं को प्रमाणपत्र नहीं भी दिया जाता है, ऐसे पशु भी जिन्दा नहीं रहते बल्कि अंधेरी गलियों में काटे जाते हैं। देवनार कत्लखाने के आसपास ऐसे दलाल घुमते रहते हैं जिनका यही काम होता है कि नहीं कटने वाले बैलों को दूसरे कत्लखाने तक पहुंचाना।

देवनार एशिया का सबसे बड़ा और विश्व का दूसरे नंबर का कत्लखाना है। यहाँ चौबीस घंटों में ग्यारह हजार जानवरों को काटने की व्यवस्था है। एक हजार बैल, एक हजार भैंस, एक हजार सूअर तथा आठ हजार भेड़-बकरे। देश में प्रतिदिन अनुमानतः तीस हजार गाय-बैल काटे जाते हैं।

वर्तमान कानून, आर्थिक लाभ तथा भ्रष्टाचार के कारण गौ-वंश हत्या को प्रोत्साहन दे रहा है। गाय-बैल खरीदने-बेचने वाले व्यापारी, दलाल, परिवहन वाले, कत्लखानों से जुडे हुए छोटे-बडे लोग, सरकारी कर्मचारी, देश-विदेशों में चमड़े का व्यापार करने वाले लोग, सब के सब आर्थिक स्वार्थवश गौहत्या से जुड़े हैं।

पशुधन के जानकार श्री कांतिभाई शाह के अनुसार गोवध से देश को अपार हानि हो रही है। केवल देवनार कत्लखाने में १९८५-८६ में १,६९,५२६ पशु काटे गये थे। सन् १९८९-९० में इनकी संख्या बढकर २,०४,७६२ हो गयी। जब कि गाय-बैलों का वध केवल पंजीकृत बूचड़खानों में नहीं होता है, इस कारण यह अंदाज लगाना कठिन है कि कितने उपयोगी पशु वास्तव में काटे जाते हैं। अनुमान है कि पचास हजार से अधिक दूध देने वाली गाय-भैसें केवल कलकत्ता, मद्रास और बम्बई में ही काटी जाती है।

दो हजार टन गौ-मांस सन् १९७३-७४ में निर्यात हुआ था, वहीं सन् १९७९-८० में ४२ हजार टन गौ-मांस विदेश भेजा गया था। सन् १९८१-८२ में एक लाख ९० हजार टन गौ-मांस का निर्यात हुआ। यह गो-मांस मुख्यतः स्वस्थ पशुओं का रहा है। विदेशी मुद्रा के लालच में खेती के काम के लिये जरुरी पशुओं की संख्या में खतरनाक कमी आ रही है।

इस प्रकार सरकार अपने द्वारा बनाये कानूनों एवं संविधान की धाराओं को ताक में रखकर देश के अमुल्य पशुधन को नष्ट करने पर तुली हुयी है। फलस्वरुप जिस देश में दूध-दही की नदियाँ बहती थी वहाँ आज खून और अनीति भ्रष्टाचार का बोलबाला है। दूध के भाव निरंतर बढ़ रहे हैं। इनके परिणाम दूरगामी बहुत भयंकर होंगे जो हमारी आने वाली पीढ़ियों को भुगतने पडेंगे। देवनार कत्लखाना हमारी अहिंसा की संस्कृति पर एक काला कलंक है। राष्ट्र के तठस्थ जागरूक नागरिक के नाते हम यही चाहते हैं कि सरकार कृषिप्रधान भारतवर्ष के हित को ध्यान में रखकर कृषि के लिये उपलब्ध एक मात्र उर्जा गौवंश को बचाये।

J. K. Sanghvi

(जे. के. संघवी)

श्रीमद् विजय राजेन्द्र गुरु

इही संसार समुद्र के अन्दर,
मोह–माया जल पूर अपारा।
तृष्णा रुप किलोल चढ़े जहाँ,
अष्ट महामद मोह अटारा।
भावुक रुपि जहाज डुबोवन
बाजत पौन का काल कराला।
''धन्यमुनि'' गहन समुद्र में,
राजेन्द्र सूरि गुरु तारन हारा।।१।।

चढ़यो है गगन ऐसो,
ज्ञान रुपी मेघ जैसो।
दया रुपी बीज के,
झबक सो सुहायो है।
क्षमा रुपी वायु शुद्ध,
व्रत रुपी गाज बुद्ध।
निश्चे व्यवहार रुपी,
वचन जल बरसायो है।
भविकरुपी मोर जोर,
कर्म करे अति शोर।
जन्म जरा मृत्यु रुप,
ताप को मिटायो है।
श्राद्ध रुपी शोधन को,
समकित तरु फुलन को।
विजय राजेन्द्र सूरि,
वरसा बन आयो है।।२।।

सोलह सिंगार सजि अति सुन्दर,
हाथ गही समता की थारी।
भाव विशाल रु गुण मुक्ताफल,
लेई चलि गुरु वन्दन प्यारी।।
शील हू झांझर झंकार हुओ जब,
भाग गई कुशोक धुतारी।
सूरी राजेन्द्र के पाँव पड़ी तब,
दूर भई दुरगति की बारी।।३।।

मेघ घटा सुछटा असमान ज्युं,
संयम साज मुनि मगधारी।
भूरि जना रिछपाल कृपाल जु,
अमृत–बैन सुताप विड़ारी।
कालकराल कुलिङ्ग विखंडन,
मंडन शासन जैन सुधारी!
पंचम काल चले शुभ चाल सुं,
सूरिविजय राजेन्द्र जितारी।।४।।

– श्रीमद् विजय धनचन्द्रसूरीश्वरजी म.

□ ● □ ● □ ● □ ● □

मेदिनी ऊपर खूब फिरयो पण,
नहिं मिल्यो मुजने गुरु एसो।
आगमरीत से प्रीत करी,
महावीर के शासन गौतम जैसो।
साधुको नाम अनेक धरे,
पिण धारे नहिं महावीर कहे सो।
सूरिराजेन्द्र यतीन्द्रपति –
''मन्नालाल'' तिरे गुरुध्यान धरे सो।
ज्ञान उजास भयो घट जाके,
क्रोध रु मोह महामद गाले।
मान रु लोह हटाय दियो पुनि,
विषय विकार कुं दूर ही टाले।
पंच सुमति तिव गुप्ति कुं धारत,
पंच आचार ते शुद्ध ही पाले।
'सूरि राजेन्द्र' भविजन तारण,
अवतार हुओ शुभ पंचम काले।

– श्री ''मन्नालालजी''

अनेकान्त

आचार्यश्री जयंतसेनसूरिजी म.सा.

अनेकान्तवाद या स्याद्वाद जैन दर्शन की विश्व को एक अनमोल देन है। भगवान महावीर ने अपने युग में यह सिद्धान्त प्रचलित कर तत्कालीन परस्पर विरोधी तीन सौ तिरसठ मतों में समन्वय किया था और उन्हें एकता का मार्ग दिखाया था। वे चौबीसवें तीर्थंकर थे। उनके पश्चात् फिर कोई उनके जैसा तीर्थंकर नहीं हुआ, इसलिए उन्हें चरम तीर्थंकर माना जाता है।

उन्होंने आचार में अहिंसा व्रत को और विचार में अनेकान्तवाद को अत्यधिक महत्व दिया। अहिंसा के पालन से और अनेकान्त के स्वीकार से मनुष्य के व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में सुख और शान्ति का प्रादुर्भाव हो जाता है। इससे समाज आबाद होता है और मनुष्य अपने जीवन का आध्यात्मिक उत्थान कर मुक्ति सुख को प्राप्त कर सकता है।

वस्तु अनन्त धर्मात्मक है, अतः वह अनेक अन्त वाली है। उसे समझने के लिए अनेक दृष्टियों से देखना पड़ता है, तभी उसका यथार्थ सम्यग्ज्ञान होता है। यही अनेकान्त है। राम एक ही है, पर वे दशरथ के पुत्र है, भरत के भाई है, सीता के पति है, लवकुश के पिता है, विश्वामित्र के शिष्य है, सुग्रीव के मित्र है और रावण के शत्रु हैं। इसमें क्या कोई विरोध है ? कोई विरोध नहीं।

विरोध तो तब निर्माण होता है, जब कोई यह कहे कि; 'राम पिता ही है' या 'पुत्र ही है' और इस प्रकार जब विरोध तीव्र तीव्रतर या तीव्रतम हो जाता है; तब व्यर्थ में ही मारकाट मच जाती है और बरबादी हो जाती है, क्योंकि उस समय हर कोई अपने आग्रह पर अड़ा रहता है। हठाग्रह से अशान्ति निर्माण होती है और समन्वय से चहुँओर शान्ति फैल जाती है। हठाग्रही बनने से सत्यग्राही होना अधिक अच्छा है। हठाग्रही सत्य से दूर होता जाता है, और सत्यग्राही सत्य के अधिकाधिक नज़दीक पहुँचता है। सत्यग्राही ही सुख शान्ति स्थायी रूप से प्राप्त कर सकता है।

अनेकान्तवाद अविरोधी है - समन्वयी है। आइये, उसके कुछ और उदाहरणों का अवलोकन करें। कुछ प्रश्नोत्तर इस प्रकार हैं -

प्रश्न - पत्थर छोटा होता है या बड़ा ?

उत्तर - पत्थर चट्टान से छोटा होता है और कंकर से बड़ा। इस उत्तर में क्या कोई विरोध है ? बिल्कुल नहीं। इस प्रकार एक ही पत्थर छोटा भी है और बड़ा भी।

प्रश्न - टोपी अच्छी है या खड़ाऊ ?

उत्तर - सिर पर टोपी अच्छी होती है और पाँवों में खड़ाऊ। इससे विपरीत पाँवों में टोपी अच्छी नहीं लगती और सिर पर खड़ाऊ।

पर साधु सन्तों के चरणों में प्रणाम करते समय यदि टोपी गिर जाये, तो पाँवों में टोपी अच्छी ही मानी जायेगी और सिंहासन पर स्थापित करने के लिए भरतजी यदि श्रीराम की खड़ाऊ अपने सिर पर रखकर लाते हैं, तो ऐसे अवसर पर वह सिर पर रखी हुई खड़ाऊ भी अच्छी ही मानी जायेगी।

प्रश्न - अनामिका छोटी है या बड़ी ?

उत्तर - अनामिका मध्यमा से छोटी है और कनिष्ठा से बड़ी। इसलिए अनामिका उंगली छोटी ही होती है या बड़ी ही होती है, ऐसा नहीं कहा जा सकता।

इसी प्रकार खरबूजा तरबूज से हल्का होता है और ककड़ी से भारी। क्या इसमें कोई विरोध है ? बिल्कुल नहीं। खरबूजा हल्का भी है और भारी भी।

'वस्तु ऐसी ही है', यह कथन एकान्तवाद का है और 'वस्तु ऐसी भी है', यह कथन अनेकान्त वाद का है। इस प्रकार 'ही' और 'भी' से दोनों का अन्तर समझा जा सकता है। 'भी' में अन्य पक्षों धर्मों के अस्तित्व की स्वीकृति की गुंजाइश रहती है; 'ही' में नहीं ! 'ही' मे हठवाद है; जो एकान्त वाद को बल प्रदान करता है।

सूत्र कृतांग १४/१९ में भगवान महावीर का एक आदेश इस प्रकार है –

न याऽ सियावाय वियागरेज्जा।

इसका अर्थ है – स्याद्‌वाद से रहित (एकान्तवादी) वाणी मत बोलो।

अनेकान्तवाद को स्याद्‌वाद भी कहते हैं। 'स्यात्' का अर्थ हैं – किसी अपेक्षा से। प्रख्यात दार्शनिक पाश्चात्य विद्वान आईन्स्टाईन का 'थीयरी ऑफ रिलेटिविटी' अर्थात्-सापेक्षवाद, स्याद्‌वाद का अंश मात्र है। वैदिक दर्शन का 'दृष्टि सृष्टिवाद भी स्यादवाद का ही रुपान्तर है।

अपेक्षा भेद से किसी वस्तु में अनेक गुणधर्मों का अस्तित्व स्वीकार करनेवाले विद्वान अनेकान्त के समर्थक हैं। इसके विपरीत एकान्तवादी वस्तु को एक ही दृष्टिकोण से देखते हैं; इसलिए वे यह जान नहीं पाते कि किसी अन्य दृष्टिकोण से वही वस्तु अन्य प्रकार की भी दिखाई दे सकती है। अनेकान्तवाद में ऐसा एकान्त आग्रह नहीं होता। एकान्त आग्रह दुराग्रह है।

एकान्तवाद यदि रोग है, तो अनेकान्तवाद उसकी औषधि है।

बौद्ध दर्शन का संदेश है – **'सर्वं क्षणिकम्।'** अर्थात् सब अनित्य है। वैदिक दर्शन कहता है – 'सर्वं नित्यम्।' अर्थात् सब नित्य है। ऐसी स्थिति में मनुष्य दुविधा में पड़ जाता है। वह सोचता है कि पदार्थ को नित्य माना जाये या अनित्य।

भगवान महावीर से गणधर गौतम ने भी सर्व प्रथम यही प्रश्न पूछा था – 'भगवन् ! तत्त्व क्या है ?'

भगवान ने उत्तर देते हुए कहा था – **'उप्पनेइ वा विगमेइ वा धुवेइ वा।'** अर्थात् जो उत्पन्न होता है, नष्ट होता है; फिर भी बना रहता है; वही तत्त्व है।

इसी तथ्य को वाचकवर भी उमास्वातिजी महाराज 'तत्त्वार्थसूत्र' में सूत्रबद्ध करते हुए लिखते हैं – **'उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य युक्त सत्।'** अर्थात् सत् वह है; जो उत्पत्ति, विनाश व स्थिरता से युक्त है।

जिज्ञासु के मन में यह शंका उत्पन्न होना स्वाभाविक है कि उत्पन्न का जब विनाश हो गया; तब वह वस्तु बनी कैसे रह सकती है ?

इसका समाधान इस प्रकार है – हर वस्तु अपने किसी न किसी आकार को लिए हुए होती है। आकार बदलता रहता है; पर वस्तु बनी रहती है। उत्पत्ति आकार की होती है; नाश भी आकार का

ही होता है; वस्तु का नहीं । इसलिए वह बनी रहती है ।

नित्य और अनित्य को समझने के लिए हमें मूल वस्तु और उसके आकार में भेद करना पड़ेगा । मूल वस्तु अर्थात् मूल द्रव्य और आकार अर्थात् उसकी पर्याय । किसी भी वस्तु का विचार दो दृष्टियों से करना चाहिये (१) द्रव्यदृष्टि और (२) पर्याय दृष्टि । इस प्रकार विचार करने से सत्य हाथ लग सकता है ।

द्रव्य दृष्टि से जो वस्तु नित्य है, पर्याय दृष्टि से वही वस्तु अनित्य भी होती है । किसी के पास सोने का कड़ा था । उसने उसे तुड़वाया और हार बनवाया । फिर उसने हार तुड़वाकर मुकुट बनवा लिया । अब कड़े और हार के रुप में वस्तु अनित्य हो गयी; क्योंकि न तो कड़ा रहा और न हार ही । फिर भी स्वर्ण के रुप में तो वह नित्य ही रही; क्योंकि जो स्वर्ण कड़े मे था; वही हार में था और फिर वही मुकुट में मौजूद है ।

यही बात अन्यत्र भी समझी जा सकती है । भूखे के लिए भोजन अच्छा है, बीमार के लिए वही भोजन बुरा है; इस कथन में कोई विरोध नहीं है ।

जो लोग स्याद्वाद को संशयवाद कह कर इसका विरोध करते हैं; वे भले चाहे जितने बड़े विद्वान् हों; उन्होंने केवल 'स्याद्वाद' यह शब्द सुना है । दृष्टिराग या संप्रदाय मोह के कारण वे इसके अर्थ को, इसकी परिभाषा को और इसके सार को समझने से वंचित रहे हैं; क्योंकि उन्होंने इसके लिए प्रयत्न किया ही नहीं । यदि प्रयत्न किया होता; तो स्याद्वाद और संशयवाद में जो अन्तर है, वह उनके ध्यान में आ जाता ।

स्याद्वाद संशयवाद नहीं है । संशयवाद में दोनों कोटियाँ अनिश्चित रहती हैं । जैसे – 'यह रस्सी है या साँप ?' इस विधान में न साँप का निश्चय है और न रस्सी का । दोनों अनिश्चित है पर स्याद्वाद में दोनों कोटियों का निश्चिय रहता है । जैसे 'द्रव्य दृष्टि से वस्तु नित्य भी है और पर्याय दृष्टि से अनित्य भी ।'

अध्यात्मोपनिषद् में लिखा है – **उत्पन्नं दधिभावेन, नष्टं दुग्धतया पुनः ।**

गोरसत्वात् स्थिरं जानन् स्याद्वाद द्विड्जनोऽपि कः ॥

दूध नष्ट हुआ, दही उत्पन्न हुआ; परन्तु गोरसतत्व दूध मे भी था और दही में भी है । इस तथ्य को जाननेवाला कोई भी व्यक्ति भला स्याद्वाद का द्वेषी कैसे हो सकता है ? अर्थात् वह स्याद्वाद का विरोधी नहीं हो सकता ।

स्याद्वाद का संबन्ध जैन दर्शन से है; इसलिए सभी जैनेतर दार्शनिकों ने इसके खंडन की चेष्टा की है; परन्तु आज तक किसी को भी अपने इस प्रयास में आज तक सफलता नहीं मिली है । आश्चर्य की बात तो यह है किं खंडन करनेवाले उन सभी दार्शनिकों ने अपने-अपने सिद्धान्तों के प्रतिपादन में स्याद्वाद का सहारा लिया है । अध्यात्मोपनिषद् में इसके कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं –

जातिवाक्यात्मकं वस्तु, वदन्ननुभवोचितम् ।

भट्टो वापि मुरारिर्वा, नानेकान्त प्रतिक्षिपेत् ॥

कुमारिल भट्ट और मुरारि नामक दार्शनिक विद्वान जब वस्तु को सामान्य विशेषात्मक मानते हैं;

तब वे अनेकान्त का खंडन कैसे कर सकते हैं ? अनेकान्तवाद यह कह सकता है कि वस्तु सामान्य भी है और विशेष भी ।

विज्ञानस्यैक माकारं, नानाकार - करंबितम् ।

इच्छस्तथागतः प्राज्ञो, नानेकान्त प्रतिक्षिपेत् ॥

विज्ञान के एक आकार को अनेक आकारों से युक्त माननेवाले बौद्ध दार्शनिक अनेकान्त का खंडन नहीं कर सकते ।

इच्छन् प्रधानं सत्वाधै र्विरुद्धैर्गुम्फितं गुणैः ।

सांख्यः संख्यावतां मुख्यो, नानेकान्त प्रतिक्षिपेत् ॥

बुद्धिमानों में प्रमुख सांख्य दर्शन के प्रणेता कपिल मुनि प्रकृति को सत्त्व, रज और तम इन परस्पर विरुद्ध (इन तीनों) गुणों से युक्त मानते हैं; इसलिए अनेकान्त का वे खंडन नहीं कर सकते ।

अबद्धं परमार्थेनं, बद्धं च व्यवहारतः ।

ब्रुवाणो ब्रह्म वेदान्ती, नानेकान्तं प्रतिक्षिपेत् ॥

वेदान्ती विद्वान, ब्रह्म (परमात्मा) को परमार्थ से अबद्ध और व्यवहार से बद्ध मानते हैं; इसलिए वे अनेकान्त का खंडन नहीं कर सकते ।

पंडित वाचस्पति मिश्र लिखते हैं – 'नैकान्ततः परमाणुभ्यो भिन्नो घटादिरभिन्नो वा ।' अर्थात् परमाणुओं से घटादि न तो एकान्त रुप से भिन्न हैं और न अभिन्न ही ।

न्यायदर्शनकार कहते हैं – **'बुद्धि सिद्धं तु सदसत् ।'** अर्थात् उत्पत्ति से पूर्व कारण रुप में कार्य सत् है और कार्य रूप में असत् । यह तथ्य बुद्धि से सिद्ध है और अनुभव से प्रमाणित है ।

महर्षि पंतजलि का कथन है – **'द्रव्य नित्यं, आकृति रनित्या ।'** अर्थात् द्रव्य नित्य है और आकृति अनित्य ।

महर्षि व्यास महाभारत (गीता) में लिखते हैं – 'न सत्तन्नासदुच्यते ।' अर्थात् उसे न तो 'सत्' ही कहा जा सकता है और न असत् ही ।

गीता में ही आगे लिखा है – 'सदसच्चाहमर्जुन !' है अर्जुन ! मैं सत् भी हूँ और असत् भी ।

ब्रह्मसूत्रों पर विज्ञानामृत भाष्य लिखा गया है । उसमें विज्ञान भिक्षु लिखते हैं –

चैतन्यापेक्षया प्रोक्तं, व्योमादि सकलं जगत् ।

अनित्यं, सत्य रुपं तु, कुम्भ-कुण्डाद्य पेक्षया ॥

आकाशादि समस्त जगत् को चैतन्य की अपेक्षा से असत्य कहा गया है और कुंभ कुंड आदि की अपेक्षा से सत्य ।

विशिष्टा द्वैतवाद के प्रवर्तक श्री रामानुजाचार्य का मानना है कि ब्रह्म जो है, वह चित् और अचित् इन दोनों विशेषणों से विशिष्ट है ।

आचार्य नागार्जुन महात्मा बुद्ध के उपदेश का सार इस प्रकार प्रकट करते हैं –

आत्मेत्यपि प्रज्ञपित मनात्मेत्यपि देशितम् ।

बुद्धेनात्मा न चानात्मा कश्चिदित्यपि देशितम् ।।

बुद्ध ने प्ररुपित किया है कि आत्मा है और ऐसा भी कहा है कि अनात्मा है। इसी प्रकार ऐसा भी कहा है कि न कोई आत्मा है और न कोई अनात्मा।

दार्शनिक श्री विद्यारण्य स्वामी लिखते हैं –

स घटो न मृदो भिन्नो, वियोगे सत्यनीक्षणात् ।

नाप्यभिन्नः पुरा पिण्डदशायामनवेक्षणात् ।।

घट जो है, वह मिट्टी से भिन्न नहीं है; क्योंकि मिट्टी का वियोग होने पर वह दिखाई नहीं देता। (घड़े में से मिट्टी निकाल देने पर घडा गायब हो जायेगा।) इसी प्रकार घट मिट्टी से अभिन्न भी नहीं है; क्योंकि मिट्टी के पिंड में वह दिखाई नहीं देता।

इस प्रकार उपरोक्त समस्त उक्तियों में अनेकान्त सिद्धान्त ही अपना अस्तित्व सिद्ध कर रहा है। हमारी समझ में यह नहीं आता कि अनेकांत का सहारा लेकर अपने विचारों का इस प्रकार प्रतिपादन करनेवाले दार्शनिक विद्वान किस मुँह से अनेकान्त का खण्डन करते हैं ?

केवल दार्शनिक क्षेत्र में ही नहीं, अपितु व्यवहार के क्षेत्र में भी अनेकान्त का सहारा लिए बिना हमारा काम नहीं चल सकता। इसके कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं –

१. शिष्य – "गुरुदेव ! संसार में मधुरतम वस्तु कौन सी है और कटुतम वस्तु कौन सी है ?"

मॅनिकस – 'नाम ही वह वस्तु है।"

शिष्य – "लेकिन एक ही वस्तु मधुरतम भी हो और कटुतम भी। ऐसा भला कैसे हो सकता है ?"

मॅनिकस – 'क्यों नहीं सुनने में सब को मधुरतम लगता है; किन्तु अपने द्वेषी और द्वेषपात्र का नाम सबको कटुतम लगता है।"

२. एक बार स्वामी दयानन्द सरस्वती किसी महाविद्यालय में प्रवचन हेतु पहुँचे। वहाँ एक छात्र ने उनसे पूछा – "आप विद्वान हैं या मूर्ख ?"

छात्र ने सोचा था कि यदि ये स्वयं को विद्वान कहेंगे; तो घमंडी मान लिये जायेंगे और यदि स्वयं को मूर्ख कहेंगे; तो फिर सब के मन में सवाल पैदा होगा कि आप प्रवचन कैसे देते हैं।

छात्र का प्रश्न सुनकर स्वामीजी बोले – "भाई ! मैं विद्वान भी हूँ और मूर्ख भी। शास्त्रों का जानकार होने से मैं विद्वान हूँ; पर बढ़ईगिरी, लुहार का काम आदि की जानकारी मुझे नहीं है; इसलिए मैं मूर्ख भी हूँ।"

३. एक फकीर की झोंपडी में एक बार चोरी हो गयी। चोर पकड़ लिया गया। फकीर और चोर दोनों राजा के सामने हाजिर हुए। राजा ने फकीर से पूछा – "इस चोर ने क्या क्या चुराया है ? फकीर ने उत्तर दिया – "महाराज ! इसने चादर, रजाई, तौलिया, तकिया, आसन, कंबल और यहाँ तक कि छाता भी चुरा लिया है। मैं तो पूरी तरह लुट गया हूँ महाराज !"

राजा ने चोर से पूछा – "क्या तुमने ये सब चीजें चुराई हैं ?"

चोर बोला – 'महाराज ! यह फकीर झूठ बोल रहा है। इतनी सारी चीजें मैंने नहीं चुराई। मैंने

तो इसकी झोंपडी से सिर्फ एक चादर चुरायी है। दूसरी किसी चीज को मैंने छुआ तक नहीं महाराज !

चोर के पास से सिर्फ चादर ही बरामद हुई थी। राजा ने चादर फकीर को लौटाते हुए पूछा – "क्या चोर ठीक कह रहा है ? इसके पास तो केवल यह चादर मिली है; और कुछ नहीं मिला।"

फकीर बोला – हाँ, महाराज ! चोर ठीक कह रहा है और मैं भी ठीक कह रहा हूँ। हम दोनों में से कोई भी झूठ नहीं बोल रहा है।

राजा ने पूछा – "सो कैसे ? मैं नहीं समझ सका।"

फकीर बोला – महाराज ! इसने जो चादर चुराई थी; वही मेरे लिए सब कुछ है। इसीको मैं चादर की तरह बिछाता हूँ, रजाई की तरह ओढता हूँ, धोती की तरह पहनता हूँ, तौलिये की तरह अंग पोंछता हूँ, तह करके इसी का तकिया बना लेता हूँ, आसन की तरह इसी को बिछा कर बैठ जाता हूँ और इसी से मैं कम्बल और छाते का काम लेता हूँ।"

४. एक बार घनघोर वर्षा हुई। गाँव के निकट बहनेवाली नदी में बाढ़ आ गयी। नदी उमड़ उमड़ कर बहने लगी। बाढ़ में एक लाठी बह रही थी। उस पर पाँच मेंढक बैठे हुए थे और आपस में बातचीत कर रहे थे।

पहला मेंढक – "अरे, हम बह रहे हैं।"

दूसरा मेंढक – "हम कहाँ बह रहे हैं ? हम तो बैठे हैं; पर यह लाठी बह रही है।"

तीसरा मेंढक – "बिल्कुल गलत। तुम दोनों गलत कह रहे हो। न तो हम बह रहे हैं, और न यह लाठी ही। केवल नदी बह रही है।"

चौथा मेंढक – अरे मुर्खो ! नदी तो जहाँ थी, वहीं है। वह क्या बहेगी ? वास्तव में पानी बह रहा है। पानी के बहने से उसकी सतह पर लाठी बहती दीख रही है और हम सब लाठी पर बैठे हैं; इसलिये हम भी बहते दिखायी दे रहे हैं। यदि जल न बहे, तो लाठी भी स्थिर रहेगी और हम भी स्थिर रहेंगे।

इस पर तीसरा मेंढक ताव में आ गया। वह जोर से बोला – "कौन कहता है कि पानी बह रहा है। क्या पानी बहने में स्वतंत्र है ? यदि स्वतंन्त्र है; तो सरोवर या बावड़ी का पानी क्यों नहीं बहता ? सच तो यह है कि पानी परतन्त्र है। नदी में उसे बहना ही पड़ता है; क्योंकि नदी बहती है। सूखी नदी नहीं बहती; पर हम इस समय जिस नदी में हैं; वह सूखी नहीं है; इसलिए मेरी बात ही ठीक है। वास्तव में नदी बह रही है।"

पाँचवा मेंढक बूढा था, अनुभवी था और अनेकान्तवादी था। वह बोला – " अरे ! तुम सब इस प्रकार झगड़ो मत। तुम सब सही भी हो गलत भी। अपनी-अपनी दृष्टि से तुम गलत भी हो। सच तो यह है कि नदी भी बह रही है, पानी भी बह रहा है, लाठी भी बह रही है और हम भी बह रहे हैं। चारों बातें सच हैं, पर एकान्त आग्रह करने पर चारों बातें गलत भी हैं। कैसे ? देखो, नदी स्थिर है; जो बह नहीं सकती। पानी भी स्थिर है; जो नदी की ढलान के कारण एक ओर जाने को विवश है। लाठी भी स्थिर है, जो जल के बहाव के कारण बहने को विवश है। यदि जल न होता; तो लाठी स्थिर रहती। रही बात हमारी। सो हम तो इस लाठी पर बैठे हैं। न तैर रहे हैं और न बह ही रहे हैं।"

(शेष अगले अंक मे)

श्री मुनिसुव्रत स्वामी स्तवन (२०)

(रामचंद्र के बाग चंपो मोही रह्यो री ए राह)

विवेचन : श्री जयानंदविजयजी म.

मुनिसुव्रत महाराज, कारज सिद्ध करोरी ।
अरज एह अवधार, हिवे मुझ खेद हरोरी ।। मुनि. ।। १ ।।

हे मुनिसुव्रत भगवंत ! मेरा कार्य (मोक्ष पद प्राप्त कर ने का) आप सिद्ध कर दो । मेरी यह अर्जी अवधारण कर मेरे भव भ्रमण रूपी खेद (थाक) को दूर कर दो ।

खेद तणी जे ख्यात, सर्वज्ञ जाणे सदारी ।
कर्म तणे वश कीध, मैं जेह मोह मुदारी ।। मुनि. । २ ।
अवगुण देखी आज, मुकशो मुज ने मतांरी ।
नही तो कहीशुं नाथ, तुम अम मुझ थतांरी ।। मुनि. ।। ३ ।।

भवभ्रमण रूपी खेद की जो कथा है, जो व्यथा है, जो अनाथता है । वह सर्वज्ञ प्रभु आप जानते ही हैं । प्रति पल मेरी कथा व्यथा को आप देख रहे हैं ।

जो-जो कार्य भवभ्रमण में सहायक थे वे सभी मोहराय के वशीभूत होकर दूसरे कर्मों की भी सहायता लेकर किये हैं उसके आप परिपूर्ण रूप से ज्ञाता हो । हे मुनिसुव्रत स्वामी ! अब मेरी अर्ज इतनी हैं कि मुझे अवगुणी निर्गुणी समझकर तज मत देना/छोड़ मत देना । हाँ ! अगर आपश्री ने मुझे छोड़ दिया तो दो स्नेहियों का आपस मे/अंतर मे स्नेह को अटूट रखकर बाहर से जो विवाद होता है वैसा विवाद आपसे मेरा हो जायगा ।

हिवे तुम महाराज हणियो मोह अरिरी ।
जगमें पाम्या जगीश, राखीये कीर्ति खरीरी ।। मुनि. ।। ४ ।।

हे मुनिसुव्रत स्वामी ! अब आपने तो मोहरूपी शत्रु कों हरा दिया है उसे नष्ट कर दिया है । तो मेरे भी शत्रुरूप मोहराय को हरवाने में संपूर्ण रूप से सहायक बनकर जिस कीर्ति को आपश्री ने प्राप्त की है उस कीर्ति को आप सुरक्षित रक्खें । हार न जाय । मेरे मोहरूपी शंत्रु का हनन करवाकर आप अपनी कीर्ति में चार चांद लगाने की कृपा कीजिये ।

पद्मा सुत परसिद्ध, आपो ऋद्धि अतिरी ।
राजेन्द्र पद दीयो राज, सुणीये सूरि पतिरी ।।मुनि ०।। ५ ।।

हे पद्मा माता के विश्व विख्यात मुनिसुव्रत स्वामी आप इस विश्व में प्रख्यात है । गुरुदेवश्री विनंति करते हैं कि आप मुझे अति ऋद्धि अर्थात् मोक्ष ऋद्धि दीजिये ।

हे सूरिपति अर्थात् तीर्थंकर भगवंत मुझे राजेन्द्र पद अर्थात् मोक्ष पद दीजिये ।

गुरुदेवश्री ने इस स्तवन में भव भ्रमण रूप थाक खेद को दूर/नष्ट/विनष्ट करवाने हेतु श्री मुनिसुव्रत स्वामीजी से विनति कर उनसे मोक्ष पद की याचना की है ।

श्रद्धांजली

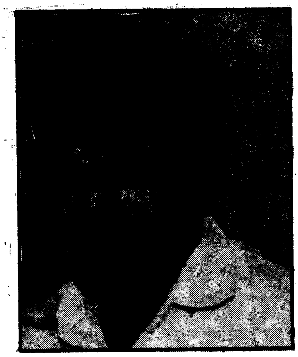

स्व. श्री वीरचंदजी जवेरचंदजी पालरेशा

(कोरटाजी निवासी)

स्वर्गवास : २९/१०/१९९२

- शोकाकुल -

धर्मपत्नि - तीजोबाई
भाई - कांतीलाल, शांतिलाल, मोहनलाल, रमेशकुमार, डॉ. सुभाष
पुत्र - पुत्रवधु - अशोक - पिस्ताबाई, किशोर - शर्मिला
पुत्री - दामाद - पुष्पा - जवेरचंद
पौत्र - अमित
पौत्री - सपना, दिपीका, अभिलाषा

एवं समस्त पालरेशा परिवार

प्रतिष्ठान - १) **श्री कुमार कार्डस्** ☎ ४५१७११
शनिवार पेठ, पुणे - ३०
२) **अशोककुमार वीरचंदजी** ☎ २९७१
मार्केट रोड़, लोनावला (पुणे)

प्रबल प्रभावक श्री राजेन्द्रसूरिजी

— श्रीवसंतीलालजैन

श्री प्रमोदसूरिजी का उपदेश

श्री ऋषभदासजी पारख भरतपुर के प्रसिद्ध जौहरी थे। उनकी पत्नी केसरबाई धर्मध्यान में लगी रहती थी। गृहस्थ धर्म का पालन करते करते उन्हें चार संतानें हुई। माणिकचंद और रत्नराज उनके पुत्र थे और गंगाबेन और प्रेमाबेन उनकी पुत्रियाँ। ऋषभदासजी ने अपने परिवार में धर्म के प्रति श्रद्धा निर्माण की थी। माणिकचंद और रत्नराज भी धर्म ध्यान किया करते थे और तीर्थयात्रा भी किया करते थे।

एक बार जब वे केसरियाजी तीर्थ की यात्रा के लिए गये थे; तब रत्नराज ने डाकुओं से यात्रियों की रक्षा की थी और अमरपुर निवासी श्री सौभाग्यमलजी की लड़की को डाकण के प्रकोप से बचाया था। व्यापार में भी दोनों भाई आगे थे। उन्होंने सीलोन-श्रीलंका जाकर व्यापार करके लाखों रुपये कमाये। श्रीलंका से वापिस लौटकर वे माता-पिता की सेवा में लग गये। माता-पिता वृद्ध हो गये थे; अतः कुछ समय बाद उनका स्वर्गवास हुआ।

एक दिन भरतपुर में श्री प्रमोदसूरिजी महाराज पधारे। वे यति थे और सदा ज्ञान-ध्यान में लगे रहते थे। एक बार संसार की असारता बताते हुए उन्होंने कहा—

यह संसार दुःख से परिपूर्ण है और असार है। संसार में जो आज दिखाई देता है; कुछ समय बाद वह यहाँ से चला जाता है। इस संसार के रंग बदलते रहते हैं। संसार में हमेशा के लिए कोई नहीं रहता।

जैसे शाम होते ही किसी पेड़ पर अलग अलग दिशाओं से पक्षी आकर बैठ जाते हैं; उसी प्रकार परिवार में अलग अलग जगह से प्राणी आते हैं। कोई किसी के साथ सदा नहीं रहता।

संसार के संबंध जुड़ते हैं; इसलिए टूटते हैं; अतः किसी वस्तु की प्राप्ति पर हमें हर्ष नहीं करना चाहिये। जो मोह, हर्ष, शोक आदि पर विजय प्राप्त करता है; वह सुखी होता है। मोह छूटा की दुःख गया।

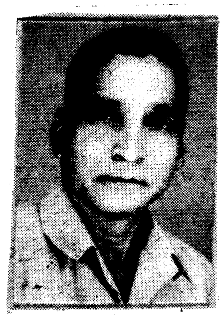

संसारी जीव इस संसार में बार बार जन्म धारण करते हैं; दुःख उठाते है; और मर जाते है। जो जन्मता है; उसे मरना ही पड़ता है। उसी प्रकार जो मरता है; उसे कहीं न कहीं जन्मना ही पड़ता है। जीव के देह-धारण को जन्म कहते है; और त्याग को मृत्यु।

जैसे कोई मनुष्य पुराने वस्त्र को छोड़ कर नया वस्त्र धारण करता है या पुराना मकान छोड़कर किसी नये मकान में प्रवेश करता है; उसी प्रकार जीव एक शरीर छोड़ कर दूसरा शरीर धारण करता है।

इस प्रकार जीव कभी देव बनता है; तो कभी मनुष्य। जीव कभी तिर्यंच बनता है;

तो कभी नारकी। यह जीव संसार में इन चारों गतियों में दुःख ही दुःख भोगता है। सुख तो कहीं है ही नहीं। मनुष्यगति या देवगति में जो कुछ सुख दिखाई देता है या अनुभव में आता है; वह सच्चा सुख नहीं है और वह कभी सदा के लिए नहीं रहता। जीव अपने कर्मों के कारण चारों गतियों में दुःख भोगता है।

इसलिए यदि सुख चाहते हो; तो इस संसार के जन्म मरण के चक्र से छूटने का प्रयत्न करो; अपने आत्मस्वरूप को पहचानो; भेद विज्ञान का अभ्यास करो और महाव्रतों का पालन करो। जो मनुष्य संसार से छूटने का प्रयत्न करता है और मुक्तिमार्ग में आगे बढ़ता है; वह अन्त में संसार के जन्म-मरण के चक्र से छूटता ही है।

रत्नराज ने यह उपदेश सुना और वे बड़े प्रभावित हुए। उनकी दीक्षा लेने की भावना प्रबल हो गई। उन्होंने अपने बड़े भाई से दीक्षा की इजाज़त लेकर श्री प्रमोदसूरिजी महाराज से प्रार्थना की—

हे गुरु महाराज! मैं इस संसार की असारता अच्छी तरह समझ चुका हूं। मैं इस संसार के बंधन में फँसना नहीं चाहता। कृपया मुझे महाव्रतों का दान दीजिये और मेरा उद्धार कीजिये। मैं भागवती प्रव्रज्या अंगीकार करना चाहता हूं।

रत्नराज की दीक्षा लेने की भावना सफल हुई। श्री प्रमोदसूरिजी महाराज ने अपने गुरुभाई श्री हेमविजयजी से उन्हें यति दीक्षा दिलवाई और उनका नाम यति रत्नविजय रखा। यह दीक्षा विक्रम संवत् १९०४ वैसाख सुदी ६ दिन उदयपुर में बड़ी धूमधाम से हुई।

इसप्रकार श्री रत्नराज यति रत्नविजय बने।

शिथिलाचारी यति-समाज

दीक्षा ग्रहण के बाद श्री रत्नविजयजी महाराज निर्दोष चारित्र का पालन करने लगे और एकाग्र होकर स्वाध्याय करने लगे। उस समय खरतरगच्छीय यति श्री सागरचन्द्रजी बड़े विद्वान थे। उनके पास श्री रत्नविजयजी महाराज ने संस्कृत व्याकरण, अलंकार, काव्य, कोश, न्याय-दर्शन आदि का अभ्यास किया और जैन-आगम ग्रन्थों का भी अध्ययन किया। पांच वर्ष तक वे यति सागरचन्द्रजी महाराज के पास रहे और उन्होंने अपना अध्ययन पूर्ण किया।

फिर वे तपागच्छीय श्रीपूज्य श्रीदेवेन्द्रसूरिजी महाराज के पास गये और उनके पास तपागच्छीय समाचारी का ज्ञान प्राप्त किया। श्रीदेवेन्द्रसूरिजी महाराज बड़े विद्वान और पारखी थे। वे रत्नराजजी की ग्रहण शक्ति से बड़े प्रभावित हुए और उन्होंने उनको पन्यास पदवी से अलंकृत किया।

श्रीपूज्य देवेन्द्रसूरिजी महाराज वृद्ध हो चुके थे। उन्होंने अपने शिष्य धीरविजयजी को अपना पाट दिया और रत्नविजयजी महाराज से कहा—मेरे शरीर का अब कोई भरोसा नहीं है। मैं धीरविजय को तुम्हारे भरोसे छोड़ता हूं। यह अभी छोटा है। तुम इसे पढ़ा लिखा कर विद्वान बनाना और मेरे बाद इसे श्रीपूज्य बनाना।

कुछ समय बाद राधनपुर में श्रीदेवेन्द्रसूरिजी महाराज का देहावसान हो गया। गुरु के आदेशानुसार पं. श्रीरत्नविजयजी महाराज ने धीरविजयजी आदि सोलह यतियों को अध्ययन करवाया और धीरविजयजी को श्रीपूज्य-पद प्रदान कर उनका नाम धरणेन्द्रसूरि रखा। श्रीपूज्य धरणेन्द्रसूरिजी ने भी श्री रत्नविजयजी महाराज को सम्मनित कर उन्हें अपना दफ्तरी बनाया

उस समय में यति लोग अपना आचार विचार भूल रहे थे और शिथिलाचारी बन रहे थे। श्रीपूज्य धरणेन्द्रसूरिजी और उनका शिष्यमंडल भी इस शिथिलाचार से नहीं बचा। उन्होंने यतियों की आवश्यक क्रियाएँ —प्रतिक्रमण, स्वाध्याय आदि छोड़ दीं और वे अपना समय मनोरंजन और मौजशौक में बिताने लगे। वे बाल सँवारते, इत्र लगाते, मंत्र-तंत्र करते, भक्तों से रुपये ग्रहण करते और ताश-शतरंज आदि खेलों की सहायता से अपना समय पूरा करते थे। इस प्रकार यति समाज का पतन हो रहा था।

श्रीरत्नविजयजी महाराज उन यतियों को समझाते थे; पर उन पर कुछ भी प्रभाव पड़ता नहीं था। यह शिथिलाचार देखकर श्री रत्नविजयजी महाराज की आत्मा तड़प उठती थी। वे इस शिथिलाचार के विरुद्ध क्रांति की आवाज उठाना चाहते थे और इसके लिए वे समय का इन्तजार कर रहे थे।

यति-क्रांति का श्रीगणेश

आखिर वह समय आ ही गया। उस समय श्रीपूज्य धरणेन्द्रसूरिजी का चातुर्मास धाणेराव में था। श्रीरत्नविजयजी महाराज उनके साथ थे। पर्वाधिराज पर्यूषण सानन्द संपन्न हो रहा था। इन पर्यूषण के दिनों में ही भादरवा सुदी बीज के दिन शिथिलाचार के विरुद्ध क्रांति की आग भड़क उठी।

प्रातःकाल का समय था। पर्यूषण में प्रवचन श्रीरत्नविजयजी महाराज दे रहे थे। प्रवचन में परमात्मा महावीर के त्याग तपोमय जीवन-वृत्तान्त को सुनाकर वे आये ही थे कि श्रीपूज्य धरणेन्द्रसूरिजी ने आपको याद किया। वहाँ इत्र का सौदा हो रहा था। दूर देश से कोई इत्र का सौदागर वहाँ आया था। उसने बढ़िया से बढ़िया इत्र श्रीपूज्य के सामने रखा। इत्र की महक से सारा कमरा सुगंधित हो गया। श्रीपूज्य ने इत्र की शीशी रत्नविजयजी की ओर बढ़ाते हुए कहा—रत्नविजयजी! लो देखो तो जरा, यह इत्र कैसा है?

श्री रत्नविजयजी महाराज जिस घड़ी का इन्तजार कर रहे थे; वह घड़ी आखिर इत्र की शीशी के रूप में आ ही गई। उन्होंने श्रीपूज्य से कहा—श्रीपूज्यजी! यह इत्र आपको ही मुबारक रहे। इस इत्र में और गधे के मूत में कोई अन्तर नहीं हैं। दोनों ही पुद्गल के रूप हैं। आप साधु हैं; पर अभी तक आपको पुद्गलासक्ति दूर नहीं हुई है। भला, एक यति को इस इत्र से क्या लेना देना है? यदि मौज शौक ही करना है; तो फिर घर-बार छोड़कर यति बनने की क्या जरूरत थी? राजसी ठाटबाट रखना, तमंचे रखना, सशस्त्र सिपाही रखना, मंत्र-तंत्र-गंड-तावीज करना यह यति-धर्म नहीं है। यदि यति लोग इनका उपयोग

करने लगेंगे; तो यति धर्म ही नष्ट हो जायेगा। उसे नष्ट होते आज मैं अपनी आँखों से देख रहा हूं। यदि धर्म से प्रेम है; तो ये सब बातें आज से ही बन्द कर दीजिये और ज्ञान-ध्यान में लग जाइये। भगवान आपको सद्बुद्धि प्रदान करे।

श्रीरत्नविजयजी महाराज की यह स्पष्ट चेतावनी सुनकर श्रीधरणेन्द्रसूरिजी कुछ अस्वस्थ से हुए और उन्होंने कहा—इस काल में इतने कठोर आचार का पालन असंभव है। मैं तो क्या; पर आप भी इतने शुद्ध आचार का पालन नहीं कर सकेंगे। मैंने दफ्तरी-पद-प्रदान कर आपका सम्मान किया; पर आज आप हम से ही मुकाबला करने चले हैं। कठोर साध्वाचार का पालन जरा आप ही करके दिखा दीजिये ना?

श्री रत्नविजयजी महाराज के चेहरे पर खानदानी नूर उतर आया। उन्होंने श्रीपूज्य के आव्हान को चुनौती देते हुए कहा—श्रीपूज्यजी? जरूर आपकी बात सत्य सिद्ध होगी। मैं जा रहा हूं; पर यतिमंडल में शिथिलाचार का जो रोग पनप रहा है, उसका इलाज जरूर होना चाहिए। वह इलाज मैं करूँगा। कड़वी दवा से रोग जरूर दूर होता है। मैं दवा शीघ्र ही भेजूँगा।

इतना कह कर रत्नविजयजी महाराज तत्काल वहाँ से लौट गये।

क्रियोद्धार और सत्यमार्ग-दर्शन

श्रीरत्नविजयी महाराज ने चातुर्मास में ही घाणेराव छोड़ दिया और वे अपने गुरुदेव श्रीपुज्य प्रमोदसूरिजी महाराज के पास आ गये। उनके साथ यति श्रीधनविजयजी और यति श्री प्रमोदसूरिजी महाराज भी थे। उन्होंने गुरु महाराज को घाणेराव के सब समाचार सुना दिये।

श्री प्रमोदसूरिजी महाराज भी यतियों के शिथलाचार से परिचित थे। उन्होंने श्री रत्नविजयी को सब तरह से योग्य समझ कर आहोर में ही बड़ी धूमधाम के साथ श्रीपूज्य पद प्रदान किया और उनका नाम श्रीमदविजय-राजेन्द्रसूरि रखा। आहोर के ठाकुर श्रीयशवंतसिंहजी ने श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी महाराज को छड़ी चामर, छत्र, पालखी, सूर्यमुखी, चंद्रमुखी, और दुशाला भेंट किये और उनका सत्कार किया।

श्रीपूज्य श्रीमद् विजय-राजेन्द्रसूरीश्वरजी महाराज आहोर से विहार कर शंभूगढ़ पधारे। वहाँ के यति श्री फतेहसागरजी ने और मेवाड़ के महाराणा ने उनका बड़ा भारी स्वागत किया। इसके बाद श्रीमद् विहार करते जावरा पधारे! जावरा के नबाब साहब उनके प्रवचन से बड़े प्रभावित हुए। वे उनके प्रवचनों से लाभ उठाते रहते थे।

व्यक्ती का संयम और तप त्याग उसे महान बनाता है। श्रीमद् के शुद्ध चारित्र के कारण और उनके अगाध ज्ञान के कारण उनकी ख्याति इतनी हुई कि धरणेन्द्रसूरिजी का प्रभाव कम होता गया। और आखिर उन्हें श्रीमद् के आगे झुकना पड़ा। चातुर्मास के बाद उन्होंने यति मोतीविजयजी और यति सिद्धिकुशलजी को जावरा भेजा। वहां से दोनों यति जावरा के कुछ श्रावकों के साथ श्रीमद् के पास रतलाम पहुँचे। श्रीमद् ने उनकी सब बातें सुनकर उनके सामने नौ बातें रखीं और कहा—यदि श्रीपूज्य धरणेन्द्रसुरिजी ये सब बातें मंजूर

करें, तो मैं अपना श्रीपूज्य पद छोड़ने के लिए तैयार हूं।

अन्त में श्रीपूज्य श्री धरणेन्द्रसूरिजी ने वे सब बातें मंजूर की और उस कलमनामें पर हस्ताक्षर किये। उन्होंने मंजूर किया कि आगे से—

(१)सभी यतिगण दोनों समय प्रतिक्रमणा-पडिलेहणा- देववंदन आदि करेंगे। मंत्र-तत्र का आडम्बर नहीं रचायेंगे।

(२) कोई भी यति किसी भी सवारी गाड़ी का उपयोग नहीं करेगा।

(३) कोई भी यति शस्त्र, तमंचा आदि नहीं रखेगा।

(४) कोई भी यति एकान्त में स्त्रियों के साथ वार्तालाप नहीं करेगा।

(५) कोई भी यति तंबाखु, गांजा, भांग आदि नशीली वस्तु का सेवन नहीं करेगा और मादक पदार्थो का सेवन करनेवाले यति से किसी भी प्रकार का संबध नहीं रखेगा।

(६) कोई भी यति सचित वस्तु को स्पर्श नहीं करेगा।

(७) कोई भी यति हिंसक व्यक्ति को नौकर नहीं रखेगा।

(८) कोई भी यति श्रावको से जबरदस्ती रुपये नहीं वसूलेगा।

(९) हर यति रोज नियमित रुप से पांच सौ गाथाओं का स्वाध्याय करेगा। वह ताश-शतरंज आदि नहीं खेलेगा और बाल ज्यादा नहीं बढ़ायेगा।

इस प्रकार श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरोश्वरजी महाराज ने अपनी आत्मिक शक्ति से सारे यति मंडल को प्रभावित किया और उन्हें सही मार्ग पर चलाया। इस प्रकार उनका एक काम पूरा हो गया।

अब उन्हे शुद्ध मुनि-मार्ग को प्रकाशित करना था; इसलिए उन्होंने विक्रम संवत् १९२५ में आषाढ़ वदी १० के दिन जावरा में क्रियोद्धार किया और श्रीपूज्य-पद के समस्त परिग्रह का त्याग करके उन्होंने पांच महाव्रतों के उच्चारण पूर्वक शुद्ध मुनिमार्ग ग्रहण किया। चामर-छड़ी-पालखी आदि समस्त परिग्रह उन्होंने जावरा के श्री ऋषभदेव भगवान के मंदिर मे अर्पण किया। उसी समय यति श्री धनविजयजी और यति श्री प्रमोदसूरिजी ने श्रीमद् से महाव्रती दीक्षा ग्रहण की और उनका शिष्यत्व स्वीकार किया। श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी महाराज गच्छ-नायक बने। उन्होंने अपने गच्छ के अनुयायियों के लिए कुछ सिद्धान्त स्थापित किये। वे इस प्रकार है—

(१) श्री सौधर्म बृहत्तपागच्छीय परंपरा श्वेतांबर कहलाती है; इसलिए परंपरा के मुनि श्वेतवस्त्र ही धारण करें। रंगीन वस्त्र धारण करना शास्त्र विरुद्ध है।

(२) जैनधर्म के वीतराग को ही देव माना गया है; इसलिए देववंदन के समय उनकी ही स्तुति बोलनी चाहिये। अन्य नामधारी रागी-द्वेषी देवताओं का स्मरण वीतराग परमात्मा के आगे करना उचित नहीं है। तीन थुइयों में पहली और दूसरी थुई श्रुतज्ञान की होती है। देववंदन के समय ये तीन थुइयाँ ही बोलनी चाहिए।

(३) सामायिक लेने के पहले गुरुवंदन करना चाहिये; फिर 'सामायिक दंडक' का पाठ उच्चार कर 'इरियावही' करनी चाहिये।

(४) प्रतिक्रमण में श्रुतदेवता, क्षेत्रदेवता, आदि का काउस्सग्ग करना और स्तुति

बोलना जिनागम के विरुद्ध है; इसलिये प्रतिक्रमण में ये काउस्सग्ग नहीं करने चाहिये और इनकी स्तुति भी नहीं बोलनी चाहिए।

(५) इसी प्रकार प्रतिक्रमण में 'लघुशांति', 'बृहच्छांति' और 'संतिकर' आदि भी नहीं बोलना चाहिए; क्योंकि प्रतिक्रमण की मूल विधि में इनका उल्लेख नहीं है।

(६) सबको जिन-प्रतिमा का दर्शन, वंदन, पूजन आदि भक्तिभाव पूर्वक करना चाहिये; क्योंकि जिनप्रतिमा पूजन आगम-सिद्ध है।

श्री सौधर्म बृहत्तपागच्छीय समस्त त्रिस्तुतिक संघ इन सिद्धांतों का तत्परतापूर्वक पालन करता है और अपनी आराधना सफल करता है।

अन्य प्रभावक कार्य

क्रियोद्धार के पश्चात् श्रीमद् ने शासन प्रभावना के महान कार्य हाथ में लिए। अपने गच्छ के अनुयायियों को प्रेरणा दे दे कर उन्होंने अनेक ग्राम-नगरों में मंदिर और क्रिया-भवनों का निर्माण कराया। कोरटाजी, स्वर्णगिरि, भांडवाजी और तालननपुर जैसे तीर्थो का जीर्णोद्वार कराया। श्री मोहनखेडा तीर्थ जैसे नये तीर्थों की स्थापना की। मारवाड और मालवा में उन्होंने कुल एक सौ पैंतीस छोटे बड़े जिनमंदिर बनवाये और लगभग तीन हजार जिनबिंबों की प्रतिष्ठा-अंजन शलाका की। आहोर का प्रतिष्ठा- अंजनशलाका महोत्सव तो बड़ा महत्व पूर्ण था। वहाँ एक ही दिन में ९०० जिनबिंबों की अंजन शलाका की गई। उन्होंने आहोर में एक ही विशाल ज्ञान भंडार निर्माण किया और शास्त्रों को सुरक्षित रखने की व्यवस्था की।

जिनबिंब और जिनागम ही इस पंचमकाल में भव्य जीवों के लिए आधारभूत हैं; यह बात श्रीमद् गुरुदेव अच्छी तरह जानते थे; इसलिए उन्होंने मंदिर निर्माण के साथ साहित्य निर्माण पर भी विशेष ध्यान दिया। उन्होंने अपने गच्छ के मुनिमंडल को गच्छ के आचारमार्ग का ज्ञान कराने के लिए 'गच्छाचार पयन्ना' ग्रंथ की गुजराती भाषा में बालावबोध टीका लिखी। उसी प्रकार पर्यूषण पर्व में श्री कल्पसूत्र का अर्थ सामान्य श्रावक भी जान सकें; इसलिए उन्होंने श्री कल्पसूत्र की मालवी और गुजराती भाषा में 'श्री कल्पसूत्र बालावबोध' नामक टीका लिखी और उसे देवनागरी लिपि में सचित्र प्रकाशित करवाया। साधु मुनिराजों के लिए उन्होंने कल्पसूत्रार्थ प्रबोधिनी टीका संस्कृत में बनाई। उसी प्रकार जिनेन्द्र भगवान की गुणस्तुति रुप 'प्रभुस्तवन-सुधाकर' नामक ग्रंथ की भी उन्होंने रचना की। इस ग्रंथ में उनके बनाये हुए चैत्यवंदन-स्तुति-स्तवन आदि संग्रहित है। उन्होंने 'श्री नवपद पूजा' और 'श्री महावीर पंच कल्याणक पूजा' की भी रचना की है। 'श्रीनवपद-पूजा' अपने आप में बेजोड़ है।

आगमों के विशेष अध्ययन के लिए एक कोश ग्रंथ की उस समय अत्यन्त आवश्यकता थी; इसलिए श्रीमद् ने १४ वर्ष तक लगातार परिश्रम करके 'श्री राजेन्द्र अभिधान कोष' का निर्माण किया। संसार के विद्वानों ने इस महान ग्रंथ के कारण उनको सिर आखों पर चढ़ा लिया और वे विश्वपूज्य बन गये। 'श्री राजेन्द्र अभिधान कोष' के कारण श्रीमद् विश्वपूज्य बन गये। 'यह कोष अपने आप में सम्पूर्ण है और वैशिष्ट्य पूर्ण है। यह एक प्रकार का विश्वकोष ही है। इसमें शब्द के सभी अर्थ तो दिये ही हैं; पर इसके

अलावा शब्द का व्याकरण, व्यत्पुति और संदर्भ भी दिया है। यह ग्रंथ प्राकृत- संस्कृत भाषा में है।

श्रीमद् ने इस प्रकार छोटे बड़े कुल ६१ ग्रंथों की रचना करके साहित्य क्षेत्र में अपना महान योगदान दिया।

श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजी महाराज परम कृपालु थे। उन्होंने लोकोपकार के भी अनेक कार्य किये। उन्होंने समाज बहिष्कृत अनेक लोगों का उद्धार किया। चीरोला और उसके आसपास के गांवों के लोग ढ़ाई सौ वर्षो से समाज से बहिष्कृत थे; उनको श्रीमद् ने समाज में मिलाथा; और उनका सामाजिक बहिष्कार दूर किया। इसी प्रकार उन्होंने पूर्व सूचना देकर कुक्षी निवासियों को भी आग के प्रकोप से बचाया।

श्रीमद् ने अपना सारा जीवन ज्ञान-ध्यान में और तप साधना में बिताया। वे सदा अप्रमत्त और जागृत रहे। क्रियोद्वार के बाद चालीस साल तक वे समाज को सामाजिक और धार्मिक मार्गदर्शन करते है। उन्होंने मालवा, मारवाड़ और गुजरात में लंबे लंबें विहार किये और लागों को धर्ममय जीवन जीने की प्रेरणा दी।

यतिक्रांति करके उन्होंने यतियों का उद्धार किया और स्वयं क्रियोद्धार करके उन्होंने विशुद्ध साधुजीवन का आदर्श मुनिजनों के समक्ष रखा। कई जगह विरोधियों ने उनको सताने का और बदनाम करने का प्रयत्न किया; पर वे अपने निश्चय पर अटल रहे।

उनके तप-त्याग का ऐसा प्रबल प्रभाव था, कि उनके आगे हिंसक पशु और हिंसक मनुष्य भी अपना हिंसक स्वभाव भूल जाते थे और उनके आगे झुक जाते थे

विक्रम संवत १९६३ में पौष सुदी सप्तमी के दिन राजगढ़ में श्रीमद् ने 'ॐ अर्हँ' पद का जाप करते करते देहत्याग किया गया, उस समय उनकी अवस्था अस्सी साल की थी। श्री मोहनखेडा तीर्थ पर उनके पार्थिव देह का अग्नि-संस्कार किया गया, और वहाँ समाधि मंदिर बनाया गया; जो आज तीर्थधाम बना हुआ है।

आज श्रीमद् हमारे सामने नहीं है; पर अपने महान कार्यों से वे आज भी अमर है। वे आज भी 'जागती ज्योति' है। उनके नामस्मरण से इष्टफल की प्राप्ति होती है; और विघ्न-संकट दूर होते हैं। वे आज भक्तों की मनोकामनाएं पूरी करते हैं, इसीलिए श्रीमद् विजय यत्तीन्द्र-सूरीश्वरजी महाराज ने उनके बारे में कहा है—

आनन्द हर्ष वधामणा, सद्गुरू तुम नामे।
तुम नामे पातिक टले, अविचल सुख पामे॥ १ ॥
तुम नामे सुख-संपदा, तुम नामे समृद्धि।
तुम नामे सहु संपति, मिले नवनवी ऋद्धि।
तुम नामे संमट टले, टले सघली व्याधी।
तुम नामे वांछित फले, टल जावे उपाधि।

ऐसे थे प्रबल प्रभावक श्रीमद् विजय राजेन्द्र-सुरीश्वरजी महाराज। उनके चरणों में हमारा कोटि-कोटि बार वंदन हो।

मानव अवतार

स्व. आचार्यश्री यतीन्द्रसूरीश्वरजी

देवा विसयपसत्था, निरया विविह दुक्खसम्पन्ना।
तिरिया विवेग विगला, मणुआणं धम्मसामग्गी।।

देवता प्रशस्त सुखभोगों में इतने निमग्न हैं कि उन्हें अपने बीते हुए समय का भी भान नहीं रहता वे अपने जीवन को दिव्य भोगोपभोगों में ही पूर्ण कर डालते हैं— भोगासक्ति में अपने प्राप्त देवत्व को खो बैठते हैं, किन्तु सफल नहीं कर सकते।

नारक जीवों को प्रतिक्षण इतने असह्य दुःखों का अनुभव करना पड़ता है जिससे उन्हें क्षण भर भी सुख की साँस लेने को नहीं मिलती। सारी जिन्दगी उनकी हाय! हाय!! करते व्यतीत होती है।

पशु, पक्षी आदि तिर्यञ्च जीव विवेक विकल हैं। उनके पास धार्मिक सामग्री का सर्वथा अभाव है और निरन्तर उनका जीवन पराधीन है। अतः पशु पक्षी अपने जीवन को खा-पीकर यों ही गँवा देते हैं, किन्तु उसे सफल नहीं बना सकते।

इसलिये सूत्रकार कहते हैं कि 'मणुआणं धम्मसामग्गीं' एक मनुष्यभव ही ऐसा है जिसमें धर्मसामग्री प्राप्त हुई है। इस योनि में आये बिना किसी भी प्राणी का आत्मोद्धार नहीं होता। निर्युक्तिकार श्री भद्रबाहुस्वामी फरमाते है कि-

मणुस्स खेत्त जाई, कुलं रूवारोग्गमायुअं बुद्धि।
सवणोग्गह सद्धा, संजमोय मोगम्लि दुल्लहाई।।

१ मानवावतार, २ आर्यक्षेत्र, ३ उत्तम जाति, ४ श्रेष्ठ कुल, ५ सुन्दर रूप, ६ रोगरहित शरीर, ७ निरावाध आयु, ८ बुद्धिबल, ९ अच्छा जान-पना, १० अतूट श्रद्धा, ११ संयम ये ग्यारह बाना संसार में महा पुण्य के उदय से मिलते हैं।

इसी प्रकार उपघात और विषय ग्रहण करने या इन्द्रियों की महती शक्ति और देव-गुरु की सेवा भक्ति का योग भी मिलना बड़ा कठिन है। यह सामग्री मिल जाने पर भी जो मनुष्य आलस्य, मोह, अवज्ञा, अहङ्कार, धन्धा-रोजगार, व्यसन, दृष्टि राग, खेलकूद, भय कुतुहल, औधत्य आदि दोषों में फँस कर अपनी मिली हुई शिष्ट सामग्री और जीवन को बरबाद करके जैसे खाली हाथ आये वैसे ही यहाँ से कूच कर जाते हैं।

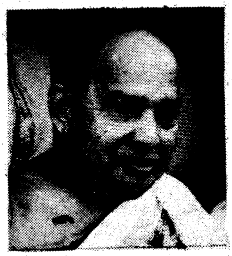

संसार में जिस प्रकार हाथी, रथ, कवच आदि शस्त्रास्त्र सज्ज व्यक्ति कुशल वीरता से समर-स्थल में विजय पाकर सर्वत्र सन्मान प्राप्त करता है, उसी प्रकार श्रद्धा रूपी हाथी, व्रत रूपी रथ, क्षमा रूपी शस्त्र, सद्ध्यान रूपी कवच, तप रूपी शौर्य और गीतार्थ रूपी कुशलता, आदि गुणों का धारक मनुष्य ही कर्म रूपी

सुभटों को जीत कर विजय पाता है और अपने असली ध्येय मोक्ष को प्राप्त कर लेता है।

जो लोग केवल भोगाकांक्षी हैं, वैभव के गुलाम हैं, व्यसनों में आसक्त हैं, यह मेरा तेरा की धुन में मस्त हैं तथा जो लोग परत्रिया गमन, अपहरण, परप्राण हरण और विधवा या कुमारिका रमण आदि लोक निन्दनीय अत्याचारों का आचरण कर अपनी पशुता का प्रदर्शन कराते हुए मिली हुई उत्तम सामग्री के अवसर को कलङ्कित कर यों ही खाली हाथ चले जाते हैं, परन्तु अपने मानव-जीवन को सफल नहीं कर पाते।

जिस प्रकार किसी रङ्क मनुष्य को चिन्तामणि रत्न मिल जाने से वह सब तरह सुखी बन गया लेकिन उसने उसको बिना समझे कौवे उड़ाने में फैंक दिया। फिर वह अपने रङ्कत्व को पाकर रोने लगा। इसी प्रकार कुत्सित आचरण करने वालों की दशा होती है, फिर उन्हें चिन्तामणि रत्न के समान सुखदायक मानव-अवतार मिलना दुर्लभ हो जाता है।

संसार नगर बहुत विस्तृत है, उसका चौरासी लक्ष जीवनयोनि रूप चौहटा अति दुरन्त है। उस में भ्रमण करते हुए थोड़ा-थोड़ा पुण्य संचय हो जाता है तब कहीं मानव-अवतार उपलब्ध होता है। उसमें भी मानव जीवन को सफल बनाने के लिये उत्तम सामग्री का योग मिलना और भी दुर्लभ है। अतः जो व्यक्ति सचेत होकर, असन्मार्ग को छोड़ कर धार्मिक सदाचरण मार्ग में दृढ़ता से जुट जाता है वह अपनी मानवता पाकर अपने ध्येय में सफल हो संसार का पूज्य बन जाता है और सदा शाश्वत सुख का भोगी हो जाता है। इसलिए—

१ जिनेश्वर और सद्गुरु की सेवा भक्ति करो। २ जैनधर्म और उसके शासन पर दृढ़ आत्म-विश्वास रक्खो। ३ हिंसा, असत्य, चोरी, अब्रह्मचर्य और परिग्रह की खोटी लालसा को छोड़ो। ४ क्रोध, लोभ, मोह, मद आदि आभ्यन्तर शत्रुओं का दमन करना सीखो। ५ इन्द्रियों के विषय-विकारों को जीतो। ६ सज्जनता धारण करो और ७ दान, तप, स्वाध्याय, शील, सत्सङ्ग, वैराग्य आदि नियमों का भली भाँति से परिपालन करना सीखो। क्यों कि—

निवृतिः कर्मणः पापात्सततं पुण्यशीलता।
सद्वृत्तिः समुदाचारः श्रेयमेतद् उत्तमम्।। १ ।।
मानुष्यमसुखं प्राप्य यः सज्जति स मुह्यति।
नालं स दुःखमोक्षाय संगो वै दुःखलक्षणः ।। २ ।।

पाप कर्म से हमेशा अलग रहना, प्रति दिन पुण्य का संचय करते रहना, साधु पुरुषों के मार्ग को अपनाना और उत्तम सदाचार का पालन करना। इनके समान श्रेय की साधना दूसरी कोई नहीं है।

दुःखपूर्ण मनुष्य शरीर को पाकर जो व्यक्ति विषय-भोगों का सेवन करने में आसक्त रहता है वह मोह में है। विषयभोगों का संयोग अति दुःखप्रद है। वह कभी दुःखों से छुटकारा नहीं होने देता। दुःखों से छुटकारा पाने के लिये तो सदा संयम और त्याग र[illegible] पड़ेगा।

तप, जप, पूजा, पाठ, व्रत, नियम, सुशील, दया, दान, परोपकार आ[illegible] उत्तम

श[illegible] धर्म

कार्य धर्म के विशुद्ध अंग है। उनकी आराधना में जब तक आत्म-विश्वास नहीं होता, आगम विधान और भाव-विशुद्धि नहीं होती, तबतक इनकी आराधना वास्तविक फलप्रदा नहीं है। अत: इनमें आत्म-विश्वास, आगमोक्त विधान और भावों की विशुद्धता होना ही चाहिये तभी यह श्रेय: साधना फलदायक है। इसलिये धर्मसाधना में वरतना ही चाहिये। कहा है कि—

धर्म करत संसार सुख धर्म करत निर्वाण।
धर्म पन्थ साधे बिना, नर तिरियञ्च समान।।
धर्म बडा संसार में, पद-पद सम्पद देय।
विपदा सब दूरी करे, ए सम अवर न लेय।।

धर्म की आराधना करने से संसार में सुख और मोक्ष मिलता है। धर्माराधना के सिवाय मनुष्य पशु के समान है। संसार में धर्म से बड़ी वस्तु कोई नहीं है। धर्म के प्रभाव से ही पद-पद पर आनेवाली सारी विपत्तियाँ और शारीरिक व्याधियाँ नष्ट होती है। इसी तरह दुष्ट ग्रहों के उपद्रव एवं संताप भी भाग जाते है। सुख संपादन का सर्वोत्तम उपाय और कोई नहीं है। जो धर्म का अनादर करते हैं वे स्वयं अनादर के पात्र हो दुर्गतिगामी बनते हैं। उन्हें उभयलोक में कहीं भी सुखद स्थान नहीं मिलता। धर्मशास्त्र कहते हैं कि—

"उत्तम कुल में जन्म होना, धर्मी घर मिलना, चतुर विनीत पुत्र का योग मिलना, आज्ञाकारी परिवार सुपात्र स्त्री, खाने, पीने, पहिनने, और खर्चने पूरता धन का योग मिलना, लोक में पूछ, आदर सन्मान विशिष्ट विद्या, बुद्धि और शास्त्र श्रवण का योग मिलना इत्यादि सब बातें पूर्व भव में किये हुए सद्धर्म के प्रभाव से ही यहां उपलब्ध होती हैं, यह नि:सन्देह समझ लेना चाहिये। अत: प्रति दिन सद्धर्म का आराधन करना सीखो, मानव-जीवन का यही उत्थान मार्ग है जो उभयलोक में सुख-सामग्री का दायक है। शमित्यलम्।"

जीवन में जागृति लावे

जीवन में सहनशीलता, आचरण में दृढता, हृदय में कोमलता, आंखों मे करुणा, जीभ में मिठास, इन्द्रियों पर संयम तथा विचारों में अपरिग्रह की भावना होना श्रेष्ठ मानव का लक्षण है।

सेवा, संयम, धैर्य, धर्म, विवेक, वैराग्य को जीवन का अभिन्न अंग बनाने के लिए बिगड़ती हुई आदतों को सुधारने का संकल्प कीजिये। आचरण का गिरना जितनी सामान्य बात हैं, उठना उ ना ही कठिन हैं, पानी का नीचे बहना/गिरना सामान्य बात है, ऊपर उठना/चढ़ना ब बात है। जीवन को उठाने के लिए हर क्षण जागरूक रहे। जिन क्षणों में हम रह सकेंगे, वह क्षण मानव जीवन के अमूल्य क्षण है।

साध्वजी मणिप्रभाश्रीजी

तधर्म के ग्राहक बनाकर सम्यगज्ञान के प्रचार में सहयोग देवें.

ज्ञानकसौटी (२०)

- महेन्द्र जे. संघवी - थाने

(स्वाध्यायी पाठक निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर पहले क्रमशः एक कागज पर लिखे फिर इसी अंक में पृष्ठ... पर दिये गए उत्तरों से तुलना करें। - **सम्पादक**)

४७६) विश्व में सर्वाधिक जैन मंदिर कहाँ पर है।
४७७) विश्व में पत्थर की बनी सबसे ऊँची जैन मूर्ति कहाँ व कौनसी?
४७८) सम्पूर्ण विश्व में सर्वाधिक जैन घर कहाँ पर हैं।
४७९) किस राज्य में सर्वाधिक दीक्षायें अंगीकार की जाती हैं।

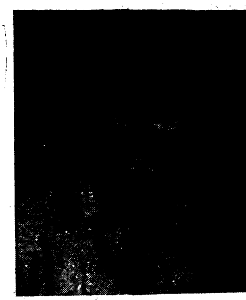

४८०) महाविगयी कितनी एवं कौनसी हैं?
४८१) विगई कितनी है? कौनसी?
४८२) जयवीयराय सूत्र का अन्य नाम?
४८३) महावीर स्वामी के पट्टधर कौन थे?
४८४) प्रतिष्ठा के समय पर जिनका नाम अवश्य लिखा जाता है?
४८५) सुधर्मा स्वामी जी के पट्टधर कौन थे?
४८६) भगवान महावीर के जीव को समकित कब प्राप्त हुआ?
४८७) नंदनमुनि के भव में भगवान महावीर ने कितने मासक्षमण किये?
४८८) संभमदेव ने एक रात्रि में वीर प्रभु को कितने उपसर्ग किये?
४८९) वीर प्रभु ने राजगृही में कुल कितने चातुर्मास किये?
४९०) अमुक शर्तों के साथ लिये जानेवाले नियम को क्या कहते है?
४९१) तीर्थकरों के विशिष्ट गुणों को क्या कहते हैं?
४९२) देव, गुरू एवं धर्म के विषय में अनुचित वर्तन को क्या कहा जाता है?
४९३) मन के परिणाम को क्या कहते हैं?
४९४) नलिनीगुल्म विमान कौन से देवलोक में है?
४९५) ऐसा कहा जाता है कि भगवान महावीर की प्रथम देशना निष्फल गयी? क्यों?
४९६) कुरगडू मुनि को क्या करते हुये केवलज्ञान हुआ?
४९७) पावापुरी का मूल नाम?
४९८) गौतम स्वामीजी का मूल नाम?
४९९) श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ की प्रतिमा किसने भराई है?
५००) भरत चक्रवर्ती को कहाँ पर केवलज्ञान हुआ था?

विषयासक्ति से पूर्णत: विरक्ति

श्री रंगमुनिजी

एक महात्मा जंगल के शान्त एकान्त वातावरण मे प्रभु भक्ति पूर्वक जीवन व्यतीत कर रहे थे। उनके जीवन की शान्ति, निर्लोभ वृति एवं मानसिक विचारों की पवित्रता से अनेकों व्यक्ति भक्त बन गए थे। एक दिन एक राजा भी उनके चरणों में पहुँचकर विनम्र प्रार्थना करने लगा— प्रभो! मेरे राजमहल में पधार कर मुझे अनुग्रहीत कीजिए।

महात्मा ने उसकी प्रार्थना यह कहकर टाल दी कि मुझे तुम्हारे महलों में दुर्गन्ध आती है, अत: मैं वहां नहीं चल सकता हूँ। राजा ने अपनी बात आगे बढ़ाते हुए कहा—महाराज! महलों में तो हर समय सुगन्धित इत्र-फूलेल का छिड़काव होता रहता है, वहाँ पर दुर्गन्ध का क्या काम है? महात्मन्! मुझे आपकी बात समझ में नहीं आई।

एक दिन महात्मा राजा को साथ लेकर समीप ही चमारों की बस्ती में ले गये। वृक्ष की शीतल छाया में जाकर खड़े रहे। चमारों की बस्ती में चमड़ा पकाया जा रहा था। कहीं सुखाया जा रहा था। कहीं ताजा चमड़ा तैयार किया जा रहा था। उससे वातावरण दुर्गन्धमय बन रहा था। दुर्गन्ध राजा के लिए असह्य हो रही थी। महात्मा से बोला—प्रभो! जल्दी-से-जल्दी यहाँ से चलिए। दुर्गन्ध के कारण मेरी तो बुरी हालत होती जा रही है।

महात्मा बोले—राजन्! तुम्हें ही दुर्गन्ध आती है। इन चमारों के स्त्री-पुरुषों को देखो। ये कितना तल्लीनता पूर्वक काम में व्यस्त हैं खाना खा रहे हैं, इनको बिलकुल दुर्गन्ध नहीं आती।

राजा बोला—भगवन्! चमड़ा पकाते-पकाते, चमड़े का काम करते-करते इनको ऐसा ही अभ्यास हो गया कि इनको तनिक भी गन्ध नहीं आती। पर मैं इसका अभ्यासी नहीं हूँ। महात्मा ने हंसकर समाधान किया—राजन्! यही हाल तुम्हारे राजमहल का भी है। तुम्हें विषय भोगों में रहते-रहते उनकी दुर्गन्ध नहीं आती। तुम्हारा भी दीर्घकालीन अभ्यास हो गया है, पर मुझे तो विषय को देखते ही उसकी दुर्गन्धी के मारे उल्टी-सी हो जाती है। इसी कारण मैंने तुम्हारी प्रार्थना टाल दी तथा महलों में आने से इन्कार कर दिया है।

राजा महात्मा के कथन का रहस्य समझ गया। चरणों में झुककर चला गया। सच्ची विरक्ति तभी होगी, जब साधक विषयों से अरूची कर अनासक्त-भाव से साधना में संलग्न हो जाएगा।

शब्दसागर इनामी स्पर्धा (१४)

श्री प्रदीप एम जैन - बम्बई

प्रस्तुत स्पर्धा १४ का उत्तर अलग से फुलस्केप पेपर पर लिखकर पूर्णनाम पता एवं शाश्वत धर्म की सदस्य संख्या के साथ कार्यालय के पते पर ३१ दिसम्बर तक पहुंचाएं। प्रस्तुत स्पर्धा के उत्तर एवं परिणाम जनवरी १९९३ के अंक में प्रकाशित किये जाएंगे।

(नोट : एक सदस्य संख्या पर एक ही पृविष्ठी स्वीकृत की जाएगी। सदस्य संख्या के अभाव में प्रतियोगिता में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।)

पुरस्कार सौजन्य : अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद शाखा, जोगेश्वरी (बम्बई) की ओर से २००/- दो सौ रूपये का नगद पुरस्कार उत्तीर्ण प्रतियोगियों में समान भाग में वितरित किया जाएगा।

१	२		■	३		४		५		६
■		■	७		■		■		■	
८		९		■	१०				■	
११			■	■	१२		■	■	१३	
■		■	१४	१५		■	१६	१७		■
१८	■	१९				■	२०		■	२१
२२			■		■	२३		■	२४	
	■	२५	२६		■		■	२७		
■	२८	■		■	२९		■	३०		■
३१		३२			■	३३	३४	■	३५	
	■	३६		■	३७	■	३८			■
	■		■	३९				■	४०	

दाएं से बाऐं -

१) एकत्व भावना। अनुप्रेक्षा से साधक यह समझ सकता है कि संसार मे हर जीव है। (३)
३) तमिलनाडु में इरोड़ के पास श्री चन्द्रप्रभु भगवान का लगभग २००० वर्ष पुराना जिनालय है, जिसका प्राचीन नाम विरसंघातपेरूपल्लि भी था। (७)
७) श्रेयांसनाथजी के पिता राजा -- थे। (२)
८) आलोचना (प्राकृत में) (४)
१०) आकार रहित मोक्ष गामी का एक स्वरूप। (४)
११) हम काल चक्र के --- आरे में जी रहे हैं। (३)
१२) दुःख, गम। (२)
१३) दीपक (प्राकृत में) (२)
१४) पौष्टिकता प्रधान शाकाहारी भोजन में --- पदार्थ मांसाहारी भोजन से अधिक होते है। (३)
१५) खुश, चिंतामुक्त। (३)
१९) मुनिराज जमीन पर बैठने के पूर्व ओगे से तीन बार भूमि ---- करते है। (४)
२०) 'लोगस्स सुत्र' में तीर्थ शब्द ऐसे आया। (२)
२२) ऋषभ (प्राकृत में) (३)
२३) पार्श्वकुमार ने -- की लकड़ियों से जलते नाग-नागिन को निकालकर नवकार मंत्र सुनाया था। (२)
२४) मतिज्ञान का एक विभाग। (२)
२५) भगवान की आँगी में उपयोगी एक वस्तु। (३)
२७) बालक वर्द्धमान बचपन --- से थे। इसलिए तो सर्प का वेश धारे देव को उन्होंने एक तरफ उठाकर उछाल दिया था। (३)
२९) श्री विमलनाथजी की प्रथम आर्या। (२)
३०) पैसा, धन, दौलत। (२)
३१) श्री शांतिनाथजी की च्यवन, जन्म, दीक्षा व केवलज्ञान कल्याणक भूमि। (५)
३३) प्रभव स्वामी, जम्बुस्वामी के सम्पर्क मे आने के पूर्व -- थे। (२)
३५) -- रानी श्री संभवनाथजी की माता थी। (२)
३६) भारतीय संस्कृति गाय और -- की माता समान इज्जत करती है। (२)
३८) आ. श्री. राजेन्द्रसूरीश्वरजी अपने जीवन काल में अधिकतर --- प्रान्त में विचरे। (३)
३९) तप दो प्रकार के होते हैं। बहिरंग तप एवं ---- तप। (४)
४०) गुजरात में डीसा के निकट श्री महावीर प्रभु का तीर्थ जूना ---। (२)

उपर से नीचे -

२) जैन मुनि दीक्षा के समय अपने हाथों से ही अपना --, --- करते हैं। (२,३)
३) ग्यारहवें तीर्थंकर की माता देवी। (२)
४) श्री श्रेयांसनाथजी के यक्ष। (४)
५) गुजरात में भरूच के पास एक प्राचीन बंदरगाह था। उसी नदी के तट पर पार्श्वनाथजी का प्राचीन तीर्थ है। (३)
६) एक कुलकर। (४)

७) अष्टापद महातीर्थ पर रावण -- बजा रहा था। मंदोदरी नाच रही थी, कि उस वाद्य-यंत्र का तार-टूट गया, भक्ति में बाधा न पड़े इसलिए उस तार की जगह रावण ने अपने जंघा की नाड़ी बांधी थी। (२)
८) बड़ों को किस शब्द से संबोधित करते है। (अन्तिम अक्षर के उपर बिंदु लगायें)
९) समदृष्टि वाला देव, जो राजा, रंक, मानव, भगवान किसी को नही छोड़ता। (२)
१०) मोक्षगामी का एक और स्वरूप, दुःखरहित। (४)
१३) श्री चन्द्रप्रभुजी के प्रथम गणधर। (२)
१४) क्षमा (प्राकृत में) (२)
१५) प्रासुक, कीटाणुरहित (४)
१६) श्री सुपार्श्वनाथजी के पिता राजा --- थे। (३)
१७) प्राकृत में -- शब्द का अर्थ, शास्त्र, स्वास्थ्य व कौंरवा है। (२)
१८) उसभमजिअंच वंदे, संभवभिषांदणं च सुभइं च --- प्पहं च वंदे। (३)
१९) एक गणधर --- स्वामी। (३)
२१) म. प्र. के टीकमगढ़ जिले में श्री शांतिनाथजी का ऐतिहासिक व चमत्कारी तीर्थ। जिसका प्राचीन नाम मदनेसपुर मदनेसागर भी रह चुका है। (३)
२३) राजस्थान के जोधपुर जिले में स्वयंभू श्री पार्श्वनाथजी का चमत्कारी तीर्थ। (४)
२४) गुजरात के साबरकाठा जिले में संप्रति राजा निर्मित श्री शांतिनाथजी का तीर्थ जिसका प्राचीन नाम इलाभद्र, इलादूर्ग, इयदर आदि था। एवं राजस्थान में फालना के पास श्री शांतिनाथजी का तीर्थ जिसका प्राचीन नाम शतवादिका, शतवापिका था। (३,३)
२६) श्री धर्मनाथजी का च्यवन, जन्म, दीक्षा व केवलज्ञान भूमि। (४)
२७) स्व, अपना (२)
२८) अन्यथा शरणं -- त्वमेव शरणं मम। (२)
३१) राता महावीरजी का तीर्थ, जिसका प्राचीन नाम हस्तकुण्डी, हथुण्डी आदि भी था (३)
३२) राजस्थान के जिला का कॉच से बना मंदिर, यही कालिकाल सर्वज्ञ श्री हेमचन्द्राचार्यजी को आचार्य पद प्रदान किया गया था। (३)
३४) श्री वासुपूज्यजी का यक्ष। (३)
३७) -- ता व संस्कृती ही भारतीयता की पहचान है। (२)

"शाश्वत धर्म को भेंट"

५०१/- मुनिराज श्री केवलविजयजी, जयानंदविजयजी, सम्यगरत्नविजयजी, हरिश्चंद्रविजयजी आदि ठाणा के चार्तुर्मास में सम्पन्न विविध आराधनाओं के उपलक्ष में सकल श्री जैन संघ - सांधु की ओर से।

५००/- भीनमाल जैन संघ की ओर से पू. महासती साध्वीजी श्री महाप्रभाश्रीजी म. सा. साध्वी डॉ. प्रियसुदर्शनाश्रीजी आदि ठाणा के सफल चातुर्मास निवृत्ति निमित्त।

३००/- प. पू. आचार्य श्री जयन्तसेनसूरीश्वरजी म. सा. की आज्ञानुवर्तीनी विदुषी साध्वी श्री लावण्यश्रीजी म. सा. की सुशिष्या साध्वीजी श्री स्नेहलताश्रीजी की प्रेरणा से सियाणा नगर की श्राविका बहनों की ओर से।

२५१/- बाकरा निवासी शा. भवरलाल जुगराज समरताजी (फर्मः जैन स्टोर्स - अंकापल्ली) की ओर से।

१०१/- आहोर निवासी श्री मीठालाल सिरेमलजी द्वारा निर्मलकुमार को पुत्ररत्न की प्राप्ति के उपलक्ष में।

१००/- श्री आहोर जैन प्रवासी संघ बैंगलोर द्वारा आयोजित 'दीपावली स्नेहसम्मेलन निमित्त ह. देवकुमार के. जैन।

१००/- पू. मुनिश्री मुक्तिचन्द्रविजयजी म. सा. की प्रेरणा से श्री जैन संघ पेढ़ी थराद की ओर से।

१००/- हैदराबाद से सम्मेतशिखरजी तीर्थ यात्रा के उपलक्ष मे भेंट ह. शा. हस्तीमलजी बागरेचा द्वारा।

५६/- राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्री जयंतसेनसूरीश्वरजी के आज्ञानुवर्ती मुनि श्री पद्म, विद्वद, हर्षित रत्नविजयजी म. सा. की प्रेरणा से श्री त्रिस्तुतिक जैन संघ नमक मंडी उज्जैन की ओर से भेंट।

५१/- साध्वीजी श्री कोमललताश्रीजी के उपदेश से सांथु निवासी श्री धरमचंदजी सांकलचंदजी द्वारा बारहव्रत उच्चरने एवं परिवार में सिद्धितप, अट्ठाई आदि तपस्याओं के निमित्त।

५१/- काकीनाड़ा निवासी श्री पन्नालाल सरेमल के सुपुत्र महेन्द्र द्वारा २५ उपवास की तपस्या निमित भेंट।

'भू' अक्षर की तृतीय रश्मि प्रकाशित हो गयी है : शीघ्र मंगवाइए
समय का सदुपयोग कीजिए : इनाम जीतिये

'भू' अक्षर का स्वाध्याय चिन्तनात्मक पत्राचार प्रश्नावली-पत्र स्मृति श्रीमद् राजेन्द्रसूरीश्वरजी गुरूदेव के १६५ वें जन्म दिवस की पावन स्मृति में आशीर्वाद दाता : प. पू. तीर्थ प्रभावक राष्ट्रसंत श्रीमद् जयन्तसेनसूरीश्वरजी म. सा.

प्रेरणा दात्री : प. पू. वयोवृद्धा साध्वीजी श्री महाप्रभाश्रीजी म. सा.।

संयोजिका : प. पू. साध्वीजीद्वय डॉ. श्री प्रियसुदर्शनाश्रीजी म. (M.A., Ph.D.)

विजेताओं को कुल इनाम ६,१०१/- रूपये

(प्रथम पुरस्कार : ३१००/- रूपये; द्वितीय पुरस्कार : २००० रूपये एवं तृतीय पुरस्कार : १००१/- रूपये।)

विशेष सूचना :

१. एक परिवार से एक ही प्रश्नावली - पत्र मंगवाए।

२. प्रश्नावली - पत्र भरकर भेजने की अंतिम तिथि १ फरवरी १९९३।

३. 'ध' अक्षर का प्रश्नावली - पत्र का परिक्षा - परिणाम दिनांक १ नवम्बर १९९२ को घोषित हो चुका है। विजेताओं के नाम एवं "ध" अक्षर की प्रश्नावली के सही उत्तर 'भू' अक्षर की प्रश्नावली में प्रकाशित किए गए हैं।

४. प्रश्नावली - पत्र निःशुल्क निम्नांकित दोनों पतों में से किसी एक पते से ही शीघ्रातिशीघ्र मँगवाए एवं उसी पते पर निर्धारित समय पर प्रेषित करें।

प्रश्नावली - पत्र मँगवाने एवं भरकर भेजने का पता :

श्री कानराजजी कालूराजजी मेहता
सूरजपोल
पो. जालोर - ३४३ ००१
(राजस्थान)

शा. देवीचंदजी छगनराजजी
सदर बाजार
पो. भीनमाल ३४३ ०२९
जिला - जालोर (राजस्थान)

क्या आप जानते हैं?

- संचार माध्यम धूम्रपान मसले पर दोहरा रवैया अपनाने पर मजबूर हैं। एक ओर जहाँ इन माध्यमों का सहारा ले सरकार नशाखोरी और धूम्रपान के खिलाफ चेतना जगाने का प्रयास करती है वहीं दूसरी ओर संचार माध्यमों पर आकर्षक विज्ञापनों की बदौलत इस नशाखोरी को बढ़ावा भी मिलता हैं।

- तंबाकू का एक ओर जोड़ीदार है गुटका। सुपारी के साथ तंबाकू को मिलाकर खाए जानेवाले इस घातक गुटके के शौकीन हर गाँव शहर में मिलेंगे। धूम्रपान के लती जब किसी दबाव में सिगरेट बीड़ी छोड़ते हैं तो इस गुटके का सेवन शुरू कर देते हैं। जैसे सांपनाथ वैसे नागनाथ। सिगरेट का यह जोड़ीदार उससे भी ज्यादा खतरनाक होता है। मुँह के कैंसर की सर्वाधिक संभावना इसी गुटके से होती है।

- गुटके का एक रूप है - पान मसाला। पान की दुकान से लेकर जनरल स्टोर्स तक रंगीन पुड़ियों में मिलनेवाला यह पान मसाला भी कम घातक नहीं होता। सारे पान मसाले में तंबाकू भले ही न हो पर कैंसर पैदा करनेवाले पूरे तत्व उपस्थित रहते हैं। सुपारी, चूना, कत्था और खुशबुदार रसायनों से तैयार इस पान मसाले में बहुत मिलावट होती है। सड़ी सुपारी, घातक रसायन, चाँदी की जगह एल्युमीनियम की पत्तियाँ और पत्थर के बारीक टुकड़े मुँह की नाजुक त्वचा को नुकसान पहुँचाते हैं। यह साबित हो गया है कि कत्था कैंसर पैदा करने वाला प्रमुख तत्व हैं। सुपारी भी गुणसूत्रों (क्रोमोसोम) पर गलत असर डालती हैं।

- जयपुर के सवाई मानसिंह मेडिकल कालेज के मशहुर आंत रोग विशेषज्ञ डॉ. रमेशराय का मानना है कि पान मसाला और गुटके की लत न केवल जबड़ों को प्रभावित कर रही है बल्कि उसमें मौजूद तेजाब से खाने की नली और पेट के कैंसर के रोगियों की संख्या बढ़ती जा रही है। पान मसाला और गुटका संपन्न वर्ग से लेकर गरीब वर्ग तक में समान रूप से लोकप्रिय हो रहा हैं। आनेवाले वर्षों में कैंसर के रोगियों की एक संख्या हमारे देश में होगी। इससे निपटना निश्चित कठिन होगा।

- सिगरेट, शीतल पेय से लेकर चाकलेट निर्माण तक पर बहुराष्ट्रीय कंपनियों का कब्जा है। ये कंपनियां विदेश में तो वहां के नियम कायदे से चलती है मगर यहाँ आते ही अपना रंग बदल लेती है। जैसे चाकलेट को कड़ी रखने के लिए पश्चिमी देशों में तो कोको बटर का प्रयोग होता है पर भारत में वहीं कंपनियां निकल या एचवीओ का इस्तेमाल करने लगती है।

- प्रदूषण नियंत्रण के नाम पर सम्मति पत्र और खतरनाक रसायनों के नाम पर एक अनापत्ति प्रमाण पत्र लेना पड़ता है। ये सभी मुद्रा के जोर पर या उंची पहुंच के चलते आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं। मंत्री जब बदलते हैं तो ऐसा लगता है कि नए मंत्री शायद पर्यावरण के नाम पर कुछ नया करना चाहते हैं, पर सब कुछ भाषणों तक सीमित रह जाता है।

- राजस्थान के पाली में छोटे-छोटे रंगाई के उद्योगों ने ही आसपास के निवासियों का जीवन दूभर बना दिया है। पास में बहने वाली बांडी नदी में प्रतिदिन ९० टन अम्ल डाईज दस लाख मीटर पानी के साथ पहुंचते हैं। अब तक इस नदी में कुल ३३५२० टन जहरीले रसायन जा चुके हैं। इसमें १०८०० टन सोडियम हाईड्रोक्साईड, ८००० टन हाइड्रोक्लोरिक अम्ल ८२०० टन सल्फ्युरिक अम्ल, १८०० टन सोडियम सिलिकेट, ७२० टन डाईज और ४००० टन अन्य पदार्थ हैं। नदी का लगभग ५१ किलोमीटर हिस्सा जहरीला हो गया है। भूजल विभाग के सर्वेक्षण से पता चला कि आसपास के कुओं का पानी भी रंगीन और जहरीला हो गया है।
- ध्वनि प्रदूषण से निरंतर प्रभावित होने पर सिरदर्द तथा झुंझलाहट होती है जिन से मानसिक बिमारियाँ बढ़ सकती है।
- हिन्दुस्तान में ४० साल पहले ५०,००० बाघ थे जिनमें से इस वक्त २,००० ही रह गये हैं।
- संयुक्त राष्ट्रों के अनुसार भारत में दस लाख हेरोइन के व्यसनी है। बीस लाख लोग ओपियम लेते हैं एवं कई लाख केन्नाबीज के आदती हैं।
- डा. मर्चेन्ट के अनुसार प्रतिवर्ष उपयोग में लायी जानेवाली १८० टन ब्राउन सुगर में से मात्र २.५ टन ही पकड़ी जाती है।
- कृषि और गो सेवा के एक विशेषज्ञ डा. योगेशकुमार अरोरा के अनुसार जिस गाय के साथ अच्छा व्यवहार किया जाता है, वह सुबह-शाम सही समय पर दूध देने के लिये खुद तत्पर रहती है। अगर उस परिवार में किसी की मृत्यु हो जाए तो वह भी शोक में शामिल हो जाती है तथा उसकी आँखों में आँसू देखे जा सकते हैं।
- वन विनाश में अनियंत्रित पशुचारण, स्थानांतरित या झूम खेती, वनों में आग लगाना, बांध व सड़क निर्माण, वनों का अंधाधुंध कटाण, औद्योगिक, व्यापारिक फसलों का उत्पादन और कीड़ों-दीमकों एवं बीमारियों का प्रकोप भी सहायक रहा है।
- सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि वनों के नष्ट होने का प्रभाव सिर्फ उसी स्थान तक सीमित नहीं रहता जहाँ के वन काट डाले गए हैं, बल्कि उनका संपूर्ण दुनिया के सुदूर भविष्य व स्थानों पर भी कुप्रभाव पड़ता है।
- तीन दशक पहले भारी तामझाम के साथ शुरू की गई ''हरित-क्रांति की हरीतिमा अब धुंधलाने लगी है इस कथित क्रांति की चकाचौंध में डूबे किसानों को अब इसके स्याह पहलू नजर आने लगे हैं।
- उन्नत किस्म के बीजों से उपजी नाजुक फसलें कीटों के प्रति बहुत संवेदनशील होती है। इनकी रक्षा के लिए लाए विदेशी कीटनाशकों ने जहाँ कुछ कीटों पर काबू पाया वही कुछ नए किस्म के कीट, खरपतवार और फफूंदी को जन्म दिया है।
- विदेशी बीज आज भले ही उत्पादन बढ़ा रहे हों पर साथ ही खेती की उत्पादन लागत को भी दूनी गति से बढ़ाने में मदद कर रहे हैं। इससे खेती के अब केवल बड़े किसानों तक सिमट कर रह जाने का डर बनता जा रहा है।

— धर्ममित्र

रूकिये ! पढ़िये !! सोचिये !!!

- आज के युवक माता-पिता, शिक्षकों, गुरूजनों तथा परिवार की अधिनता को पसंद नहीं करते। किन्तु वासना, उत्तेजना आदि की गिरफ्त में इतने अधिक जकड़े हुए हैं कि उस घेरे को तोड पाना उन्हें असंभव सा प्रतित होता है। तरूणों की यह दुर्बलता स्वयं उन्हीं के सामने एक चुनौती बनकर खड़ी है।

- औद्योगिकरण के पहले (सन १८००) के मुकाबले आज वातावरण में कार्बनडाइ-आक्साइड गैस की मात्रा में २६ प्रतिशत की वृद्धि हुई है। अगर यही वृद्धि दर बनी रही तो अगले ५० वर्षों में जमा हुयी कार्वनडाइ-आक्साइड, फ्रिओन आदि गैसों के कारण ही वातावरण का ताप १ से ४ डिग्री बढ जायेगा।

- प्रदूषण के कारण ओज़ोन गैस की परत जो पृथ्वी की सतह से लगभग ५० किलोमीटर उपर है, में छेद होना भी तापवृद्धि की ओर संकेत करता है। ध्यान रहे सूर्य से आनेवाली अत्यन्त घातक अल्ट्रावॉयलेट किरणें जिनका लगमभग ९० प्रतिशत ओजोन परत सोख लेती है अब इस छेद से सीधे पृथ्वी पर आ सकेंगी। वास्तव में ओजोन परत हमारे लिये कवच का काम करती हैं।

- प्राकृतिक साधनों की अंतर्राष्ट्रीय संस्था ने पूरा पता करने के बाद बताया है कि जानवरों की ८५० नसलें तो बहुत जल्दी खत्म होने जा रही है।

- बात चाकलेट और कोल्ड ड्रिंक्स की नहीं दरअसल हमारे चारों और खाने-पीने की एक ऐसी संस्कृति विकसित की जा रही हैं - जिसमें आधुनिकता के नाम पर स्वास्थ्य को दांव पर लगाया जा रहा है। कोल्ड ड्रिंक्स, रमकोला, सिगरेट, पान मसाला, फास्ट फूड,, चाकलेट चिप्स और न जाने क्या-क्या हैं।

- धूम्रपान की बिमारी भी दिन दुनी गति से बढ़ी है। अनेक जानलेवा रोगों को जन्म देनेवाली इस बुरी लत के दुष्परिणामों पर खुब लिखा जा चुका है। मगर अफसोस यह आदत केवल पुरूषों के भरोसे नहीं रद्द गई हैं। अव महिलाएँ भी उसी शौक से सिगरेट फूंकती मिल जाएगी।

- विकसित देशों में धूम्रपान के खिलाफ जोरों से जागरूकता फैली है। अमेरिका में तंबाकू का सेवन १.१ प्रतिशत की दर से घट रहा है। अब सिगरेट कंपनियां विकासित देशों के बाजार में मुनाफा नहीं कमा पा रही है, वे अपना निशाना विकासशील देशों को बना रही हैं। विदेशी बाजारों में खदेड़ी गई सिगरेट कंपनियां गरीब देशों में अपना साम्राज्य फैला रही है। अफसोस की बात है सरकारी प्रयासों के चलते हमारे देश में तंबाकू का सेवन करनेवालों की संख्या २.२५ प्रतिशत की दर से बढ़ रही है। एक मोटे अनुमान के मुताबिक देश में आज लगभग ४० करोड़ लोग धूम्रपान-करते हैं। इनमें महिलाओं की संख्या छह करोड़ से अधिक है।

- खानपान की नई संस्कृति के तहत "फास्ट फूड" का चलन बढ़ गया है। भड़कीले कपड़े, तेज संगीत और सिगरेट के साथ फास्ट फूड भी युवा वर्ग में कथित आधुनिकता का प्रतिक बन गया है। दफ्तर तथा स्कूल-कालेज के नुक्कड़ पर खुली फास्ट फूड की दुकानों पर नई पीढ़ी की खासी भीड़ देखी जा सकती है। ऊट पटांग विदेशी नामवाले यह स्वादहीन व्यंजन हृदय के लिए ठीक नहीं होते। वसा की अधिकतावाले इस खाने में धमनियाँ पतली होने का डर बना रहता है। पौष्टिकता के नाम पर भी यह शून्य होते हैं। इनकी जगह दूध और हरी सब्जियों से बने उत्पादों को ज्यादा महत्व दिया जाना चाहिए।

- स्टेनफार्ड विश्वविद्यालय अमेरिका के अन्वेषण के अनुसार बारह किलोमीटर प्रति सप्ताह पैदल चलने से मृत्यु के खतरे २१ प्रतिशत कम और ४०-४५ किलोमीटर प्रति सप्ताह पैदल चलने से लगभग १० प्रतिशत रह जाते है।

- बम्बई की संस्था ड्रग अेब्युज इन्फोर्मेशन एन्ड रिहेबीलीटेशन रिसर्च सेन्टर व्दारा लिये गये सर्वेक्षण के अनुसार स्कुलों अथवा कॉलेजों में अभ्यासक्रम के दबाव से निराश होकर जुगार या ड्रग जैसी भयंकर आदतों के शिकार बीस प्रतिशत बनते हैं।

- वानिकी के नाम पर सरकारी उपक्रम के अंतर्गत रेल पटरियों के किनारे सार्वजनिक जगहों, सड़कों के दोनो ओर पौधे रोपे जाते हैं। मगर ये वे पौधे नहीं, जो आगे चलकर घनी, शीतल छाया दें, ईंधन और सजावटी लकड़ी दें, भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ाएं और प्रकृति को अधिक से अधिक स्वच्छ रखें, बल्कि युक्लिण्डम, पापुलर या चीड़ के पेड़ जो तात्कालिक और व्यापारिक लाभ दे सकते हैं। जिससे व्यापारिक उत्पादन के जरिए विदेशी मुद्रा अर्जित की जा सकती है पर वे पर्यावरण - मुद्दों से कोई सरोकार नहीं रखतें।

- पर्यावरण संतुलन के लिए वांछनीय वृक्षों के संवर्धन को नजर अंदाज करके युक्लिप्ट्स, चाय, चीड़, कहवा या खड़ के पौधो के लगाए जाने के पीछे सिर्फ यही हकीकत है कि ये व्यापारिक महत्व के है और तत्काल इनसे मुद्रा अर्जित की जा सकती है। लेकिन परिस्थितिकीय सिद्धांत कहते हैं कि वनों की अहम भूमिका मिट्टी और पानी का स्तर बनाए रखने में हैं। कुमाऊ पौधे के रोपण से हम मिट्टी और पानी से अनमोल धरोहरों की क्षति कर भयानक किमत चुका रहे है।

- उत्पादन बढ़ाने के नाम पर ६० के दशक में किसानों को विदेशी बीज, विदेशी उर्वरक और कीटनाशक अपनाने को कहा गया। ज्यादा उत्पादन देनेवाले विदेशी बीजों की ये सारी किस्में भारी सिंचाई की मांग करती थीं। भारत जैसे देश में जहां ७० प्रतिशत खेती सिंचाई के लिए मानसून का इंतजार करती है। वहां इन बीजों की प्यास बुझाने के लिए बड़े बांध बनाए गए। पर आधुनिकता के तीर्थ कहे जाने वाले बड़े बांधो की प्रासंगिकता भी अब कठघरे में है।

- एक अध्ययन के अनुसार खेती सें संबंधित ४३२ कीटों पर कीटनाशकों का खास असर नहीं होता। पहले ऐसे कीटनाशकों की संख्या केवल २५ थी। कीटनाशकों के भारी इस्तेमाल से जहाँ खेती की लागत तो बढ़ती ही है साथ ही पर्यावरण पर भी घातक असर होता है। कीटनाशकों का जहरीला प्रभाव किसान, उसकी फसल के साथ ही भूमिगत जल पर भी गहरा छोड़ता है।

— मुसाफिर

फर्टीलाइजर सबसीडी-मौत की वर्षा

—मुनिश्री देवेन्द्र विजयजी

आधुनिक युग में खेती के लिए फर्टिलाइजर (खाद) का प्रयोग दिनों-दिन बढ़ता जा रहा है। केन्द्रीय और राज्य सरकारें भी किसानों को खेती में फर्टिलाइजर का अधिक उपयोग करने के लिए प्रेरित तो करती ही हैं, साथ फर्टिलाइजर खरीदने के लिए सबसीडी भी देती हैं। इन कारणों से इस देश में ४३,००० टन और १२,००० टन की अल्प मात्रा में प्रयोग किया जाने वाला फास्फेटिक और नाइट्रोजिनूस फर्टिलाइजर का उपयोग पिछले २७ वर्षों में बढ़कर १९८७-८८ में २,२५,९०० और ५८,३६,०००० टन तक पहुँच चुका है।

दुर्भाग्य की बात तो यह है कि अंग्रेजी शासन काल के लार्ड मैकाले के समय से प्रगति के भ्रामक आंकड़े प्रस्तुत करने की प्रणाली स्वतंत्र भारत में भी चल रही है। यही कारण है कि जहां दुनियाभर का बुद्धिजीवी वर्ग फर्टिलाइजर के बढ़ते उपयोग के दुष्परिणामों से उत्पन्न समस्याओं के समाधान से जुड़ रहा हैं, वहीं भारतीय शासन तंत्र इसे "प्रगति का सूचक" मानकर सपनों में विचरण कर रहा है। माने देश की उपजाऊ भूमि का जो दिन-प्रतिदिन उपजाउपन समाप्त हो रहा है, उस और उसका कोई ध्यान नहीं है।

श्री आर. अशोककुमार ने जनवरी १९९० में तैयार की हुई एक रिपोर्ट में बताया है कि अपने देश की सिंचाई (सिंचन) के नीचे की जमीन के भुगर्भ में नाइट्रेट की मात्रा ३०२ पी. पी. एम. लगभग हो चुकी है। जबकि सुरक्षा की दृष्टि से यह मात्रा जमीन में ४५ पी. पी. एम. होना चाहिये। नाइट्रोजन युक्त कृत्रिम फर्टिलाइजर के उपयोग ने अपनी जमीन को आहार, पानी जैसे आवश्यक पदार्थों को कितने आश्चर्यजनक स्तर तक प्रदूषित कर दिया है इसका प्रमाण यह है कि श्री मुखर्जी, पी. नेमा, अरुण अग्रवाल, ए. के. सुशील जैसे विद्वानों द्वारा दी गई जानकारी अनुसार बड़े बाँध के विस्तारों में भुगर्भ जल में फ्लोरिन की मात्रा खतरनाक स्थिति तक बढ़ रही है।

गुजरात राज्य में मेहसाणा जिले के दो प्रभाव ग्रस्त गांवों में हुए सर्वेक्षण के आंकड़े जमीन में फ्लोरीन की वृद्धि ३.२ पी. पी. एम. से ३.८ पी. पी. एम. बतलाते हैं। जबकि नागार्जुन सागर बांध क्षेत्र के आसपास के गांवों में यह वृद्धि ३ से १३ पी. पी. तथा तुंगभद्रा जमीन के अन्दर बढ़ गया है।

यदि फर्टिलाइजरों का उपयोग इसी गति से बढ़ता रहा तो ऐसा अनुमान है कि सन् २,००० तक भूगर्भ जल भण्डार में फ्लोरिन की मात्रा ११.८५ से बढ़कर ५० पी. पी. एम. तक और सन् २०५० तक ८३ से ३५० पी. पी. एम. तक बढ़ जाएगीं।

जिन लोगों को आंकड़ों का यह इन्द्रजाल समझ में नहीं आ रहा है, उनके लिये इतना ही समझना काफी है कि फ्लोरिन युक्त पानी पीने से पैरों के घुटने तथा दो हड्डियों की जोड़ का

केन्द्रित स्थान आदि शरीर के विभिन्न अंग इस सीमा तक अकड़-जकड़ जाते हैं कि ऐसा प्रदुषित पानी पीने वाले देहातो में लोग रात को सोते समय गादी पर जाड़ा डोरा लटका कर रखते हैं। दो पैसे की डोरी से थैले उपर बाँध कर रखते हैं। इस तरह सोते हैं। जब प्रातःकाल उठते हैं तब उस लटके हुए डोरे को हाथ से पकड़कर ही उठते हैं। ऐसी स्थिति होती है। इसी प्रकार यह प्रदुषित जल जब बैलों को पीना पड़ता है, तब बैठे हुए बैलों को खड़ा करने में दो काश्तकारों (किसानों) को सींगों को खींचकर उन बैलों को खड़ा करना पड़ता है। बैल जैसे शक्तिशाली प्राणी की शक्ति जब इतनी घट जाती है, तो मनुष्य का तो कहना ही क्या?।

गाय के सम्बन्ध में एक पौराणिक कथा से आप परिचत होंगे ही गाय के प्रत्येक अगं-प्रत्यंग में अलग-अलग देवताओं ने अपना निवास कर लिया और सबसे अंत में आई महालक्ष्मीजी स्वयं को किसी भी अंग में रहने की विनती करती है तब गाय कह देती है कि मेरे प्रत्येक अंग का कब्जा किसी न किसी देवता ने कर लिया है। अतः अब कहीं भी जगह नहीं है। इसलिये आपको रहना हो तो मेरे गोबर-मूत्र में रह सकती हो। (शकृत मूत्रे निवेसत) तब श्री महालक्ष्मीजी (देवीजी) ने इस बात को स्वीकार करते हुए गाय के गोबर-मूत्र में निवास किया।

"पशुओं के गोबर-मूत्र में लक्ष्मीजी का वास हैं" यदि सचमुच अपने राजनीतिक सरकारी तंत्र एवं सजीव वर्ग इस छोटी सी बात को समझ लेते तो आज इतने बड़े-बड़े कतल खाने चलाकर पशुओं की चमड़ी और माँस का निर्यात कर मात्र विदेशी मुद्रा (फारेन करन्सी) कमा कर उसके बदले फर्टिलाइजर का आयात करने की आवश्यकता न पड़ती। गाय को छोड़कर कुत्ते को पाने की मुर्खता करते क्या ?

खेती से उत्पन्न अनाज की बिक्री से जो भी रकम प्राप्त होती थी वह शुद्ध लाभ होता था। आज की स्थिती इसके ठीक विपरीत है। कृषि मंत्रालय, कृषि विश्वविद्यालय और राज्य सरकार के विभिन्न कृषि विभागों द्वारा उन्नत की गई नई तकनीकों द्वारा की जा रही खेती के पुण्य प्रताप से फर्टिलाइजर, जन्तुनाशक, औषधियाँ, संकर बीज और ट्रैक्टरों से लगाकर डीजल इन्जिन तक के खर्चे पर किसान की छोटी सी कमर पर इतना बड़ा बोझ डाल दिया है कि एक फसल वाला ४० वर्ष पूर्व का किसान जीतना सुखी था, उतना सुखी और शांत, तीन फसल लेकर १२ माह निष्फल परिश्रम करने वाला आज का पंजाब, हरियाणा का किसान भी नहीं है। यह एक विचारणीय प्रश्न है।

('जैन प्रतीक' से साभार)

हर व्यक्ति के अपने प्रश्न हैं, अपनी समस्याएँ हैं। यदि व्यक्ति के पास ज्ञानद्रष्टि है, तो वह अपने प्रश्नों को इस प्रकार सुलझाने की चेष्टा करेगा कि नया प्रश्न पैदा न हों। यदि ज्ञानदृष्टि नहीं है, तो प्रश्न सुलझाते-सुलझाते नया प्रश्न पैदा कर देगा। जीवन की समस्याओं को सुलझाने वाली ज्ञानदृष्टि प्राप्त करना अति आवश्यक है। ऐसी ज्ञानद्रष्टि शास्त्रों के अध्ययन-परिशीलन से प्राप्त होती है।

सरेराह चलते-चलते

* **अब आ रहा है 'रम कोला'** - कोल्ड ड्रिंक्स के चहेतों पर अपनी पकड़ मजबूत करने के लिये 'रम कोला' बाजार में आ रहा है। जैसा कि इसके नाम से ही साफ है कि इसमें कोला तो होगा ही उसकी आड़ में रम यानि शराब भी होगी। कोला-कम-रम को लेकर अनेक बड़ी कम्पनियाँ अपने उत्पाद के साथ बाजार में आनेवाली है। यह भी तय है कि इस उत्पाद को बेचने के लिए चलाए जानेवाले महंगे विज्ञापन अभियान में युवाओं की मर्दानगी को ही निशाना बनाया जायेगा। शराब के प्रति कुछ हद तक बनी सामाजिक लोक-लाज की दीवार को गिराने में रमकोला प्रमुख भूमिका निभायेगा। तनाव में जी रही युवा पीढ़ी को शराब में डुबोकर पैसे कमाने का यह निराला तरीका है। जिसे सरकारी स्वीकृति भी आसानी से मिल गयी है।

* **आंकडों का इंद्रजाल** - देश में प्रशासकों की अप्रामाणिकता खुले आम बाहर आने के बाद भी उन्हें कुछ नहीं होता है, वे बे रोकटोक सीना तानकर घूमते हैं। देश पर कर्ज का बोझ बढ़ने से ब्याज भरने के लिये देश के हितों को गिरवी रखा जा रहा है। अनेकानेक रास्तों से करवृद्धि या मूल्यवृद्धि करने के पश्चात् अंशमात्र कम करके महाउपकार का डौल किया जाता है एवं बजट के इंद्रजालिक आंकड़ो के सामने प्रजा को भ्रम में डाला जा रहा है।

* **मांस उत्पादन में पानी का दुर्व्यय** - केलिफोर्निया में एक संस्था द्वारा किये गये सर्वेक्षण के आधार पर मांस उत्पादन में पानी के दुर्व्यय के आंकड़े आंखे खोलनेवाले हैं। एक रतल साग-भाजी के लिये २० से ४० गेलन, दूध के लिये ९० गेलन, अनाज प्राप्ति हेतु १०० से २५० गेलन पानी की आवश्यकता होती है। जब कि अंडे प्राप्ति हेतु मुर्गी पालन में ६६० गेलन, एक रतल चीज के लिये ६६० गेलन, मक्खन के लिये २०५७ गेलन, गो मांस के लिये २४६४ गेलन पानी का दुर्व्यय होता है।

* **सरकार और महंगाई** - सरकार ने पेट्रोलियम पदार्थों एवं उत्पादों में २२ से ५४ प्रतिशत की वृद्धि कर महंगाई और आगे बढाने का अवसर प्रदान किया है।

* **विदेशी बीज और उर्वरक** - अब तो यह स्पष्ट हो गया है कि विदेशी बीजों पर उर्वरक छिड़क कर पैदावार एक सीमा तक ही बढ़ायी जा सकती है। इन विदेशी बीजों से अपनी फसलें बीमारियों, कीटों और जलवायु के प्रति बहुत संवेदनशील होती हैं। जमीन के पोषक तत्वों का भी ये बड़े पैमाने पर शोषण करती है।

* **हरित क्रांति के नाम पर** - हरित क्रांति के दौरान फसलों का रिकॉर्ड उत्पादन करनेवाले राज्यों की भूमि में अब जिंक, मैंगनीज, मैग्नीशियम, लोहा, तांबा और मोलिबिडेनम सरीखे पोषक तत्वों की मात्रा बहुत कम हो गयी है। मगर अफसोस कि इस दुष्चक्र के चलते इन तत्वों की कमी के लिए किसानों को उन्ही उर्वरकों का सहारा लेना पड़ता है जो धरती की बची-खुची पोषक शक्ति भी खींच लेते हैं।

— प्रवासी

शब्दसागर इनामी स्पर्धा १३ के उत्तर एवं परिणाम

परिणाम - १) कु. चन्दनबाला डूंगरवाल - रतलाम (सी-८२२) २) कु. मंजु पारसमलजी मदुराई (सी-५३८) ३) कु. संगीत जे. संघवी - आहोर (बी-८९) ४) कु. सोमी जैन - बाग (डी-८५७) ५) श्री जितेन्द्रकुमार बी. जैन - पुना (सी-१०१५) पांचो उत्तीर्ण प्रतियोगियों को पुरस्कार स्वरूप दो सौ रूपये का समान भाग २००/५ = ४० (चालीस रू. नगद) म. आ. द्वारा भेज दिये गए हैं।

उत्तर :- १) सम्यक्त्व २) समेत शिखरजी ३) मोहनीय ४) क्षमा ५) वैराग्य ६) छरि ७) चाणस्मा ८) व्युत्सर्ग ९) चित्रा १०) अनशन ११) माण्डवगढ १२) चिंतामणि १३) दर्शनावरणीय १४) अदत्तादान १५) मनःपर्यय ज्ञान

वाक्य - सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्राणि मोक्ष मार्गः

१ अक्टूबर से ३१ अक्टूबर १९९२ तक शाश्वत धर्म के बनाए गए सदस्यों की सूची

सदस्य बनाने वाले का नाम	बीस वर्षीय	दस वर्षीय	तीन वर्षीय	कुल सदस्य
श्री रमेशभाई व्होरा - सुरत	--	२	१८	२०
कार्यालय - थाने	१	२	२	५
श्री अशोक जैन - टाण्डा	१	--	१	२
श्री जे. के. संघवी - थाने	--	--	२	२
श्री पारसमल सेठिया - नीमच	--	--	१	१
	२	४	२४	३०

ज्ञानकसौटी २० के उत्तर

(४७६) पालीताणा, (४७७) बावन गजाजी ([redacted] अर्थात् ८४ फीट) बडवानी में, (४७८) बम्बई, (४७९) गुजरात, (४८०) चार, माँस, मदिरा, मक्खन, मध, (४८१) छः दूध, दही, घी, तेल, गुड/शक्कर, तली हुयी वस्तु, (४८२) प्रार्थना सूत्र, (४८३) सुधर्मा स्वामीजी, (४८४) "जीरावला पार्श्वनाथाय नमः" (४८५) जंबुस्वामीजी, (४८६) नयसार के भव में, (४८७) ११,८०६४५ मासक्षमण, (४८८) बीस, (४८९) चौदह, (४९०) अभिग्रह, (४९१) अतिशय, (४९२) आशातना, (४९३) लेश्या, (४९४) सौधर्म देवलोक, (४९५) किसी ने दीक्षा अंगीकार नहीं की, (४९६) खाते - खाते, (४९७) अपापापुरी, (४९८) इन्द्रभूति, (४९९) आषाढी श्रावक, (५००) आरीसा भवन में

समाचार दर्शन

सुरत में उपधान तप मालारोपण

सुरत : राष्ट्रसन्त जैनाचार्य श्रीमद् विजयजयन्तसेनसूरीश्वरजी आदि ठाणा की निश्रा में चल रहे उपधान तप की माला परिधान कार्यक्रम कार्तिक वदि ११ शुक्रवार दि. २०.११.९२ को सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर ३६ छोड का उद्यापन भी रखा गया था। अष्टान्हिका महोत्सव के अंतर्गत विविध महानुभावों द्वारा पुजाऐं पढ़ायी गयी। मालारोपण के दिन मोरखीया नेमचंदभाई जेचंदभाई परिवार की ओर से स्वामी वात्सल्य का आयोजन किया गया।

पारा में नवकार भवन का उद्घाटन एवं दीक्षार्थी का अभिनन्दन तीर्थ यात्रियों का स्वागत

पारा : कार्तिक पूर्णिमा के शुभदिन ध्वजारोहण के बाद एक चल समारोह निकाला गया। पारा निवासी श्री कस्तुरचंदजी नागौरी की पुत्री कु. रेखा दि. ५-१२-९२ को जैनाचार्य राष्ट्रसंत श्रीमद् जयन्तसेनसूरीश्वरजी की निश्रा में सुरत में भागवती प्रवज्या अंगीकार करने जा रही है, अतएव दीक्षार्थी एवं उनके माता-पिता का समाज द्वारा अभिनंदन किया गया। अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के केन्द्रीय अध्यक्ष - श्री सेवन्तीभाई मोरखीया के करकमलों से नवकार भवन का उद्घाटन किया गया। श्री मोरखीया ने भी अपनी ओर से सहयोग राशि की घोषणा की। स्वामीवात्सल्य का आयोजन श्री नगीनलालजी सागरमलजी छाजेड़ की ओर से रखा जाकर प्रति वर्ष इसी दिन उनकी ओर से स्वामीवात्सल्य हेतु राशि घोषित की गयी। श्री मोरखीया का साफा बंधाकर स्वागत किया गया। नवकार भवन निर्माण में श्री प्रकाश छाजेड़ - पारा का विशेष सहयोग रहा, अतएव शाखा परिषद द्वारा उनका भी अभिनंदन किया गया। कार्यक्रम का संचालन - श्री प्रकाश छाजेड़ एवं आभार प्रदर्शन शाखा अध्यक्ष - श्री राजेन्द्र कोठारी ने किया।

अ. भा. श्री राजेन्द्र नवयुवक परिषद - शाखा पारा के तत्वावधान में ७५ यात्रियों के प्रस्थित सम्मेतशिखरजी - पावापुरी संघ के दि. ८-११-९२ को आगमन पर भव्य स्वागत करने का लाभ श्री सुभाषचंदजी वालचंदजी कांकरीया परिवार ने लिया। इस अवसर पर स्वामीवात्सल्य का आयोजन भी हुआ।

भावरा (म. प्र.) में मंदिर निर्माण कार्य प्रारंभ

भावरा : प. पू. जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से ३० नवम्बर से मंदिरजी निर्माण कार्य प्रारंभ हो रहा है। इस प्रसंग पर स्वामीवात्सल्य एवं गुरूदेव की अष्टप्रकारी पूजा रखी गयी है। जैन श्वे. संघ भावरा की ओर से जारी विज्ञाप्ति में कहा गया है कि मंदिर निर्माण में प्रति ईट दो सौ पचास रूपये नकरा रखा गया है। कम से कम ग्यारह ईंट लिखानेवालों के नाम आरास की तख्ती पर लिखा जायेगा। सहयोग अपेक्षित है।

अहिंसक व्यसनमुक्त युग निर्माण की शपथ के साथ सम्पन्न अखिल राजस्थान जैन युवा सम्मेलन १९९२

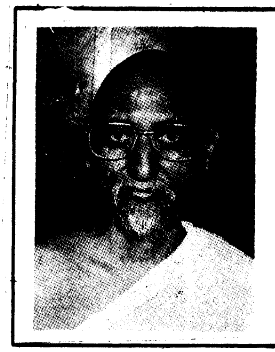

अहिंसक व्यसन मुक्त युग का निर्माण करने की शपथ के साथ "अखिल राजस्थान जैन युवा सम्मेलन १९९२" का समापन समारोह ८ नवम्बर १९९२ को राजस्थान प्रान्त के सिरोही जिले के ऐतिहासिक जैन तीर्थ श्री बामणवाड़ीजी में सम्पन्न हुआ। समापन समारोह में युवकों ने व्यसन मुक्त बनना एवं बनाना, धर्म क्रान्ति के द्वारा युवकों में धार्मिक जागृति लाने का प्रयास करना, भगवान श्री महावीर की नाद विश्व में जगाने के लिये, एवं प्रतिवर्ष श्री महावीर के शासन की स्थापना दिवस वैशाख सुदि ग्यारस को राष्ट्रीय स्तर पर मनाने की सार्वजनिक प्रतिज्ञा लेकर युवकों ने युवक जागृति प्रेरक, विश्व शान्ति प्रणेता जैनाचार्य श्री गुणरत्नसूरीश्वरजी म. सा. को पुनः सम्मेलन आयोजित करने की अपील की।

भगवान महावीर स्वामीजी की कर्म भूमि में व्यसनों के अधीन होकर निस्तेज व सत्वहीन हो रही युवापीढी को तीन दिन का व्यवहारिक प्रशिक्षण देकर, बुरे व्यसनों के विरूद्ध जबरदस्त सामाजिक चेतना पैदा करने का प्रयास जैनाचार्य एवं उनके शिष्यों ने किया।

आत्म शान्ति के लिये आध्यात्मिक मन्त्रजाप के प्रेरक जैनाचार्य श्री गुणरत्नसूरीश्वरजी म. सा. की प्रेरणा व पावन निश्रा में राजस्थान प्रान्त के जैन युवाओं का प्रथम सम्मेलन ६,७,८ नवम्बर १९९२ को श्री बामणवाड़जी में आयोजित किया गया।

द्वितीय सम्मेलन जून ९३ में आचार्यश्री की निश्रा में आयोजित करने का निर्माण किया गया। २५० युवकों के इस सम्मेलन के उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि - श्री आणंदजी कल्याणजी पेढी के अध्यक्ष - सेठ श्री श्रेणिकभाई कस्तुरभाई, विशेष अतिथि बाली क्षेत्र के विधायक - श्री अमृत परमार एवं समापन समारोह में मुख्य अतिथि-राजस्थान के विधि मंत्री - श्री शांतिलाल चपलोत, अजमेर से सांसद - प्रो. श्री रासासिंह रावत, उदयपुर के भूतपूर्व सांसद श्रीमान् गुलाबचन्द कटारिया, विधायका श्रीमति तारा भंडारी सहित सभी विद्वान वक्ताओं ने इस प्रयास की सराहना की।

सांथु में सम्पन्न विविध आराधनाऐं

सांथु : प. पू. आचार्य श्री जयन्तसेनसूरीश्वरजी के आज्ञानुवर्ती पू. मुनिराजश्री केवलविजयजी, जयानंदविजयजी, सम्यगरत्नविजयजी, हरिश्चंद्रविजयजी आदि ठाणा एवं साध्वीजी श्री कोमललताश्रीजी, शासनलताश्रीजी आदि ठाणा के चातुर्मास से नगर में अभूतपूर्व धर्मजागृति आयी है। प्रतिदिन व्याख्यान में अभिधान राजेन्द्र कोष में गिहिधम्म शब्द एवं मुनिराज श्री जयानंदविजयजी द्वारा संयोजित चक्कवट्टीस्स कहा (श्री द्वादश चक्रवर्ती चरित्र) पर व्याख्यान में अच्छी उपस्थिति रही। श्री नवकार, पर्युषण महापर्व, चौसठ प्रहरी पौषधादि चातुर्मासिक आराधना, नवपदजी ओली, अट्ठारह अभिषेक, भक्तामर पूजन, ३५ छोड़ का उद्यापन, वृहत शांतिस्नात्र आदि कई तप अनुष्ठान सानन्द सम्पन्न हुए। पुद्गल वोसिराने की विधि में ६० आराधकों ने भाग लिया। शा. धरमचंदजी सोकलाजी ने बारह व्रत एवं नाहर

पोलचंदजी भालाजी, शा. पुखराजजी उकाजी शा. कन्हैयालालजी वजाजी, मुथा गजराजजी रतनाजी, शा. पूनमचंदजी केसाजी ने आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत अंगीकार किया।

भीनमाल से आबु तीर्थ छः 'रि' पालित संघ

भीनमाल : शा सोहनराजजी हीराजी गांधीमुथा के सौजन्य से पू. मुनिराज श्री जयानंदविजयजी की निश्रा में भीनमाल से आबु तीर्थ का छ 'रि' पालित संघ १२ दिसम्बर को प्रस्थित होगा। २५ दिसम्बर को आबु तीर्थ में संघ माला सम्पन्न होगी।

बम्बई में गो हत्या एवं कत्लखानों के विरोध में मोर्चा

बम्बई : देशभर में हो रही गोवंश हत्या एवं बम्बई शहर व उपनगरों में स्थान-स्थान पर बढ़ती कत्लखानों की संख्या के विरोध में पांच हजार नागरिकों ने आजाद मैदान से सचिवालय तक २ नवम्बर को एक विशाल मोर्चा निकाला। एक प्रतिनिधि मंडल ने मुख्यमंत्री - श्री नाईक से मुलाकात कर एक ज्ञापन दिया जिसमें गोवंश एवं पशुओं की हत्याओं से होनेवाले खतरों की ओर ध्यान दिलाया गया। ज्ञापन में यह चिंता जतायी गयी कि पशुओं की बेलगाम हत्या यदि समय रहते नहीं रोकी गयी तो २०१५ तक हमें वन के पशुओं के दर्शन भी दुर्लभ हो जायेंगे। अखिल भारतीय अहिंसा प्रचार समिती के तत्वावधान में आयोजित इस मोर्चे में कई संस्थाओं का सहयोग था। समिति के संयोजक श्री वसनजी लखमशी शाह थे। दिनशा वाछा मार्ग पर जाकर यह मोर्चा सभा में परिवर्तित हो गया। सभा को पूज्य आचार्य श्री कलाप्रभसागरसूरीश्वरजी, पन्यासजी श्री चन्द्राननसागरजी, श्री गुमानमलजी लोढा (सांसद), श्री श्याम मनोहरजी महाराज (वैष्णव पुष्टीय मार्गीय आचार्य), श्री मोहन रावते (सांसद), श्री प्रकाश मेहता (विधायक), श्री राजपुरोहित (विधायक), श्री भुपेन्द्र दोषी, श्री बाबुभाई भवानजी, श्री पुरूषोत्तमजी महाराज, श्री केसरीमलजी मालेगाम वाले, श्री दशरथभाई ठाकर, रंजनाबेन पारेख, श्रीमति चंद्रकांता गोयल, श्री झमरीलाल (दिल्ली) ने सम्बोधित कर सभी ने एक आवाज से पशु हत्या को प्रजा विरूद्ध कार्य बताते हुए सरकार को पशुहत्या बंद करने की चेतावनी दी। सभी धर्म परस्पर पोषण के आधार पर अहिंसा में विश्वास करते हैं। वर्तमान में पशुओं पर जुल्म मानवता पर कलंक है। देवनार कत्लखाने में सभी कानूनों को ताक में रखकर की जानेवाली पशुहत्याओं की चर्चा भी जोरों से हुयी। गच्छाधिपति आचार्यदेव वयोवृद्ध श्री दर्शनासागरसूरीश्वरजी, श्री. नित्योदयसागरसूरीश्वरजी भी पधारे थे। सभा का सफल संचालन श्री युवराज जैन ने किया।

भारत के इतिहास में एक विरल आध्यात्मिक घटना
सुरत में श्री महाविदेह तीर्थ धाम प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव

दादा भगवान प्रेरित सर्वधर्म मंदिर संकुल श्री महाविदेह तीर्थधाम कामरेज चार रास्ता सुरत के पास नेशनल हायवे नं. ८ पर आकार ले रहा है। जिसमें जैन, वैष्णव, शिव पंथी एक ही स्थल पर प्रार्थना कर सकेंगे। इस निष्पपक्षपाती मंदिर के बीच में विशाल मंदिर में महाविदेह क्षेत्र में विचर रहे वर्तमान तीर्थकर श्री सिमंधर स्वामीजी की बारह फुट एक इंच की सत्तावीस टन के वजन वाली श्वेत आरस की नयनरम्य प्रतिमाजी विराजमान होगी। श्री भगवान महावीर, पार्श्वनाथ, अजितनाथ एवं ऋषभदेव की प्रतिमायें भी विराजित की

जावेगी। श्री पद्मावती माताजी, अंबाजी आदि देव-देवियों की मूर्ति स्थापित की जायेगी। एक सौ दस फुट की उंचाई वाले भव्य त्रिशिखरी मंदिर का कार्य पिछले ६ वर्षों से निरन्तर चल रहा है। अब तक निर्माण कार्य में लगभग चौवीसहजार टन आरस का उपयोग हो चुका है। आसपास के मंदिरों में शिव, कृष्ण आदि की प्रतिमायें स्थापित की जायेंगी। जैन मंदिर की अंजनशलाका प्रतिष्ठा प.पू. राष्ट्रसंत आचार्यदेव श्री जयन्तसेनसूरीश्वरजी की निश्रा में एवं श्री शिव-कृष्ण मंदिर की प्रतिष्ठा वेदान्ताचार्य पू. नरेशचन्द्र उपाध्याय के द्वारा होगी।

प्रतिष्ठोत्सव २५-११-९२ से प्रारंभ होकर प्राण प्रतिष्ठा ३०-११-९२ को सम्पन्न होगी। इस निमित्त दि. २५-११-९२ को सुरत से प्रातः ७ बजे भव्य शोभायात्रा का आयोजन हुआ दोपहर एक बजे श्री महाविदेह तीर्थधाम पहुंची। श्री जय सच्चिदानंद के तत्वावधान में प्राण प्रतिष्ठा की तैयारियाँ पिछले डेढ़ वर्षों से चल रही है। इस पावन प्रसंग पर अमेरिका, कनाडा, लंडन, अफ्रिका, गुजरात, महाराष्ट्र आदि प्रदेशों से हजारों की संख्या में भाविकों के पधारने की संभावना है।

सात करोड़ रूपये के खर्चे से बने इस संकुल की विशेषता है कि इसके दान के लिये ट्रस्ट ने कोई जाहिर विज्ञाप्ति नहीं दी एवं न ही मंदिर, धर्मशाला, भोजनशाला आदि में किसी भी दानदाताओं के नामों को अंकित किया गया है।

इस अवसर आचार्यश्री द्वारा रचित स्तवनों की कैसेट 'श्री सिमंधर जिन वंदना' ऑडियो केसेट प्रकाशित की जायेगी।

परिषद का स्थापना दिवस मनाया

नीमच : पूज्य गुरूदेव श्रीमद विजययतीन्द्रसूरीश्वरजी म. सा. द्वारा स्थापित एवं राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजयजयन्तसेनसूरीश्वरजी म. सा. के मार्गदर्शन में सतत् प्रगतिशील संस्था का स्थापना दिवस (कार्तिक पूर्णिमा) दि. १०.११.९२ को परिषद शाखा - नीमच द्वारा प्रभात फेरी, ध्वजवंदन, प्रार्थना एवं मिठाई वितरण के कार्यक्रम के साथ सम्पन्न हुआ।

चार्तुमास की सानन्द समाप्ति पर श्री संघ नीमच द्वारा देव वंदन, दिशीवंदन एवं नवाणुप्रकारी पूजन का आयोजन के साथ स्वामीवात्सल्य का कार्यक्रम सानन्द सम्पन्न हुआ।

तीर्थ के दर्शन से कर्म की निर्जरा होती है - श्री जे. के. संघवी

नीमच : तीर्थों की यात्रा करने और तीर्थ मे विराजित तीर्थंकर देव की पूजा, आराधना एवं दर्शन से कर्म की निर्जरा होती है आपकी यात्रा सफल हो ऐसी शुभ भावना-प्रकट करता हूँ यह उद्वोधन श्री जे. के. संघवी (सम्पादक शाश्वत धर्म) ने आहोर नगर में अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद एवं महिला परिषद द्वारा आयोजित श्री राणकपुर, नाकोड़ा, भाण्डवपुर आदि की तीर्थ यात्रा एवं सशैक्षणिक पर्यटक बस यात्रियों के समक्ष प्रकट किये। श्री सी. बी. भगत सा. (पूर्व केन्द्रीय महामंत्री) ने भी शुभ भावना प्रकट की।

श्री भाण्डवपुर के प्रांगण में श्री भँवरलालजी छाजेड़ (महामंत्री) अ. भा. त्रिस्तुतिक श्री संघ की अध्यक्षता एवं श्री राजमलजी डूंगरवाल के मुख्य अतिथ्य में ज्ञान शिविर का आयोजन कर धार्मिक शिक्षा का महत्व पूजा अर्चना एवं क्रिया की सही विधि का ज्ञान कराया गया।

— प्रेषक : पारसमल सेठिया - नीमच

परिषद के प्रांगण से

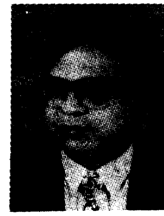

अध्यक्ष की ओर से

आदरणीय परिषद बंधुओं!

आगामी मास ३१ दिसम्बर को विश्व पूज्य गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरिश्वरजी महाराज की जयंति का आयोजन लाखों गुरुभक्तों द्वारा पूरे देश में विभिन्न कार्यक्रमों के साथ किया जाएगा। इस अवसर पर गुरुदेव के उपदेशों को जीवन में उतारने की प्रतिज्ञा अंगीकार करना हम सभी का कर्तव्य है। आयोजनों में मात्र दिखावा तथा आडम्बर होने पर मूल उद्देश्य की दिशा में भटकाव आता है। जो भी आयोजन हम करें वे गुरुदेव के प्रति सच्ची आस्था के साथ उनके जीवन के उच्चादर्शों तथा उपदेशों के अनुरूप होना आवश्यक है।

पूज्य गुरुदेव के वर्तमान पट्टादित्य पूज्य राष्ट्रसंत वर्तमानाचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी महाराज अपने उपदेशों में निरंतर सेवा तथा कर्तव्य को अपनाने पर बल देते रहे हैं। परिषद के गत सुरत अधिवेशन में भी उन्होंने परिषद साथियों से अपील की थी कि वे अपने जीवन में सेवा भावना का विकास करें तथा कर्तव्य को प्राथमिकता दें। जो स्वयंसेवक सेवा भावना से अपने कर्तव्य पथ पर अग्रसर है, उसे कुछ भी समझाने की जरुरत नहीं है। वह विनम्रता के साथ निरंतर अपना कार्य करता जाता है। हमें पूज्य वर्तमानाचार्य श्री के उपदेशों के अनुसार परिषद को अग्रगामी करना है। अतएव परिषद के साथी आगामी गुरु जयंति पर सेवा, तप तथा कर्तव्य को सम्पूर्त करने के लिए कोई न कोई संकल्प अवश्य ले। साथ ही शाखाएं अपनी प्रवृत्तियों में सेवा की गतिविधि को स्थान देकर उसका प्रारंभ करें। प्रत्येक शाखा परिषद सेवा के किसी संकल्प को हाथ में लेकर उसकी प्रयोजना अभी से तैयार करे ताकि गुरू जयंति पर उसका आकार सामने आ सके।

परिषद के रूप में उभरा हमारा विशाल संगठन सेवा को मूलमंत्र मान रहा है। आज के युवा वर्ग में पर्याप्त क्षमता व योग्यता है वह इसके उपयोग से समाज को समुन्नत बना सकता है। परिषद शाखाओं के माध्यम से युवा वर्ग ने अपनी गतिशीलता का श्रेष्ठ परिचय दिया है। इसी तारतम्य में हमें प्रगति के अगले कदम की ओर बढना है। कमजोर वर्ग तथा निस्सहाय की सेवा पुण्य कार्य हैं। हम दूसरों के दुःख में भागीदार हो सके, यही संवेदनशीलता हमें सेवा के लिए प्रेरित करती है। दूसरों के दुःख की अनुभूति हममें होते ही हमारा हृदय दयार्द हो जाता है। जो दूसरे के दुःख में प्रसन्न होते हैं वे मानव नहीं है। मानव उसे ही कहा जा सकता है जो मानवीय गुणों से भरा हुआ होता है। सेवा मानवता के निकट ले जाती है। जैन संस्कृति ने मानवता के भी व्यापक स्वरूप को ग्रहण कर अपनी अहिंसा की सीमा प्राणीमात्र तक फैलाई है। सेवा को अपनाने पर हमारे हृदय में लोच आता है और हमें अहिंसा का आराधक बना देता है।

आशा है परिषद शाखाएं सेवा के प्रकल्पों को तैयार कर आगामी गुरू जयंति को पूज्य राष्ट्रसंत श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी महाराज की प्रेरणानुसार सेवा के महायज्ञ में अपनी आहुति देगी।

सेवन्तीभाई एम. मोरखिया
अध्यक्ष
अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद

परीक्षार्थी सूची जनवरी में बनेगी

श्री यतीन्द्र-जयंत ज्ञानपीठ के अधिष्ठाता श्री सुरेन्द्रजी लोढा सूचित करते हैं कि ज्ञानपीठ द्वारा प्रारंभ की जानेवाली धार्मिक परीक्षाएं इसी वर्ष आयोजित की जा रही है। इन परीक्षाओं में प्रविष्ठ होनेवाले छात्रों की सूचियां जनवरी ९३ में स्थानीय स्तर पर तैयार की जाएंगी। जहाँ पंद्रह या इससे अधिक परीक्षार्थी होंगे परीक्षा केन्द्र स्थान स्थापित किये जाएंगे। कई पाठशालाओं में परिषद पाठ्यक्रम लागु किया जा चुका है अन्य स्थानों पर भी लागु हो रहा है।

पाठ्यपुस्तकों के मूल्य में रियायत

राष्ट्रसंत वर्तमानाचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी महाराज के आदेश से श्रीमद् यतीन्द्र-जयंत ज्ञानपीठ द्वारा संचालित धार्मिक परीक्षाओं के लिए प्रकाशित पाठ्यक्रम भाग १ व २ के मूल्य में इस वर्ष पचास प्रतिशत की रियायत घोषित की गई है। यह रियायत उन परिषद शाखाओं को प्राप्त हो सकेगी जो एक साथ पन्द्रह या इससे अधिक संख्या में पुस्तकें क्रय करेगी। इन पुस्तकों का लागत मूल्य पन्द्रह रूपये है। यही राशि मूल्य के रूप में निर्धारित है किन्तु पहले वर्ष में धार्मिक शिक्षा को प्रोत्साहन देने के लिए पन्द्रह या इससे अधिक संख्या में पुस्तके क्रय करने पर यह साढ़े सात रूपये प्रति पुस्तक के मूल्य में प्राप्त हो सकेगी। परिषद शाखाएं अधिकाधिक लाभ उठाएं।

स्थानिय शिबिर लगेगा

इंदौर : परिषद शाखा इंदौर ने निर्णय किया है कि केन्द्रीय कार्यालय के परिपत्र अनुसार शीघ्र ही इंदौर के परिषद भाईयों का स्थानीय शिविर लगाया जाएगा। यह सूचना देते हुए शाखाध्यक्ष श्री यशवंतजी बोराणा ने बताया कि ज्ञानपीठ द्वारा संचालित परिक्षा में अच्छी संख्या में छात्र बिठाए जाएंगे।

सम्बद्धता शुल्क भेंजे

राष्ट्रीय महामंत्री श्री सुरेन्द्र लोढा सूचित करते हैं कि जिन परिषद शाखाओं ने अभी तक इस वर्ष का सम्बध्दता शुल्क नहीं भिजवाया है, वे तत्काल भेंजे ताकि उन्हें मान्यता प्रमाण पत्र भेजे जा सकें। जिन शाखाओं का सम्बद्धता शुल्क जमा नहीं होगा, उनके नामों पर इस वर्ष दिए जाने वाले पुरस्कारों हेतु विचार करना संभव नहीं होगा। अतएव सम्बन्धित शाखाएं तत्काल सम्बद्धता शुल्क भेंजे।

जैन समाज सेवा में सदैव अग्रणी

रतलाम : जैन समाज सदैव सेवा के क्षेत्र में अग्रणी रहा है। शासन की जनहितेषी योजनाओं को क्रियान्वित करने की दिशा में समाज भविष्य में भी पूरा सहयोग करता रहेगा।

उक्त आशय के विचार कलेक्टर श्री विनोद सेमवाल ने अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद शाखा रतलाम के तत्वावधान में आयोजित स्वागत समारोह में व्यक्त किए। इस अवसर पर शासन की दत्तक पुत्री योजना को साकार रूप देने के लिए जैन समाज की सभी संस्थाओं से सहयोग देने की अपील की है।

समारोह के विशेष अतिथि पुलिस अधिक्षक श्री प्रदीप रूनवाल ने दत्तक पुत्री योजना के बारे में विस्तृत जानकारी दी। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के उपाध्यक्ष समाज सेवी श्री चैतन्यकुमारजी काश्यप ने परिषद के भावी कार्यक्रमों की रूपरेखा प्रस्तुत की।

प्रारंभ में अतिथियों ने श्री राजेन्द्रसूरिजी म. सा. की तस्वीर को माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया इस अवसर पर बाल परिषद की नन्हीं बालिकाओं ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। संचालन श्री विनोदजी संघवी ने किया तथा अंत में संस्था के अध्यक्ष श्री ओ. सी. जैन ने आभार व्यक्त किया।

समाचार - सार

गुंटुर - श्री राजेन्द्रसूरि जैन सेवा समिती के द्वारा नैत्र शिविर २५-९-९२ से २-१०-९२ तक आयोजित किया जिसमें ९८४ लोगों के नैत्र परिक्षण कर १५३ आपरेशन किए। समापन समारोह में पुलिस सुपरिटेंडेंट श्री. आर. पी. मीनाजी मुख्य अतिथि थे।

कामशेत - श्री नेमीनाथ जैन टेम्पल ट्रस्ट की ओर से प्रति वर्षानुसार इस वर्ष भी सामूहिक आयंबिल तपस्या कराई गई।

वलवण (लोनावला) - श्री संघ की तरफ से पाबल शिर्डी यात्रा संघ का आयोजन रखा गया।

द्राक्षाराम - पू. आ. श्री वारिषेणसूरि म.सा. की शुभ निश्रा में नवपद ओली की आराधना बड़े हर्ष एवं उल्लास के साथ सम्पन्न हुई। तपस्वियों के पारणे का लाभ श्री रमेशकुमार सपनराजजी ने लिया।

नागदा जंक्शन (म. प्र.) - अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के भूतपूर्व महामंत्री - श्री बाबुलालजी बोहरा की बहन श्रीमति प्रभा फूलचंदजी भंडारी एवं भाणेज कु. संगीता रमेशचंद्रजी कांकरिया के ३१ उपवास (मास क्षमण) की तपस्या निर्विघ्न सम्पन्न हुई। तपस्या निमित्त शोभायात्रा, स्वामिभक्ति का आयोजन किया गया एवं जैन कालोनी स्थित निर्माणाधिन श्री राजेन्द्र सूरि जैन ज्ञान मंदिर एवं श्री शांतिनाथ जैन मन्दिर में श्री सिद्धचक्र पूजन एवं गुरू पूजन स्थानीय श्री महावीर मंडल द्वारा पढ़ायी गई।

हैदराबाद (आ. प्र.) - हैदराबाद से श्री सम्मेतशिखरजी यात्रार्थ गए संघ का आगमन १-१०-९२ को हुआ। इस निमित्त श्री संघ की ओर से यात्रियों को श्री शिखरजी की फोटो भेंट कर अभिनन्दन किया गया एवं स्वामीवात्सल्य का आयोजन शा. चुनीलालजी केशरीमलजी सकलेचा परिवार की ओर से किया गया।

जोधपुर - श्री शांतिनाथ जैन श्वेताम्बर श्री संघ द्वारा पू. मुनिश्री नरेन्द्रविजयजी म. सा. आदि ठाणा की निश्रा में दर्शन-ज्ञान चारित्र की आराधना निमित्त त्रिदिवसीय मंगल महोत्सव का आयोजन (१७-१०-९२ से १९-१०-९२) तक विविध धार्मिक अनुष्ठानों के साथ सानन्द सम्पन्न हुआ।

काकीनाड़ा - पू. मुनि श्री दिव्यरत्नविजयजी म. सा. आदि ठाणा की निश्रा में स्थानीय श्री नेमिनाथ जैन श्वेताम्बर आराधना भवन में श्री संघ काकीनाड़ा द्वारा प्रथम बार आंध्र प्रदेशीय युगल शिबिर एवं युवा सम्मेलन का आयोजन (दि. ५-११-९२ से ८-११-९२) किया गया शिबिर का संचालन - श्री कुमारपालभाई वी. शाह द्वारा किया गया। पू. मुनिश्री की निश्रा एवं प्रेरणा से चातुर्मास काल में अनुकंपादान के अन्तर्गत अन्नदान, वस्त्रदान, मिठाई आदि वस्तुओं का वितरण किया गया।

थाने - पू. आचार्य श्री राजयशसूरीश्वरजी की आज्ञानुवर्तिनी पू. तपस्वी साध्वीश्री सुधांशुयशाश्रीजी आदि ठाणा की निश्रा में बहनों व बालकों की रविवारीय आध्यात्मिक ज्ञान शिबिर में क्रमशः प्रथम कु. संगीता जे. संघवी व झंखना शाह; आरती स्पर्धा में प्रथम-प्रसन्नबेन जैन व भक्तामर स्पर्धा में प्रथम - कु. दिव्या मेहता रही।

बैंगलोर - पू. मुनिराज श्री अरूणविजयजी म. सा. की निश्रा में सैंकडों युवकों ने नोनवेज (मांसाहारी) हॉटिलों में पैर नहीं रखने की प्रतिज्ञा ली। मुनिश्री की निश्रा में १९ व २० सितम्बर को शाकाहार प्रचार सम्मेलन आयोजित किया गया था। जिसमें विविध प्रतियोगिताओं, प्रदर्शनियों एवं सेमिनार द्वारा

शाकाहार को उत्तम आहार के रूप में प्ररूपित किया गया।

सादड़ी - पू. आचार्य श्रीमद्‌विजय इन्द्रदिन्न सूरीश्वरजी म. सा. का ७० वां पावन जन्म दिवस समारोह पूर्वक सानन्द मनाया गया। इस अवसर पर विभिन्न विशिष्ठ व्यक्तियों का स्वागत भी किया गया।

बैंगलोर - श्री आहोर जैन प्रवासी संघ का दीपावली स्नेह सम्मेलन एवं कन्नड़ राज्योत्सव का कार्यक्रम आयोजित किया गया इस अवसर पर मनोरंजन हेतू विभिन्न प्रकार के खेल कूद के कार्यक्रम आयोजित किये गए विजेताओं को पुरस्कार वितरण किया जाकर प्रोत्साहित किया गया कार्यक्रम का संचालन श्रीदेवकुमार के. जैन, रमेशकुमार जैन एवं तेजराजजी जैन द्वारा किया गया।

पू. साध्वी श्री मुक्तिश्रीजी म. सा. के चातुर्मास काल के समाप्त होने के उपलक्ष में श्री संभवनाथ जैन मन्दिर दादावाड़ी में बिदाई समारोह का आयोजन श्री श्रवणबेलगोला के श्री चारूकीर्ति भट्टारकजी की अध्यक्षता में किया गया। स्थानीय महिला मंडल एवं बालिका मंडल की ओर से सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गए।

हुबली - राजस्थान युथ फेडरेशन की प्रथम वर्षगांठ के उपलक्ष में ठण्डे पानी की प्याऊ हेतु भूमि पूजन का आयोजन स्व. श्री कन्हैयालालजी तोलाजी जैन की स्मृति में पू. पं. श्री विचक्षण मुनिजी म. सा. की निश्रा में श्री के. श्यामराव (सचिव लोकशिक्षण ट्रस्ट बैंगलोर) के कर-कमलों द्वारा १३ नवम्बर को किया गया।

भुज (कच्छ) - पू. श्री नरसिंहजीस्वामी आदि श्रमण-श्रमणीयों की निश्रा में दि भुज इंग्लिश स्कुल का रजतजयंती समारोह एवं स्कुल ट्रस्ट का नया नामकरण पू. जैनाचार्य श्री अजरामरजी विद्याधाम किए जाने हेतू एक समारोह २२ नवम्बर को आयोजित किया गया।

गुन्टुर - आंध्रप्रदेश सरकार ने सभी ग्राम पंचायतों को आदेश दिया है कि आवारा पशुओं को वध करनेवालों को न बेचें यदि कोई खरीदार नहीं मिले तो गौशालाओं को सुपुर्द किया जाए।

आगामी वर्ष ९३ में १४ जनवरी से ३० जनवरी तक देशभर में प्राणिकल्याण पखवाड़ा मनाया जाएगा।

आंध्र प्रदेश में महिलाओं ने नशाबंदी के लिये आन्दोलन शुरू किया है जिसके फलस्वरुप शराब की कई दुकाने बंद हो गई है। महिला आन्दोलन के साथ ही अन्य कई संस्थाए भी शराब के विरूद्ध रैलियाँ निकाल रही है। आशा है कुछ ही महिनों में शराब की विक्री पर पाबन्दी लगा दी जाएगी।

हुबली - कर्नाटक राज्योत्सव के दिन १ नवम्बर को राजस्थान युथ फेडरेशन के अध्यक्ष श्री महेन्द्र एच. सिंघी का अभिनन्दन महानगर पालिका के महापौर श्री वी. एस. पाटील के कर-कमलों द्वारा जगदगुरू राजयोगेन्द्र महास्वामीजी के सानिध्य में किया गया।

जीरावलातीर्थ - पू. आ. श्री सुशिलसूरीश्वरजी आदि ठाणा की निश्रा में श्री जीरावाला पार्श्वनाथ तीर्थ पर पौष दशमी के अट्ठम व भव्यमेला सह पंचान्हिका महोत्सव का आयोजन विविध पूजन एवं अन्य धार्मिक कार्यक्रमों के साथ दि. १७-१२-९२ से २१-१२-९२ तक शा. शांतिलाल वजाजी बामणिया परिवार सिल्दर (राज.), (फर्म - विशाल टिम्बर्स, पुणे) की ओर से किया जाएगा।

पिंडवाड़ा - पू. आ. श्री गुणरत्नसागरजी म. सा आदि ठाणा की निश्रा में ४३ उपवास एवं ८०

भाई-बहनों द्वारा की गई धर्म चक्र की कठोर तपश्चर्या के समापन समारोह पर धर्म चक्र रथ यात्रा का आयोजन किया गया। विश्वशांति एवं आत्मशांति हेतु ९ दिन तक आयंबिल तप एवं विभिन्न गांवों नगरों के लगभग ५५० आराधकों ने ९९ लाख आध्यात्मिक मंत्र का जाप किया।

भद्रेश्वर तीर्थ - समस्त पांचसोह वोरा परिवार का प्रथम स्नेह सम्मेलन श्री भद्रेश्वर तीर्थ पर १४ व १५ नवम्बर को आयोजित किया गया।

जयपुर - महासतीजी डॉ. मंजुश्रीजी लिखित शोध ग्रंथ 'जैनदर्शन और कबीर: एक तुलनात्मक अध्ययन' एवं भजन संग्रह 'आस्था के स्वर' का विमोचन १ नवम्बर को हुआ।

रामसर - मुनि श्री मनोज्ञसागरजी आदि ठाणा की प्रेरणा से ब्रह्मक्षत्रिय समाज (खत्री) के लोगों ने आजीवन शराब मांस छोड़ने की प्रतिज्ञा ली। चातुर्मास दौरान कई अजैन बंधुओं ने दुर्व्यसनों का त्याग किया हैं।

जोगेश्वरी - वम्वई - स्थानीय शाखा परिषद द्वारा नव वर्ष के उपलक्ष में विमला लेप्रसी (कोढ़ी) हॉस्पिटल के रोगियों एवं अविकसित (मंद बुद्धि) बच्चों को फलों का वितरण किया गया।

बड़वाह - श्री स्थानकवासी सम्प्रदाय के पूज्य श्री सौभाग्यमलजी म. सा. की आज्ञानुवर्ती साध्वी श्री कंचनश्रीजी म. सा. की सुशिष्या साध्वी श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म. सा. द्वारा किये गए १२६ उपवास का पारणा दि. १६.११.९२ को उज्जैन में सानन्द सम्पन्न हुआ।

प्रेषक: श्री अशोकजी श्री श्रीमाल

काकीनाड़ा - पू. आ. श्री भुवनभानुसूरिजी म. सा. के आज्ञानुवर्ती मुनिराज श्री दिव्यरत्नविजयजी म. सा. आदि ठाणा की निश्रा में काकीनाड़ा में प्रथम बार उपधान तप का आयोजन दि. २८-११-९२ से श्री राजस्थान आयर्न कम्पनी एवं शा. केशरीमल मंछालाल के सहयोग द्वारा किया गया।

अमृतसर - स्थानवासी समुदाय के पू. गुरूदेव श्री चौथमलजी म. सा. की ११५ वी जन्म-जयंती निमित्त पू. प्रवर्तक गुरूदेव श्रीरमेशमुनिजी म. सा. के सुशिष्य मुनि श्री कमलमुनिजी म. सा. 'कमलेश' आदि ठाणा के सानिध्य में नवान्हिका महोत्सव दि. ३१-१०-९२ को मनाया गया।

अशोकनगर (म. प्र.) - पू. दिगम्बराचार्य श्री विद्यासागरजी म. सा. आदि मुनिमंडल की निश्रा में श्री दिगम्बर जैन पंचायत एवं सकल दि. जैन समाज द्वारा श्री मज्जिनेन्द्र त्रिकाल चौबीसी पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं सप्त गजरथ महोत्सव का आयोजन (२६-११-९२ से २-१२-९२) तक किया गया है।

सादड़ी (राज.) - पू. आचार्य श्री विजय इन्द्रदिन्नसूरिजी म. सा. के सानिध्य में दि. ४ दिसम्बर को श्री विजयवल्लभ जनरल हॉस्पिटल एवं गुरूवल्लभ प्रतिमा की स्थापना का कार्यक्रम सादड़ी निवासी श्रीमति जतनोबाई करमचंदजी रतनपरिया चौहान परिवार की ओर से किया गया। इस अवसर पर ६ दिवसीय विविध धार्मिक कार्यक्रम आयोजित किए गए।

भांडवपूर तीर्थ - सायला निवासी शा. प्रतापचंदजी नवाजी की ओर से मगसर सुदि ६ से उपधान तप आराधना प्रारंभ हो रही है। माला परिधान माघ वदि ९ को होगा।

केशवणा - मुनि मोहनलालजी म. सा. की समुदायवर्तिनी साध्वीजी श्री उद्योतश्रीजी म. सा. की शिष्या-प्रशिष्या विनय-सूर्य-पूण्य

हर्षलताश्रीजी आदि ठाणा ८ के चातुर्मास में विविध तपस्याओं एवं अनुष्ठानों का ठाठ रहा। व्याख्यानवाणी से लोगों में अभूतपूर्व धर्म जागृति की लहर आ गयी। साध्वीजी प्राविण्यलताश्रीजी, कारूण्यलताश्रीजी, धारिण्यलताश्रीजी के श्रेणीतप एवं सौम्यप्रभाश्रीजी के अट्ठाई तप का पारणा कार्तिक सुदि ६ को हुआ। पारणे का लाभ शा. रामरतनजी नारायणदासजी छाजेड़ परिवार ने लिया। इस निमित्त अष्टान्हिका महोत्सव में पेंतालीस आगम महापूजन, सिद्धचक्र पूजन, भक्तामर पूजन एवं अट्ठारह अभिषेक सम्पन्न हुए।

तलेगांवदाभाड़े (पुणे) - फत्तापुरा निवासी स्व. श्रीमति सुमरीबाई के स्वर्गवास निमित्ते स्वामीवात्सल्य का आयोजन किया गया एवं पूजा पढायी गयी।

खडकी (पुणे) - सौ. जतनादेवी कुन्दनमलजी की भावना के अनुसार शिवगंज निवासी सिसोदिया शा. कुन्दनमलजी गमनाजी की ओर से सम्मेतशिखरजी आदि तीर्थों की यात्रा कर संघ दि. २८.१०.९२ को रवाना होकर १५-११-९२ को सानंद पहुंचा।

बम्बई - भारत जैन महामंडल का ४७ वाँ अधिवेशन दि. ५-६ एवं ७ दिसम्बर ९२ को दिल्ली में श्री रमेशचन्द्र जैन (पी. एस. जैन फाउन्डेशन) की अध्यक्षता में हो रहा है। मुख्य अतिथि के रूप में लोकसभा के स्पीकर श्री शीवराज पाटील उपस्थित रहेंगे।

अलीराजपुर - श्री आदिनाथ जैन श्वे. मन्दिर एवं श्री मल्लिनाथजी मंदिर पर ध्वजारोहण कार्यक्रम रतनलालजी टाण्डावाला परिवार द्वारा दिपावली के पावन दिवस पर सम्पन्न हुआ।

श्री लक्ष्मणीतीर्थ - कार्तिक सुदि १५ को श्री लक्ष्मणीतीर्थ का मेला श्री सिद्धाचलतीर्थ पट्ट के सामूहिकदर्शन वन्दन, भाता वितरण, पूजा, स्वामीवात्सल्य रात्री भक्तिभावना, गरबा, आरती आदि विविध कार्यक्रमों के साथ उल्लासपूर्वक सम्पन्न हुआ।

लोनावला - परिषद शाखा की बैठक में श्री वीरचंदजी जवेरचंदजी पालरेशा को श्रद्धांजली अर्पित की गयी। पू. आचार्य भगवंत श्रीमद् जयन्तसेन सूरीश्वरजी के फरवरी ९३ में लोनावला पधारने पर भव्य स्वागत एवं पंचान्हिका महोत्सव मनाने का निर्णय लिया गया।

विचारमंथन

अहिंसा के पुजारियों के समक्ष महत्वपूर्ण निवेदन : हैद्राबाद के पास रूद्रारम में अलकबीर द्वारा जंगी कत्लाखाना बनने जा रहा है, जिसमें ८० लाख जीव प्रतिवर्ष कटेंगे। भिवंडी में लोक शक्ति के आगे सरकार झुक गयी और वहाँ यह योजना निरस्त कर अब आंध्रप्रदेश में कार्यान्वित होने जा रही है। उसे रोकना हम सभी का कर्तव्य है। यह प्रश्न मात्र आंध्रप्रदेश का नहीं बल्कि अहिंसा में विश्वास रखनेवाले प्रत्येक व्यक्ति का है। यह योजना निरस्त न हो तब तक प्राणार्पण कर भी सरकार को बाध्य करने हेतु सभी अहिंसक समाज से विनंती करता है।

- रंघुनाथमल (अहिंसा प्रेमी) १८-५-५०८-३ फीलखाना-हैदराबाद

शोक श्रद्धांजली

"काव्य - भूषण मिश्रिमल जैन का निधन"

श्रद्धेय श्री मिश्रिमल जैन वकील काव्य भूषण का निधन कुक्षी में दि. ६.१०.१९९२ को हुआ।

जन्म स्थली जोबट से कर्म स्थली कुक्षी को बनानेवाले "काव्य भूषण" मिश्रिमल जैन ने कई रचनाएं एवं अनुवाद किए। १९०१ में जन्मे और जोबट मे ही प्रारम्भिक शिक्षा के बाद जोबट स्टेट में रेव्हेन्यु आफिसर के पद को आत्मसम्मान को ठेस लगने के कारण छोड़नेवाले इस व्यक्ति के बारे में कोई तो ठीक परिवार का व्यक्ति भी कल्पना नहीं कर सकता था कि इनके द्वारा इतनी रचनाएं हो सकेगी।

जोबट स्टेट से धार राज्य में आने पर इन्दौर से वकालात पास की एवं १९३३ से कुक्षी में राज्य के वकील के रूप में कार्य किया आप कुक्षी बार एसोसियन के सदस्य थे। अविवाहित रहकर बड़े भाई स्व. बाबुलाल जैन (वकील) एवं उनके परिवार के साथ रहते हुए पिछले ५५ वर्षों से साहित्य एवं समाज की सेवा करते रहे।

किशोरावस्था से स्वप्रेरित होकर काव्य लेखन किया "बाल सखा" में रचनाएं प्रकाशित हुई। घर पर ही उर्दू, फारसी भाषा का अध्ययन किया। काव्य एवं पिंगल शास्त्र पर स्वाध्याय से ही अधिकार प्राप्त किया। सन् १९३६-३७ मे काव्य भूषण की उपाधि से सम्मानित हुए।

गयाप्रसाद स्नेही एवं कुसुमाकरजी के साथ ही समकालीन कवियों द्वारा रचनाओं को प्रशंसा मिली। रचनाओं का मूल स्वर धर्म एवं समाज की कीर्ति वृद्धि के लिए समर्पित रहा।

धर्म संवंधी रचनाओं से मिले परिश्रमिक को स्वीकार न करते हुए शुभकार्यों हेतु अर्जित किया।

पुस्तकाकार मे सतरत्व रक्षा (खण्ड काव्य १९३६), भामा शाह (खण्ड काव्य १९५४) एवं त्याग मूर्ति (खंडमय वर्णन श्रीमदविजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी १९६७) हैं। श्री जिन गुणानुराकं कुलकं एवं रत्नाकर पच्चीसी हिन्दी काव्यानुवाद क्रमशः १९६७ एवं ८८ में प्रकाशित हुए।

रत्नाकर पच्चीसी के हिन्दी काव्यानुवाद के "आत्म निवेदन" शीर्षक से प्रकाशित

काव्य संग्रह प्रस्तावना (यत्किचिंत) श्रीमद जयंतसेनसूरिजी ने लिखी थी। श्रीमद राजेन्द्रसूरि शीर्षक से १९३७ मे पद्यबद्ध रचना का प्रकाशन अलीराजपुर से हुआ, इसकी दूसरी आवृत्ति १९८३ में प्रकाशित की गई।

वर्तमान में उनका स्वास्थ्य ठीक न होने से लेखन कार्य अवरूद्ध रहा, किन्तु स्मृति सतेज थीं। बड़े भाई के परिवार के साथ कुक्षी धान मण्डी में रहते हुए साहित्य चर्चा, धर्म चर्चा एवं समाजोनन्नति के कार्यों में सदैव उत्साह वर्धक, उत्साहपूर्वक सचेष्ट रहते थे।

- **पूना** - आहोर निवासी फोला मुथा जुगराजजी हरकचंदजी का ह्रदय गति रूक जाने से स्वर्गवास हो गया। सद्व्रत गुरूभक्त, हंसमुख एवं उदारमना व्यक्ति थे। आप अपने पिछे भरा परिवार छोड़ गए हैं।
- **भीलवाड़ा** - दिनकर संदेश के सम्पादक श्री दिनेश संचेती के अग्रज ३८ वर्षीय श्री बलवन्तसिंहजी संचेती का एक ट्रक दुर्घटना में असामायिक निधन २७ अक्टूबर को हो गया। भीलवाड़ा बीगोद माण्डलगढ़ आदि कई स्थानों पर शोकसभा आयोजित कर सद्गत को भावभीनी श्रद्धांजली अर्पित की गई।
- **रंभापुर** - श्री हीरालालजी रांका का स्वर्गवास कार्तिक पूर्णिमा के दिन ७२ वर्ष की आयु में हुआ।
- **आहोर** - शा. घेवरचंदजी जेठमलजी मुथा का स्वर्गवास दि. २१-११-९२ को मध्य रात्रि में हुआ। जीवन पर्यत आपने समाज की तन-मन व धन से सेवा की। आपके निधन से त्रिस्तुतिक जैन संघ ने एक गुरूभक्त व कर्मठ कार्यकर्ता खो दिया है, जिसकी पूर्ति निकट भविष्य में असंभव है।

बहु आयामी व्यक्तित्व के धनी एवं जैन दर्शन के मर्मज्ञ विद्वान श्री राजमलजी लोढ़ा

पं. मदनलालजी जोशी, शास्त्री

साधना की ओर निरन्तर गतिशील रहनेवाले साधक का व्यक्तित्व, जहां एक ओर साध्य की प्राप्ति की चिन्ता किये बिना अपनी सृजनशील प्रक्रिया में किसी प्रकार की न्यूनता अथवा शैथिल्य का समावेश नहीं होने देता, वही समर्पण की समग्र भावना

से अहर्निश चलनेवाला उसका यह अनुष्ठान उसके जीवन में जिस पौरूष की प्रतिष्ठा एवं अभिनव उर्जा का सजीव संचार करता है, एवं जिसके फलस्वरूप उसको जिस आनन्द की प्रेरणा प्रदान करनेवाली अनुभुति होती है, उसका आकलन या वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता। निस्सन्देह ऐसे व्यक्ति का व्यक्तित्व एकांगी न होकर बहुआयामी होता है। परिवार की सीमित परिधि में पलनेवाला उसका प्रारम्भिक जीवन, सामाजिक साहित्यिक सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं धार्मिक (आध्यात्मिक) सोपानों के विस्तृत आयामों को क्रमशः पार करते हुए अन्ततः अपने उस साध्य की प्राप्ति करवा ही लेता है, जिसके लिए वह "चरैवेति, चरैवेति" इस मन्त्रोच्चारण के साथ कविन्द्र रवीन्द्र की "एकला चलो रे" की भावना के अनुरूप किसी मंगलमय मूहूर्त में शुभ संकल्प लेता है।

जैन दर्शन के मर्मज्ञ विद्वान् बहुमुखी प्रतिभा तथा अप्रतिम व्यक्तित्व के धनी जैनरत्न पण्डित प्रवर श्री राजमलजी लोढ़ा ऐसे ही साधनाशील व्यक्तित्व एवं कर्मयोग के साकार स्वरूप थे। उनके प्रभावशील कृतित्व में उनके बहुआयामी व्यक्तित्व का प्रत्यक्ष दर्शन होता है। मात्र सात वर्ष की अल्पायु में ही जो माता-पिता के ममता भरे वात्सल्य एवं स्नेह भरे अपनत्व से वंचित हो गया हो, जिसने ऐसी असहाय एवं निराधार स्थिति में एकाकी ही कण्टकाकीर्ण पगडण्डी पर अपना लड़खड़ाता प्रथम पांव रखकर जीवन यात्रा आरम्भ करने का दुस्साहसभरा संकल्प किया हो और जो मार्ग में आने वाले अनेकानेक संघर्षों एवं व्यवधानों से जूझते हुए जीवन के आठ दशक में भी उपर के समय को पार करने में कभी भी विचलित न हुआ हो और अन्ततः जिसने अपने साध्य की उपलब्धि के साथ ही विश्राम लिया हो - उस व्यक्ति के असामान्य व्यक्तित्व एवं प्रभावोत्पादन कृतित्व को श्री राजमलजी लोढ़ा नाम दिया गया है।

मध्यप्रदेश में मालवांचल में स्थित पुरातन ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक नगर दशपुर (मन्दसौर) मे दिनांक २४ जुलाई १९१० को एक समृद्ध जैन परिवार में जन्म लेनेवाले श्री राजमलजी लोढ़ा ने अपना बचपन अनाथ अवस्था में प्राप्त किया। अपने एक छोटे भाई व एक बहिन के साथ नितान्त अभावों के मध्य येन, केन, प्रकारेण अपने जीवन यापन करनेवाले इस असहाय बालक का भविष्य धुंध की ओर लड़खड़ाता रहा। ऐसी विषम स्थिति में पूर्व के सुकृत कर्म एवं तज्जन्य पुरूषार्थ ही काम आता है, जिससे प्रेरित होकर उसकी डगमगाती जीवन नौका को सहारा देने वाली पतवार मिल ही जाती है। फलस्वरूप श्री राजमलजी लोढ़ा की प्रारम्भिक शिक्षा (मिडिल तक) तो मन्दसौर में ही हुई किन्तु इसके पश्चात उन्होंने इन्दौर, अजमेंर, बीकानेर एवं शिवपुरी में रहते हुए हिन्दी, अंग्रेजी आदि सामाजिक विषयों के साथ संस्कृत, प्राकृत का भी अध्ययन

किया। वे साहित्य व व्याकरण की विविध परीक्षाओं में उत्तीर्ण होने के साथ ही न्याय तीर्थ, जैन दर्शन में शास्त्री व साहित्य भूषण जैसी उच्च परिक्षाओं में सम्मिलित हुए। इनमें उन्होंने सफलता प्राप्त की। अपने अधिन विषयों में निष्णात होने के कारण उन दिनों अजमेर के ओसवाल जैन हाईस्कूल में आपको अध्यापन कार्य भी मिल गया। यहीं श्री राजमलजी लोढ़ा के विकास के चरण आगे बढ़ने आरम्भ हो गये।

अजमेर में अध्यापन कार्य करते हुए उन दिनों जैनदर्शन के उद्भट विद्वान् पं. श्री विद्याकुमारजी सेठी का सानिध्य उन्हें प्राप्त हुआ। अपनी विद्यार्थी अवस्था में जैन दर्शन के अध्ययन ने संस्कारों के सिच्चन का काम किया एवं निरन्तर इसी दिशा में चिन्तन एवं अभिरूचि बढ़ाते रहने के कारण एक दिन ऐसा आया कि श्री राजमलजी लोढ़ा की गणना जैनदर्शन के मर्मज्ञ विद्वानों में होने लगी। अध्ययन, अध्यापन एवं सतत् स्वाध्वाय ने आपको लेखन की ओर भी प्रवृत्त किया। लेखन एवं प्रकाशन भी प्रारम्भ किया, जो कुछ समय तक निरन्तर चलता रहा। इस रूप में आपकी प्रथम पुस्तक "धन्यकुमार" प्रकाशित हुई। अपने इस लेखन के फलस्वरूप श्री लोढ़ाजी ने छोटी बड़ी ३०-३५ पुस्तकों की रचना कर उनका विधिवत प्रकाशन भी किया। इसके अतिरिक्त आपने तत्वार्थ सूत्र का संस्कृत से हिन्दी में अनुवाद भी किया। धार्मिक पुस्तकों की रचना के साथ ही श्री राजमलजी लोढ़ा सामाजिक दृष्टि से भी अपने विचारों का उपयोग करते हुए उनसे समाज को नई दिशा देना चाहते थे। अपने इस संकल्प को क्रियान्वित करने के लिए आपने "जैन ध्वज" पत्र का प्रकाशन किया, जो आगे चलकर साप्ताहिक "ध्वज" और आज 'दैनिक ध्वज' के रूप में अपने जीवन के ५५ वर्ष पूर्ण कर चुका है। श्री राजमलजी लोढ़ा द्वारा संचालित दैनिक ध्वज मन्दसौर जिले का ही नहीं अपितु इंदौर को छोड़कर पूरे मालवाचंल का प्रमुख पत्र है। जो आज भी उनके पश्चात उनके सुपुत्र श्री पारसमल लोढ़ा एवं श्री सुरेन्द्र लोढ़ा के सम्पादन में विधिवत उसी रूप में यथावत प्रकाशित हो रहा है। इस प्रकार श्री राजमलजी लोढ़ा, जैन दर्शन के मर्मज्ञ विद्वान होने के साथ ही कुशल रचनाकार और लेखक तथा पत्रकार तो थे ही, एक चिन्तनशील निर्भिक वक्ता के रूप में भी प्रसिद्ध रहे। अपने क्षेत्र के साधनाशील वरिष्ठ पत्रकार के रूप में नागरिक अभीनंदन के साथ ही सन् १९६७ में मध्यप्रदेश के तत्कालिन मुख्यमंत्री पं. श्यामाचरण शुक्ल द्वारा आपको सम्मानित भी किया गया। इसके अतिरिक्त अजमेर, नीमच, मंदसौर, उज्जैन, जयपुर, नागपुर, अलिराजपुर आदि स्थानों के जेन समाज की ओर से एक से अधिक बार आपको सम्मानित कर अभिनन्दन - पत्र भेट किये गये।

यद्यपि पारिवारिक परम्परागत रूप में श्री राजमलजी लोढ़ा सौधर्म बृहत्पागच्छीय त्रिस्तुतिक संघ की मान्यता को माननेवाले थे, किन्तु श्वेताम्बर, दिगम्बर जैन समाज

के गच्छ एवं संघ समान रूप से आपको सम्मान देते थे। जैन सिद्धान्तों का विवेचन करते हुए आप सदैव ऐसे व्यापक एवं उदात्त विचार प्रस्तुत करते थे। आपके इन्हीं उदात्त विचारों के कारण स्वयं के द्वारा किये गये प्रयास के फलस्वरूप मन्दसौर में आज भी श्री महावीर जयन्ती उत्सव संयुक्त जैन समाज द्वारा आयोजित किया जाता है। आप मृत्यु पर्यन्त इसकी समारोह समिति के ५३ वर्षों तक मंत्री रहे।

श्री राजमलजी लोढ़ा के तपःपूत आध्यात्मिक एवं धार्मिक जीवन के इस महत्वपूर्ण अध्याय को कभी भी नहीं भुलाया जा सकेगा। जिसमें आपकी आगमोक्त विद्वता शब्दगत या उच्चारणगत रूप में ही नहीं थी, अपितु भावात्मक रूप में आचरण गत भी थी। विशेषतः शास्त्रीय विधीविधान के मर्मज्ञ एवं उसके क्रियात्मक स्वरूप के ज्ञाता होने के कारण प्रतिष्ठा एवं पूजा आदि कार्यो के लिए तो आप इतने ख्यातनामा हो गये थे कि भारत वर्ष के छोटें-छोटे ग्रामों एवं नगरों से लेकर बड़े-बड़े प्रसिद्ध नगरों में ससम्मान आमन्त्रित होकर आपने दो सौ से अधिक प्रतिष्ठाएं करवाई, शांतिस्नात्र पूजाएं पढ़ाई एवं इसी प्रकार के अन्य कई अनुष्ठान करवाए। अपने त्रिस्तुतिक गच्छ के आचार्यो में श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरिजी महाराज के तो आप विशेष कृपा पात्र रहे। प्रतिष्ठादि क्रिया कार्यो में गृहस्थोचित विधान आचार्य प्रवर के सानिध्य में श्री लोढ़ाजी ने बार - बार किया। यही परम्परा श्री विजयविद्याचन्द्रसूरिजी एवं वर्तमानाचार्य राष्ट्रसंत श्रीमद्विजय जयंतसेनसूरिजी के द्वारा भी आपके अंतिम समय तक बनी रही। प्रतिष्ठादि कार्यों में श्री लोढ़ाजी के द्वारा सम्पन्न कराई जानेवाली पद्धति में कहीं भी प्रसाद या शिथिलता नहीं रहती थी। आप अजेय धर्म निष्ठा तथा धर्मोल्लास के साथ पूरे मनोयोग से क्रिया करवाते थे। साथ ही आप मूहूर्त देखने में भी विशेष निष्णात थे। आपकी क्रिया विधान में सच्ची आस्था थी। यही कारण हैं कि मंदसौर नगर में भी आपने अपने परिवार की ओर से समय-समय पर न केवल धार्मिक आयोजन करवाए बल्कि श्रीमद् राजेन्द्रसूरि गुरू तीर्थ एवं जन कल्याण ट्रस्ट का भी निर्माण किया।

श्री लोढ़ाजी ने अपनी सफल व्यवसायिकता के साथ ही शिक्षा को महत्व दिया। सदैव उनकी यह भावना रही कि समाज आर्थिक दृष्टि से समृद्ध होने के साथ ही शिक्षा के क्षेत्र में उतनी ही उन्नति करे एवं विशेषतः ऐसी शिक्षा ग्रहण करे जो संस्कार तथा चरित्र का निर्माण करनेवाली हो। अपनी इस भावना को मूर्त रूप देने के लिए उन्होंने मंदसौर त्रिस्तुतिक समाज के माध्यम से मालवा का प्रथम सामाजिक सम्मेलन आयोजित करवाया तथा जैन गुरूकुल की स्थापना का स्वप्न देखा यह तो पूर्ण नहीं हुआ लेकिन बाद में आपके प्रयत्नों से राजेन्द्र विलास में जैन विद्यालय का शुभारंभ हुआ जो आज जैन शिक्षा महाविद्यालय के रूप में सुविकसित है।

श्री राजमलजी लोढ़ा की शिक्षा विषयक इसी भावना का एक अद्वितीय साकार स्वरूप और है, जो अभिनन्दनीय तो है ही अनुकरणीय भी है। आज त्रिस्तुतिक समाज की दो साध्वीजी ऐसी है, जिन्होंने निरन्तर साधना करते हुए एकाग्र होकर अध्ययन किया एवं जैन दर्शन के शोध ग्रन्थ लिखकर विश्वविद्यालय से पी. एच. डी. की उपाधि प्राप्त की। ये दोनों साध्वीजी हैं डॉ. प्रियदर्शनाश्रीजी एवं डॉ. सुदर्शनाश्रीजी इन दोनों साध्वीजी के अध्ययन की पृष्ठभूमि में श्री लोढ़ाजी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है, जो सर्वविदित है। श्री लोढ़ाजी त्रिस्तुतिक समाज की शोभा थे।

आपका सार्वजनिक तथा राजनैतिक जीवन में भी महत्वपूर्ण योगदान रहा। आप सोलह वर्षों तक मन्दसौर नगरपालिका के पार्षद व छह वर्षों तक वित्त समिति के सभापति रहे। शासन द्वारा गठित ओकाफ तथा राहत समितियों के भी सदस्य रहे। वर्षों तक जिला पत्रकार संघ के अध्यक्ष पद पर संचालन करते रहे। अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के संस्थापक सदस्यों में से आप थे तथा वर्षों तक परिषद के केन्द्रीय शिक्षा मंत्री के पद पर आप सुशोभित रहे। श्री सौधर्म वृहत्पागच्छीय जैन श्वे. संघ मन्दसौर के उप संरक्षक पद पर आजीवन रहे। पालीतानां (गुजरात) स्थित श्री राजेन्द्र भवन ट्रस्ट के ट्रस्टी भी आप आजीवन रहे। दैनिक ध्वज के सम्पादक पद पर आप चौपन वर्षों तक रहे। देश में किसी समाचार पत्र के सम्पादक पद कर बिना परिवर्तन इतनी लम्बी अवधि तक रहने का आपका अनूठा कीर्तिमान है। ध्वज का प्रकाशन स्वतंत्रता पूर्व हुआ तथा स्वतंत्रता संग्राम में आपका योगदान रहा। अंग्रेज शासकों की क्रूर नीति का सामना मानसिक उत्पीड़न, खाना तलाशी आदि के रूप में आपको सहन करना पड़ा।

आप आचारशील वक्ता, लेखक तथा पत्रकार थे। मन्दसौर में वर्षो तक आपने पर्युषण में प्रवचन दिए। श्रीमद् राजेन्द्रसूरि स्मारक ग्रन्थ, तथा श्रीमद् यतीन्द्रसूरि अभिनंदन ग्रंथ तथा श्रीमद् जयंतसेनसूरि अभिनंदन ग्रंथ जैसे ग्रन्थों तथा जैन समाज की कई पत्र-पत्रिकाओं में आपके शताधिक लेखों का प्रकाशन हुआ है। श्रीमद् यतीन्द्रसूरि अभिनंदन ग्रंथ के संशोधक मंडल में आप थे।

अपने परिवार की उजड़ी हुई बगिया को एक कुशल मालाकार के रूप में जिस समर्पित भाव से श्री राजमलजी लोढ़ा ने संवारा, सहेजा व निरन्तर सिंचित कर उसे जो नन्दन वन का स्वरूप प्रदान किया वह सदैव उनकी स्मृतियों को अक्षुण्ण बनाए रखेगा। उनके चारों पुत्र (श्री पारसमल, सुमतिलाल, सुरेन्द्र एवं ईश्वरचंद्र) अपने पेतृक धरोहर के रूप में मिले संस्कारों से इस पारिवारिक नन्दन वन को इसी रूप में हरा भरा बनाये रखेंगे। इस आशा-आकांक्षा के साथ बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी एवं जैनदर्शन के मर्मज्ञ विद्वान श्री राजमलजी लोढ़ा की पावन स्मृति में सादर अभिवादन।

साहित्य स्वीकार

तपोवल - लेखक : मुनि श्री नरेन्द्रविजयजी; प्रकाशक - श्री गुरू देवेन्द्र साहित्य प्रकाशन समिति; प्राप्तिस्थान - हंजारी भवन, मु. पो. भीनमाल, जिला - जालोर (राजस्थान) पृष्ठ २५०; मूल्य - पच्चीस रूपये।

साहस, संयम एवं समता आदि गुणों के आधार पर व्यक्ति किस प्रकार विपत्ति पर विजय पाकर नर से नारायण बन सकता है, उस घटना चक्र को उपन्यास शैली में पाठकों के लिये प्रस्तुत किया गया है।

स्वर्ण - शताब्दी - सम्पादन - मुनि श्री जयानन्दविजयजी महाराज प्रकाशक एवं प्राप्तिस्थान : सेठ नवलचंद सुप्रतचंद जैन देवकी पेढ़ी गुजराती कटला, पाली (राज.)

जैनाचार्य श्री समुद्रसूरीश्वरजी की जन्मशताब्दि एवं जैनाचार्य श्री इन्द्रदिन्नसूरीश्वरजी की दीक्षा स्वर्ण जयन्ति के उपलक्ष में प्रकाशित स्मारिका में परम्परा के पूर्वाचार्यों के परिचय व रंगीन फोटो के साथ समुद्र खंड व इंद्र खंड के अंतर्गत ग्रंथ नायकों के जीवन चरित्रों की झलक विविध लेखकों द्वारा दी गयी है। साज-सज्जा उत्तम है। पाली स्थित सभी जिन मंदिरों के रंगीन चित्र पाली दर्शन के अन्तर्गत दिये गये है।

संस्था सौरभ - प्रकाशक - मानवज्योत पब्लिक चेरीटीबल ट्रस्ट ७/५२ रिद्धि-सिद्धि मीठागर रोड़, मुलुंड (ई) बम्बई - ४०० ०८१

मेडिकल एवं सामाजिक संस्थाओं के पते फोन नंबर आदि आवश्यक जानकारी के साथ प्रकाशित यह डिरेक्टरी खूब उपयोगी है।

साधना नुं शिखर - साक्षीभाव (गुजराती) - लेखक - स्व. मुनिश्री अमरेन्द्रविजयजी; प्रकाशक ज्ञानज्योत फाउन्डेशन, द्वारा - रतिलाल सावला, शेठना हाउस, त्रीजे माले, १३ लेबर्नम रोड, गामदेवी, मुंबई - ७; मूल्य - आठ रूपये

ध्यान साधना जैन मार्ग का महत्वपूर्ण अंग है। प्रस्तुत प्रकाशन में अध्यात्म मूर्ति मुनिवर ने ध्यान साधना के प्रयोग को सरल भाषा में प्रस्तुत किया है।

श्रमणोपासक (कथाओं के आईने में) - लेखक - मुनि श्री जयानंदविजयजी म. सा. प्रकाशक - श्री गुरूरामचन्द्र प्रकाशन समिति - भीनमाल (राजस्थान) प्राप्ति स्थान - जे. के. संघवी (सम्पादक) शाश्वत धर्म कार्यालय जामली नाका थाने - ४०० ६०१ (महाराष्ट्र)

श्रावक के १२ व्रतों पर आधारित १२ कथानकों के साथ अन्य जानकारी भी दी गयी है, जो कि स्वाध्यायी पाठकों के लिये उपयोगी सिद्ध होगी। ऑफसेट प्रिंटिग में छपी १५० पृष्ठ की यह पुस्तक दो रूपये पोस्टेज खर्च के भेजने पर उपरोक्त पते से मंगायी जा सकेगी।

दिव्य संदेश (जीवन निर्माण विशेषांक) - सम्पादन मुनि श्री रत्नसेनविजयजी म. सा.; दिव्य संदेश कार्यालय, ३० महावीर कॉलोनी, पुष्कर रोड; अजमेर (राजस्थान); मूल्य - २५ रूपये

जीवन निर्माण के लिये आज सुसंस्कारों की महत्ती आवश्यकता है। उपभोक्तावाद संस्कृति रूपी विकृति के पिछे आज मानव पागल बन कर दौड़ रहा है, फलस्वरूप आज मानवता सिसकियाँ ले रही है। प्रस्तुत विशेषांक में जीवन निर्माण के विभिन्न पहलूओं पर आचार्यों, मुनियों एवं विद्वानों द्वारा प्रकाश डाला गया है। विशेषांक के अनुरूप सामग्री का संकलन

उपयुक्त है।

मनस क्रान्ति - लेखक - मुनिश्री विमलसागरजी, प्रकाशक - एवं प्राप्तिस्थान: जीवन निर्माण केन्द्र ए-५ संभवनाथ एपार्टमेन्ट उस्मानपुरा उद्यान के पास अहमदाबाद। मूल्य - पांच रूपये

पर्युषण, तप एवं कल्पसूत्र विषय पर रचनाओं का संकलन प्रकाशित किया गया है।

चिन्ताः प्राची चिन्तनः सूरज - लेखक - मुनि श्री विमलसागरजी प्रकाशक एवं प्राप्तिस्थान उपरोक्तानुसार मूल्य - पांच रूपये।

विभिन्न विषयों को यथार्थ प्रस्तुत करती हुयी २४ क्षणिकाऐं प्रकाशित की गयी हैं।

जीवन प्रभात (गुजराती) - सम्पादक - श्री प्रकाश शाह प्रकाशक एवं प्राप्तिस्थान - श्री राजचन्द्र आध्यात्मिक साधना केन्द्र कोबा ३८२ ००१ गांधी नगर (गुजरात) मूल्य - तीन रूपये।

संस्था द्वारा प्रतिवर्ष दीपावली पुस्तिका प्रकाशन होता है, उसी क्रम में सद्गुणों के विकास को ध्यान में रखकर विविध सामग्री का संकलन किया गया है।

ओये-ओये... टी.व्ही. वाले रोये-रोये - लेखक - मुनि श्री रश्मिरत्नविजयजी म.सा. प्रकाशक एवं प्राप्तिस्थान - आध्यात्मिक शिक्षण केन्द्र, ४४-खाडीलकर रोड़, बम्बई - ४ मूल्य - दस रूपये।

शीर्षक के अनुसार टी.व्ही से होनेवाले नुकसानों एवं विविध घटनाओं को आलोखित किया गया है।

चौदह स्वप्न गीत - लेखक - प्रकाशक एवं प्राप्तिस्थान उपरोक्तानुसार। मूल्य - दस रूपये

राजस्थानी लोकधुनों के आधार पर राजस्थानी भाषा में अचिरामाता को आये १४ स्वप्नों को आलेखित किया गया है।

१ नवम्बर से ३० नवम्बर १९९२ तक शाश्वत धर्म के बनाए गए सदस्यों की सूची

सदस्य बनाने वाले का नाम	बीस वर्षीय	दस वर्षीय	तीन वर्षीय	कुल सदस्य
श्री पारसमलजी मुथा - लोनावला	--	--	४०	४०
श्री मोहनलालजी जैन - जोगेश्वरी	१	--	७	८
कार्यालय - थाने	--	१	७	८
श्री सोहनराजजी जैन - कराड़	--	२	१	३
श्री कांतिलालजी भंडारी-राजगढ़-धार	--	--	३	३
श्री पारसमलजी सेठिया - नीमच	--	--	२	२
श्री नीरज सुराना - इन्दौर	--	--	१	१
श्री जे. के. संघवी - थाने	--	--	१	१
	१	३	६२	६६

પ્રેરકવાણી

- જીવનની સમસ્યાઓ જીવંત છે. પરિવર્તિત છે, અને તેનો મુકાબલો જે વિચારો વડે તથા મન વડે કરીએ છીએ તે પ્રાયઃમૃત છે. ભૂતકાળનાં અવશેષ છે. પરિણામે પ્રશ્નોને ઉકેલવાથી જીવનમાં શાંતિના સ્થાને સંઘર્ષ અને અશાંતિનું જ સાતત્ય રહે છે.
- બર્નાડ રસેલ કહે છે માનવીને પંખીની જેમ આકાશમાં ઉડતાં આવડે છે. માછલીની જેમ પાણીમાં તરતાં આવડે છે. પણ, મુશ્કેલી એ છે કે માનવીની માફક ધરતી ઉપર જીવતાં આવડતું નથી. વર્ષોથી આપણે કહેવાતું સારૂં-સારૂં વાંચીએ છીએ, સાંભળીએ છીએ, મંત્ર જાપ જપીએ છીએ, છતાં આપણામાં પરિવર્તન આવતું નથી. સમસ્યાઓનું સમાધાન મળતું નથી ! કેમ કે આપણે કેવળ શબ્દોની કક્ષાએજ રહીએ છીએ. શબ્દો કેવળ અભિવ્યક્તિનું જ સાધન છે. નહિં કે નક્કર માધ્યમ.
- જ્યાં સુધી આપણે જેવી છીએ તેવાજ માનસિક રીતે રહીશું તો જીવન અત્યારે છે તેવું જ મૃત્યુ સુધી હશે.
- જેમ અંધ માનવી સૂર્યોદયનાં દર્શન ન કરી શકે, બદ્ધ માનવી કશું નવું ન પામી શકે. મનનો પ્રતિબદ્ધતા રૂપી અજ્ઞાનનો પડદો ખસે તોજ સત્યદર્શન થવાથી જીવનની સઘળી સમસ્યાઓનો ઉકેલ એક સામટો આવી જાય.
- વ્યક્તિ ઉશ્કેરાટમાં હોય ત્યારે એનામાંથી વિનય-વિવેક ચાલ્યાં જાય છે. ગુસ્સો તેની પાસેથી સમજણ અને ગાંભીર્ય છીનવી લે છે. એટલે કોપાવિષ્ટ માણસ વિચારશક્તિ ખોઈ બેસે છે.
- શબ્દ આગ લગાડી પણ શકે છે અને આગ બુઝાવી પણ શકે. એટલે ઉચિત અવસરે ઉચિત રીતે શબ્દો પ્રયોજવા જોઈએ, વાણીમાં વિવેક ગુમાવી બેસેલ વ્યક્તિ માટે તો મૌનથી વધુ શક્તિશાળી બીજું કોઈ પણ શસ્ત્ર નથી.
- ધર્મ એ બાહ્ય પ્રદર્શન કે દેખાદેખી કરવાની બાબત નથી. પરંતુ, મનુષ્યની આંતરિક બાબત છે. ભારતના પ્રાચીન ધર્મચિંતકોએ સ્પષ્ટ કહ્યું છે "ધર્મસ્ય તત્વં નિહિતં ગુહાયામ્" ધર્મનું તત્વ મનુષ્યની ભીતરની ગુફામાં પડેલુ છે. અંતર્મુખ થયા વિના જીવનમાં ધર્મની પ્રાપ્તી કે અનુભૂતિ થઈ શકતી નથી. આપણી મુશ્કેલીએ છે કે આપણે ધર્મનું આચરણ બહિર્મુખ થઈને કરીએ છીએ. ધર્માભાસનેજ ધર્મ સમજીને બધો વ્યવહાર કરીએ છીએ.
- ક્રોધ માણસ પાસેથી માનવતાનું હરણ કરીને તેને પશુતાની શ્રેણિમાં ધકેલી દે છે. તેથી માણસ પરિણામનો વિચાર કરવા પણ થોભતો નથી. ક્રોધ કરવામાં વિલંબ કરી શકે તેજ સાચો જ્ઞાની ગણાય.
- પ્રાર્થનામાં માંગણી સંતોષાય કે ઈશ્વરનો અનુગ્રહ થાય એ વાત એટલી મહત્વની નથી. પ્રાર્થનામાંથી અપેક્ષાભાવ નીકળી જાય તોજ પ્રાર્થના કૃતાર્થ થાય, દરેક ધર્મોમાં પ્રાર્થનાનું સ્થાન ઘણું ઊંચુ જ છે.
- ચંચળ વૃત્તિઓ આપણને એક મોહમયી દુનિયાની વાસનાઓમાં ખેચી જાય છે, અને આપણે સહજભાવે લોભ-લાલચ-સુખ-અને લાલસાઓમાં ખેંચાઈ પણ જઈએ છીએ. એ વાસના એવીતો પ્રબળ હોય છે કે તેમાં આપણે આસક્ત થઈ જઈએ છીએ. પરન્તુ, આત્મદર્શન ઈચ્છનાર માટે અનાસક્તિ એ સર્વ પ્રથમ આવશ્યકતા છે.
- મનની પ્રસન્નતા માટે શરીર નિરામય રહેવું જરૂરી છે, શરીરમાં વ્યાધિ કે અન્ય કોઈ ખલેલ હશે તો મન પ્રસન્ન રહી શકશે નહીં. જેમણે આત્માનું જ કલ્યાણ કરવું છે. તેમણે મનની પ્રસન્નતાને ટકાવી રાખવા શરીરની ઉપેક્ષા કરવાની જરૂર નથી. હા, અનાસક્ત થવું એ પરમ આવશ્યક છે.

મુનિશ્રી પ્રશાન્તરત્ન વિજયજી

મોદીની ધર્મપત્ની

—પં. શ્રીપૂર્ણાનન્દવિજયજી 'કુમાર શ્રમણ'

આધ્યાત્મિક જીવનનાં અધ:પતનના ઘણાં કારણોમાં ખુશામત કરનારા માનવોનું સાહચર્ય પણ એક સબળ કારણ છે, તેથી જ અનુભવીઓએ કહ્યું કે, "યદિ તને ઉન્નત જીવનની આકાંક્ષા હોય તો તું પોતે રોટલીના એક ટૂકડાની ખાતર પણ કોઈની ખુશામત કરીશ નહી અને લાખો કરોડો રૂપીઆનો લાભ થતો હોય તો એ ખુશામતીઓનો સહવાસ પણ કરીશ નહિ."

ખુશામતી જીવન સ્વાર્થ પૂર્ણ હોવાથી ગમે તેવા નિમિત્તોથી પણ હિંસા-જુઠ બદમાશી આદિ દોષોનું આગમન સરળ બને છે. રાજા-મહારાજા, શેઠ-શાહુકાર, મંત્રી તથા મહાસંતોનું જીવન પ્રાય: કરીને ખુશામતપ્રિય બનતા વાર લાગતી નથી; માટે જ તેમના ઉન્નત વિચારો પણ કાગળના ફુલો જેવા જ દેખાવમાં અને બોલવામાં સારા હોય છે. અન્યથા દેશનું-સમાજનું સંપ્રદાયનું અને છેવટે ધાર્મિકતાનું પણ સીમાતીત અવમૂલ્યન થાય જ કેવી રીતે? 'ઓળખાણ તો રત્નની ખાણ છે' આ કથન આધ્યાત્મિકનું નથી, પણ ખુશામત પ્રેમીઓનું છે.

કોઈક દેશનો રાજા ઘણો જ સરળ અને સ્વચ્છ હૃદયવાળો હતો. રાજનીતિના સંચાલનમાં કયાય પ્રમાદ બેદરકારી કે અનીતિનો પ્રવેશ ન હતો. પ્રજા પણ તેમના પ્રત્યે વિશ્વાસુ હોવાથી દિનપ્રતિદિન તેમનો વ્યાપાર તથા ધર્મ અને ધાર્મિકતા બીજના ચંદ્રમાની જેમ વધતાંજ જતાં હતાં. તે રાજાના રસોડામાં અનાજ પાણીની બધીય વ્યવસ્થા એક મોદીના હાથમાં હતી જે ઘણો જ પ્રામાણિક-અવંચક-અક્ષુદ્ર અને માયાળુ હતો. રાજાનો પ્રેમ પાત્ર હોવાથી પ્રત્યેક પ્રસંગે રાજા તેની સલાહ લેતો અને તેની સાથે વધારે સમય પસાર કરતો હતો.

મોદીની સ્ત્રી રૂપરૂપના અંબાર જેવી હોવા છતાં પ્રતિવ્રતા હતી. તેથી તે સમજતી હતી કે હીરા મોતીના આભૂષણ સ્ત્રીને શણગારી શકતાં નથી, પરંતુ શિયળ, સત્ય, ઉદારતા, ગંભીરતા, સહનશીલતા અને સમતા આદિ કેળવાયેલા ગુણો વડે જ સ્ત્રી સુશોભિત બને છે.

કુદરતે જ સ્ત્રી અને પુરુષના સ્વભાવો-આકારો-ગુણો અને કર્ત્તવ્યધર્મો સર્વથા જુદા જુદા ઘડયાં હોવાથી સ્ત્રીનો મૌલિક ધર્મ એક જ છે કે માંડિલા ગૃહસ્થાશ્રમમાં દીવાળીના દીપક પ્રગટાવે; પુત્રોને વીર-ધીર-ગંભીર-ભક્ત અને ઉદાર બનાવે તથા પોતાની પુત્રીઓને શિયળધર્મનું શિક્ષણ આપે, જેથી પરાયા ઘેર જવાવાળી તે પુત્રીને પોતાની સાત પેઢીને સુસંસ્કારી બનાવવાની ક્ષમતા પ્રાપ્ત થશે. આનાથી અતિરિક્ત દેશસેવા, કુટુંબસેવા કે સમાજસેવા કઈ હોઈ શકશે?

પોતાના પરણેતર પતિથી અતિરિક્ત બીજા પુરુષ ભોગ્યપાત્ર બનવું અત્યંત નિંદનીય કર્ત્તવ્ય હોવાથી પ્રાણોની આહુતિ દઈને પણ પોતાનું શિયળ અને આત્માને સુરક્ષિત રાખનારી નારી સિત્તેર પેઢીને ઉજ્જળી કરે છે.

રાવણ, દુર્યોધન, શૂર્પણખા, મમ્મણ શેઠ, ધવલ શેઠ, ગોશાળો કે ગોડસેની માવડીઓનું નામ કયાંય પણ લેવાતું નથી. કેમ કે શ્રીમંતાઈ અને સત્તા તેમની પાસે પુષ્કળ

હોવા છતાં પણ તેમના સંતાનો દેશ-ધર્મ અને ધાર્મિકતાના દ્રોહી બનેલા હોવાર્થ ઈતિહાસના પાને તેઓ કાળા મોઢા કરી ગયા છે. જ્યારે મહાવીરસ્વામી, ગૌતમબુદ્ધ, રામચંદ્રજી, સીતાજી, હનુમાન, રાજીમતી, ચંદનબાળા, મહાત્મા ગાંધી આદિની માવડીઓ આજે પણ સૌની જીભે પ્રશંસનીય બની છે.

ઉપર પ્રમાણેના ઉત્તમોત્તમ-ઉદાત્ત જીવનને જીવનારી મોદીની પત્ની પર એટલા માટે જ પ્રશંસનીય અને વિશ્વસનીય હતી.

સજ્જન, દુર્જન, માયાળુ, ઝગડાળુ અને સોય તથા કાતર જેવા માનવોની ભરમાર પ્રત્યેક દેશ અને ગામમાં હોય છે તો પછી આ રાજાજીના ગામમાં ન હોય તે શી રીતે બને ? તેમાં પણ દુર્જન, ઝગડાળુ અને કાતર જેવા માનવો ઘણું કરીને કામધંધા વિનાના નવરા હોવાથી બીજાઓના ઘર બગાડવામાં જ તેમને રસ હોય છે. તેથી તેમને જ્ઞાન-ધ્યાન-ઈશ્વર પ્રણિધાન કે પરોપકાર આદિના કાર્યો મુદ્દલ પસંદ હોતા નથી. અને ગામના ઓટલે-ચોટલે બેસીને બીજાની બેન-બેટીઓની કે દીન-દુ;ખી તથા અનાથોની નિરર્થક ચર્ચા કરવાનો તેમને મન એક ધંધો બની જાય છે. રોજ રોજ જુદા જુદા ગપાટા સપાટામાંથી આજે મોદી તેમની જીભ પર આવી જતાં તેમના એંપટી માઈન્ડ (નવરા મગજ) માં રાજાની મોદી માટેની મિત્રતા કઈ રીતે તોડાવવી તેની ચર્ચા ખૂબ લંબાણથી ચાલી. છેવટે નિર્ણય લેવાયો કે મોદીની રૂપવતી સ્ત્રીની વાત રાજાના કાનમાં નાખવી. બધાય તૈયાર થયા. અને ડેપ્યુટેશનના રૂપમાં રાજા પાસે આવ્યા. રાજાએ મહાજનોને આવકાર્યા અને આવવાનું કારણ પૂછ્યું. ત્યારે તેમણે કહ્યું કે :-

રાજન્! આપશ્રીને ખૂબ જ જમતીવાત કહેવાની છે, અને તે એ છે કે આપશ્રીના ખૂબ જ પ્રિયપાત્ર મોદીની પત્ની, અપ્સરા, તિલોત્તમા કે ઈન્દ્રની ઈન્દ્રાણી કરતા પણ વધારે રૂપવતી છે. ઈર્ષાલુ કે ઝગડાળુ માનવો બીજાના કાનમાં વાત નાખીને તેમને ચકડોળે ચડાવી મારે છે. પછી તો રાજા-વાજા અને વાંદરાને તોફાને ચડતાં કેટલીવાર ? મોદીને બહારગામ મોકલાવ્યા વિના તેની પત્નિનું સમીપ્ય નસીબમાં ન હોય તે દેખીતી વાત છે; તેથી ૧૦-૧૨ દિવસના રાજકાર્યના કારણે મોદીને બહારગામ મોકલાવીને પોતાની ચાલાક દાસી દ્વારા મોદીની પત્નીને સંદેશો પાઠવ્યો કે, "આવતીકાલે રાજાજી પોતાના રસાલા સાથે તમારે ત્યાં ભોજન કરવા પધારશે."

સંદેશો સાંભળીને મોદીની પત્નીએ વિચાર્યું, 'રાજાની દાનત મારા રૂપ ઉપર બગડી ગઈ હોય તેમ લાગે છે' કેમ કે પુરૂષનું મન અને અને વાંદરો (Monkey) બંને એક સમાન જ હોય છે. વાંદરાને એક ડાલને છોડી બીજી ડાળે કુદકો મારતા વાર લાગતી નથી; તેમ પુરૂષનું મન પણ એક સ્ત્રી પરથી કુદકો મારીને બીજી સ્ત્રીને ફોસલાવતા વાર કરતું નથી.

સીતાજી પાસે રહેલા રામચંદ્રજીને છલ પ્રપંચ ભી જુદા કર્યા પછી જ રાવણે સીતાજીનું હરણ કર્યું છે. તેમ મારા પતિ મોદીને પણ રાજ્ય કાર્યના બહાને ૧૦-૧૨ દિવસ માટે પરદેશ મોકલ્યા છે, તેમાં મારા સતીત્વને ખંડિત કરવાની બદદાનત સાફ સાફ દેખાઈ આવે છે. પુરૂષોની આ કમજોરીએ જ ભારત દેશનું અને નારી જાતનું અધ:પતન કરવામાં કુચાક ચાસ રાખી નથી. હવે દાસી દ્વારા મનાઈ કહેવડાવું તો અવિવેક કહેવાશે અને ભોજનનું આમંત્રણ આપું તો શિયળ ખંડનનું જોખમ સાફ દેખાઈ રહ્યું છે. આ બંને સ્થિતિઓ ભયાનક તેમજ જોખમવાળી હોવા છતાં પણ મોદીની પત્નીએ નિર્ણય કર્યો કે અવિવેકના માર્ગે જવા કરતાં રાજાજીને જમવા આવવા દેવામાં વાંધો નથી. કેમ કે પોતાના સતીત્વના નાશમાં જેમ હજારો પ્રકાર રહેલા છે તેમ તેની રક્ષામાં પણ હજારો પ્રકાર છે. માટે "સાપ મરે નહિ અને લાકડી તૂટે નહિ" તેવી રીતે તરકીબ કરીને રાજાની શાન પણ

ઠેકાણે લાવું અને મારૂં શિયળ પણ સુરક્ષિત રાખું. આમ વિચારીને, દાસીને કહ્યું કે 'રાજાજીને કહેજે, આપશ્રીની આજ્ઞા પ્રમાણે મોદીની પત્નીએ આપશ્રીને જમવાનું આમંત્રણ આપ્યું છે.' વાત સાંભળીને ખુશ થયેલો રાજા બીજા દિવસે ખૂબ જ ઠાઠમાઠથી જમવા માટે આવ્યો.

સીતાજીને ઉપાડી ગયા પછી રાવણના પ્રતિસેકંડના ભાવ સતીના સતીત્વને ખંડિત કરવાના હતાં જ્યારે સીતાજીને પોતાનું શિયળ સાચવી રાખવાનો ભાવ હતો. અનાદિકાળથી હિંસા, અહિંસા, સદાચાર, દુરાચારના દ્વન્દો માનવના મનમાં રેસના ઘોડાની જેમ કૂદકા મારી રહ્યાં હોય છે. પણ માનવ કંઈક ધીરજ રાખે; પોતાના આત્મા, મન, બુદ્ધિ અને ઈન્દ્રિયોને સંયમથી મર્યાદિત કરી લે તો ઈતિહાસ સાક્ષી આપે છે કે- પ્રત્યેક પ્રસંગોમાં છેવટનો જય જયકાર અહિંસા, સદાચાર અને બ્રહ્મવ્રતનો જ થવા પામ્યો છે. તથા હિંસા, દુરાચાર અને મૈથુનકર્મી આત્માને જ માર ખાવો પડયો છે.

મોદીની પત્નીએ જૂદા જૂદા રંગના કાચના ગ્લાસો મંગાવ્યા અને એક જ જાતના દુધપાકને તે તે ગ્લાસોમાં ભરી ચાંદીના થાલમાં તે મૂક્યાં. જમવાનાં આસન પર બિરાજમાન રાજાની સામે મોદીની પત્નીએ થાળ મૂક્યો અને પોતે દૂર જઈને રાજાની ચેષ્ટા જોવા લાગી. પ્રત્યેક ગ્લાસમાં દૂધપાક પણ જૂદો જૂદો હશે તેમ સમજીને આનન્દ વિભોર બનેલા રાજાએ જૂદા જૂદા પ્રકારે દૂધપાકનો સ્વાદ લીધો. પણ...બધાયમાં એક જ સરખો સ્વાદ જાણ્યા પછી આશ્ચર્યાન્વિત બનેલા રાજાએ પૂછ્યું કે-હે આર્યે! એક જાતનો દૂધપાક જૂદા જૂદા રંગના ગ્લાસોમાં પીરસવાનું કારણ કયું?

ધૈર્યવતી, નિર્ભયા અને શિયળ તથા સદાચાર પ્રત્યે પૂર્ણ જાગૃત તથા વફાદાર તે બાઈએ નમ્ર, સાદી અને સીધી ભાષામાં હિંમતપૂર્વક જવાબ આપ્યો કે-હે રાજાધિરાજ! આપ શ્રીમાન સૌના પિતા તુલ્ય છો, પ્રજા તમારી સંતાન છે બીજા પુરૂષોની વહુ બેટીઓ પણ તમારી પુત્રીઓની સમાન છે, માટે હે પિતૃતુલ્ય પ્રજાપાલક! હું પણ તમારી બેટી જ હોવાથી આપશ્રીના પ્રશ્નોના જવાબમાં કહું છું કે- રૂપ, રંગ અને સ્વાદમાં એક જ દૂધપાક જૂદા જૂદા રંગના ગ્લાસોમાં હોવાથી કેવળ રંગે જ જૂદા દેખાય છે, તેવી રીતે સંસારભરની નારી જાત બધીય એક જ છે કેવળ ચામડીનો જ તફાવત છે. ચાહે તો તે રાજાની રાણી હોય, ઈન્દ્રની ઈન્દ્રાણી હોય, ભીખારીની ભીખારણ હોય, ભંગીની ભંગીયણ હોય, તે પછી કાળા રંગની હોય કે ધોળા રંગની હોય, મૂલાયમ કે ખરબચડી હોય. તો પણ તેના શરીરની રચનામાં રતિ માત્ર ફરક હોય તેવો અનુભવ કોઈને થયો નથી, તેમજ સ્ત્રીઓના શરીરની રચનામાં પરમાત્માએ પુરૂષ વિશેષના માટે પણ ભેદભાવ રાખ્યો નથી. નાભીના નીચેનું સ્થાન ચંડાલવાડા જેવું ગંદુ, અપવિત્ર, લોહી તથા પેશાબને ઝરતું ગટર છે, જે જોઈને પણ ખાનદાન માનવને વમન થયા વિના રહેતું નથી. માટે મળમૂત્રની ક્યારી જેવા સ્થળ પર મુગ્ધ બનીને પોતાની પરણેતર ધર્મપત્નીઓનો દ્રોહ કરવો તે મહાપાપ છે, નિંદનીય કર્ત્તવ્ય છે. પૂજ્ય પિતાજી! પરણેતર સ્ત્રીને છોડી પરસ્ત્રી પ્રત્યે આકર્ષાયેલા માનવને ધર્મ નથી, કર્મ નથી, સત્સંગતિ નથી. તેવો માણસ પરમાત્માનો ભક્ત હર હાલતમાં પણ થતો નથી માટે જ તેવાઓનું...

"ભણતર રહી ગઈ વાંઝડી, ગણતરી ભૂલ્યો ગમાર;
પર તિરિયા ફંદે પડી, રખડ્યા તે સંસાર."

તેથી તેવાઓનું મેટ્રિક, ગ્રેજ્યુએટ કે ડબલ ગ્રેજ્યુએટનું ભણતર પણ વાંઝીયું રહે છે અને પોતાના જીવનની ગણતરીઓ પણ સાવ ઉંધી પડે છે. માટે "પરસ્ત્રી કે વેશ્યા સેવન મહાપાપ છે. આધ્યાત્મિક જીવનનું દેવાળું છે, માનવતાની મશ્કરી છે, પરમાત્માનો શાપ

છે, ખાનદાનીનું કલંક છે, માતા-પિતાઓના કાળા મોઢા છે, વડિલોનું અપમાન છે, સત્ય અને સાત્ત્વિકતાનું અવમૂલ્યન છે તેમજ ઉચ્ચસ્તરીય માનવ જીવનનું અધ:પતન છે, વિનય તથા વિવેકનો ભંગ છે તથા લક્ષ્મી કે સરસ્વતી માતાને નારાજ કરવાનું કારણ છે."

આ માટે જ આપશ્રીને જાગૃત કરવા અર્થે તથા તમારા પુરૂષત્વની સ્મૃતિ અપાવવા માટે પણ આ મારી યુક્તિ છે.

રાજાજી! પુરૂષમાત્રનું પુરૂષત્વ પોતાની મર્યાદા પ્રમાણે શિયળ સદાચારના પાલન કરવામાં જ સમાયેલું છે, અન્યથા મોટી મોટી મૂંછો, કદાવર કે રૂડા રૂપાળા શરીરો-વાંકડિયાવાળ કે અણિયાલું નાક, પફપાઉડર કે સેંટથી ચમક-દમક કરતું મુખ પુરૂષોની મર્દાનગી ને કલંકિત કરનારા બનશે અને તમે થયું તો ઈશ્વરનો આશીર્વાદ, કુલનીમર્યાદા, સ્વસ્ત્રીનો સ્નેહ, ગુરૂઓની શરમ જીવનમાંથી લોપાઈ જશે અને મૃત્યુ પછી પરમાત્માના ઘરે પણ કાળા મોઢા થશે.

બારમે રહેલો શનિદેવ કે રાહુદેવ જે હાનિ કરતાં હશે તેના કરતાં પરસ્ત્રી સાથેના આંખમિંચામણા, મશ્કરી, ચેષ્ટા અને ગંદીભાષા અનેક ગણા હાનિ કરનાર છે. માટે જ કહેવાયું છે કે :-

'દ્વાદશમે છાયા સુત બેઠો જિસ મન પર તરૂણી હોય,
છતિ-મતિ-ગતિ સવિ હોય હીના વલી હોય દુર્બલ દેહ.

ઉપર્યુક્ત વચન સાંભળીને રાજા સમજ્યો. માફી માંગી અને ભવિષ્યમાં કદિ પણ પરસ્ત્રીના વિચાર કરશે નહિ તેવી પ્રતિજ્ઞા લઈ પોતાના મહેલમાં આવ્યો.

તે બાઈનો પતિ આઠ-દસ દિવસ પછી જ્યારે ઘેર આવ્યો અને આ વાત સાંભળી ત્યારે તેને હર્ષનો પાર ન રહ્યો. તેના મનમાં એક જ પ્રશ્ન ઘોળાતો રહ્યો કે...

(૧) સંસારમાં સ્ત્રી મોટી છે? કે પુરૂષ મોટો?
(૨) સ્વાર્થ બલિદાન દેનારી સ્ત્રી શ્રેષ્ઠ છે? કે સ્વાર્થ. સાધુ પુરૂષ?
(૩) શિયળ સંપન્ન સ્ત્રી મોટી કે આંખ મિંચામણા કરનાર પુરૂષ મોટો?

અંતરાત્મામાંથી એક જ અવાજ આવ્યો કે પુરૂષ કરતાં સ્ત્રી હજારવાર મોટી છે, શ્રેષ્ઠ છે કેમ કે **સ્વાર્થ બલિદાન દેવતાઈ ગુણ છે અને સ્વાર્થ સાધના નારકીય તત્ત્વ છે.** સ્ત્રી જાતે જેટલું સ્વાર્થ બલિદાન આપ્યું છે તેની તુલનામાં પુરૂષનું બલિદાન નગણ્ય છે. ઈત્યાદિ કારણોને લઈને સ્ત્રી જગદંબા છે, અભૂતપૂર્વ શક્તિસંપન્ન છે, તેથી જ ઘણા મહાપુરૂષોને પણ કહેવું પડ્યું કે સ્ત્રીનું સંરક્ષણ કરવામાં તથા તેના સદાચારમાં મદદ કરવામાં પુરૂષ જાતિનો ઉદ્ધાર છે, પુનરૂદ્ધાર છે. સારાંશ કે, પુરૂષ જાતમાં સદાચારનું સ્થાપન કરવું હોય તો સ્ત્રીના શિયળનું રક્ષણ કરવા સિવાય બીજો એકેય માર્ગ નથી. કેમ કે સ્ત્રી એ માતા હોવાથી તેની કુક્ષિમાં જ સંતાન આવે છે, વધે પદાર્પણ કરે છે. તેથી સ્ત્રી ચાહે કુંવારી હોય, વિદ્યાર્થીની હોય તેમનું-ભાભી કે સાળી હોય, સાથે ભણનારી વિદ્યાર્થીની હોય તેમનું શિયણ સુરક્ષિત રહેશે તો ગમે તે સ્ત્રીનું સંતાન સંતાન તેજસ્વી, ઓજસ્વી બનવા પામશે જેથી તેના દ્વારા દેશનું-સમાજનું, ધાર્મિક મર્યાદાનું છેવટે પોતાના કુટુંબનું પણ હિત કરનાર બનીને સાત પેઢીને ઉજ્જવળ કરશે.

જે દેશ કે સમાજમાં સ્ત્રીનું શિયળ ગમે તે રીતે કે ગમે તેનાથી લુટાતું હોય તે દેશ કે સમાજ કોઈ કાલે પર પોતાની ઉન્નતિ કરી શકવાનો નથી.

પુરૂષ ચાહે રૂપાળો કે મૂછાળો હોય, ડબલ ગ્રેજ્યુએટ હોય કે માસિક પાંચ હજારનો પગાર મેળવતો હોય, ફાંકડી અંગ્રેજી ભાષા કે સંસ્કૃત, પ્રાકૃત તથા બાઈબલ કે કુરાન, વેદ કે વેદાંત, ઉપનિષદ કે જાતક કથાઓનો સારામાં સારો વિદ્વાન હોય, વક્તા, અદ્વિતીય વક્તા,

કે ધારાવાહી વક્તા હોય, યદિ તેનામાં પરસ્ત્રી ત્યાગનો ગુણ ન કેળવાયેલો હશે તો અથવા કાછ એટલે લંગોટનો છુટો હશે તો તેમના દ્વારા સંઘાડાવાદ કે સંપ્રદાય વધશે પણ ધાર્મિકતાનું અવમૂલ્યન કે દેવાલું નિકળવા સિવાય બીજો એકેય અર્થ ફળીભૂત થવાનો નથી. આજનો ભારતદેશ જ પ્રત્યક્ષ પ્રમાણ છે. આ કારણે જ દેશને આબાદ કરવો હોય કે આઝાદીની રક્ષા કરવી હોય તો પુરૂષ જાતે પરસ્ત્રીને માતા સ્વરૂપે માન્યા વિના બીજો માર્ગ નથી. અને દતર્થે માંસભોજન, શરાબપાન, નવરાપણું, વાચાળતા આદિ દુર્ગુણોને છોડવાના જ રહેશે.

સૈનિકોની તાકતથી દેશનું રક્ષાણ બે, ત્રણ, ચાર કે પાંચવાર થશે. પરંતુ શરાબપાન પરસ્ત્રીગમનનો ત્યાગ કરવામાં વાર લાગી તો ઉધઈના કારણે જેમ બધુય ખતમ થાય છે તેમ દેશને પાછો ગુલામ થયા વિના છુટકો નથી.

- જેમ પલોટાયેલો કવચધારી ઘોડો પોતાનો સ્વચ્છંદ રોક્યા પછી જ વિજવી થાય છે, તેમ મનુષ્ય પણ પોતાનો સ્વચ્છંદ રોક્યા પછી જ મોક્ષ પામી શકે છે. અપ્રમત્ત સાધકે ઘણા લાંબા સમય સુધી સંયમને આચરવો ઘટે આમ કરવાતી તે જલ્દી મોક્ષ પામે છે.

(ઉત્ત. અ. ૪, ગા. ૮)

- વિવેક શીઘ્ર મેળવી શકાતો નથી, તેથી આત્માનુ રક્ષી કામલોભનો ત્યાગ કરી, સમભાવપૂર્વક લોકનું સ્વરૂપ જાણી અપ્રમત્ત થઈને વિચરે.

(ઉત્ત. અ. ૪, ગા. ૧૦)

- જેમ રાત્રિઓ વીતતાં વૃક્ષની પીળા થઈ ગયેલાં પાંહડો ખરી પડે છે, તેમ મનુષ્યના જીવન નો પણ ભમે ત્યારે અંત આવી જાય છે, એમ સમજી હે ગૌતમ ! તું સમય માત્રનો પ્રમાદ કરીશ નહિં.

(ઉત્ત. અ. ૧૦, ગા. ૧)

- જેમ ડાલની આણી પર રહેલું ઝાકળનું બિંદુ પડવાની તૈયારીમાં રહે છે અને થોડી વાર જ ટકે છે, તેમ મનુષ્યનું જીવન પણ પડવાની તૈયારીમાં જ રહે છે અને થોડી વાર જ ટકે છે, એમ સમજી હે ગૌતમ ! તું સમય માત્રનો પ્રમાદ કરીશ નહિં.

(ઉત્ત. અ. ૧૦, ગા. ૨)

ज्ञान-सूक्तियाँ

संकलनकर्त्री - पू. साध्वीजीश्री प्रियदर्शनाश्रीजी
पू. साध्वीजीश्री सुदर्शनाश्रीजी

अगीअत्थस्स वयणेणं, अमयंपि न घुंटए ।

– गच्छाचार ४६

अगीतार्थ=अज्ञानी के कहने से अमृत भी नहीं पीना चाहिए ।

नाणेण य करणेण य दोहि वि दुक्खवक्खयं होइ ।

– मरण समाधि १४७

ज्ञान और चारित्र - इन दोनों की साधना से ही दुःख का क्षय होता है ।

दव्वुज्जोओ जोओ, प्रभासइ परमियाम्मिखित्तम्मि ।
भावुज्जो ओ जोओ, लोगालोगं पगासेइ ।।

– आवश्यक निर्युक्ति १०६९

सूर्य आदि का द्रव्य प्रकाश परिमित क्षेत्र को ही प्रकाशित करता है, किंतु ज्ञान का प्रकाश तो समस्त लोकालोक को प्रकाशित करता है ।

बहुभवे संचियंपिहु, सज्झाएणं खणे खवइ ।

– दशपयन्ना - चंदविज्जापयन्ना ९१
– बृहत्कल्प भाष्य ११७१

साधक करोड़ो भवों के संचित कर्म को स्वाध्याय के द्वारा क्षणभर में क्षय कर देता है ।

ज्ञानान्मुक्तिः ।

– सांख्यदर्शन ३/२३

ज्ञान से ही मूक्ति होती है ।

अण्णाणं परमं दुक्खं, अण्णाणा जायते भयं ।
अण्णाण मूलो संसारो, विविहो सव्वदेहिणं ।।

– इसिभासियाइं २१/१

अज्ञान सबसे बड़ा दुःख है । अज्ञान से भय उत्पन्न होता है, सब प्राणियों के संसार भ्रमण का मूल कारण अज्ञान ही है ।

णाणं किरियारहियं, किरियामेत्तं च दोवि एगंता ।

– सन्मतितर्क ३/६८

क्रियाशून्य (आचारशून्य) ज्ञान और शून्य-क्रिया दोनों ही एकान्त है ।

णाणं अंकुसभूदं मत्तस्स हू चित्तहत्थिस्स ।

– भगवती आराधना ७६०

मन रूपी उन्मत्त हाथी को वश में करने के लिए ज्ञान अंकुश के समान है ।

सज्झायं च तओ कुज्जा, सव्वभावविभावणं ।

– उत्तराध्ययन २६/३७

स्वाध्याय सब भावों (विषयो) का प्रकाश करनेवाला है ।

डाक पंजीयन क्रमांक MH/THN १६१ पहले से डाक चुकाये बिना भेजने की
अनुमति प्राप्त लायसेन्स नं. ३५

જનતાના હિતમાં પ્રચારિત

संपादक - जे.के.संघवी अ.भा. श्री. राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के लिये
डपूजी आर्ट प्रिन्टर्स- थाने में मुद्रित।